ग र्ज ना

मैं किसी प्रकार की कायरता पसन्द नहीं करता। अहिंसा में जिस वीरता की जरूरत पड़ती है, वह कायरता से नहीं आ सकती। हिंसा और अहिंसा, दोनों ही के लिए बहादुरी ज़रूरी है। वस्तुतः अहिंसा के लिए तो और अधिक, क्योंकि अहिंसा अगर सबसे ऊंचे दर्जे की बहादुरी नहीं है, तो वह अहिंसा नहीं है।

—महात्मा गांधी

यह वक्त सोने का नहीं
यह वक्त खोने का नहीं
आवाज दो हम एक हैं।

● हम एक थे
हम एक हैं
हम एक रहेंगे।

आत्मा ही अमर है

चाहे कितनी ही बड़ी दुनिया की ताकत क्यों न हो, उसके सामने दृढ़तापूर्वक घुटने न टेकने से बढ़कर कोई बहादुरी नहीं हो सकती। इसमें प्रतिरोध की भावना नहीं होनी चाहिए और यह पक्की धारणा होनी चाहिए कि आत्मा को छोड़कर और कोई चीज अमर नहीं है।

—महात्मा गांधी

ग र्ज ना

(राष्ट्रीय कविताओं का सशक्त संकलन)

•

सम्पादक
पद्‌म सिंह शर्मा 'कमलेश'

•

प्र ग ति प्र का श न
आ ग रा – ३

प्रगति पुस्तकमाला – ३४

प्रथम संस्करण

मूल्य चार रुपये पचास पैसे

प्राप्ताङ्क ४३४८८
वर्ग सं
निर्

प्रकाशक :
प्रगति प्रकाशन
घटिया आजमखां रोड,
आगरा – ३

मुद्रक :
आधुनिक प्रेस,
राजा गली,
मुरादाबाद।

प्रगति पुस्तकमाला के मुख्य नियामक और संचालक :
रामगोपाल परदेसी

जिनके लाल - वीरन - कंत
अपनी माँ भारती के लिए
हंसते - हंसते जूझ गए,
उन्हीं को समर्पित है
श्रद्धापूर्वक यह

गर्जना

हटें हमारी सीमा से

कृष्णा - गोदावरी - पंचनद - गंगा - यमुना उमड़ी आज,
किन्तु एक चुल्लू यथेष्ट है यदि है रिपुओं को कुछ लाज ।
मार्ग न रहने दो जाने का ऐसे आने वालों को,
मुँह की खानी है उन मन के मोदक खाने वालों को ।
अपने आप लिया रिपुओं ने न्याय बुद्धि का यह अभिशाप,
यही बहुत बैरी बन आया कटने को यह अपना पाप ।
बलि देकर ही बलि लेंगे हम भीम - भामिनी - भीमा से,
जो पर हैं वे रहें परे ही हटें हमारी सीमा से ।

—राष्ट्रकवि स्व० मैथिलीशरण गुप्त

हमारी एकता हिमालय की तरह अटल है

—उपराष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन

हर कौम की जिन्दगी में ऐसे समय आते हैं जब उसकी सारी शक्ति और साधन एक ऊँचे मकसद को हासिल करने में लगा देने पड़ते हैं और जब इस मकसद में अपने अटल विश्वास को दोहराना पड़ता है। अगर हम अपने जवानों की महान कुर्बानियों की कदर करेंगे तो हमारे बाद आने वाली पीढ़ियाँ भी उनका नाम इज्जत से लेंगी और तब हमारा भी हिसाब होगा कि हमने क्या कुछ किया है।

इस लड़ाई को हम ने नहीं शुरू किया, हमें लड़ने को मजबूर किया गया। हम पूरे दिल से शान्ति चाहते थे और पूरी ताकत से हमने उसे बनाए रखने की कोशिश की। हम किसी की भी एक इंच भी जमीन नहीं चाहते लेकिन हम उन सिद्धान्तों को नहीं छोड़ सकते, जिन पर हमारे देश की, हमारे राज्य की, हमारे सारे कौमी जीवन की बुनियाद है और हमें इसी सिद्धान्त को छोड़ने के लिए मजबूर किया जा रहा है क्योंकि कश्मीर भारत का एक सुन्दर हिस्सा ही नहीं है, हमारी संस्कृति की शानदार निशानी है।

हमारी जिन्दगी में भी वे बुरे दिन आए, जब आजादी के लिए देश के बटवारे की शर्त लगाई गई। इस बटबारे के भयानक नतीजे की ओर उसके समर्थकों ने ध्यान नहीं दिया। यही नहीं, हिन्दुस्तानी मुसलमानों से कहा गया कि वे अपने

को दगा दें और इस झूठी बात की ताईद करें कि चूँकि वे मुसलमान हैं, और अब हम भारतीयों से संगीन के जोर पर यह कबूल करने को कहा जा रहा है कि कश्मीर इन्साफ से हिन्दुस्तान में नहीं रह सकता, क्योंकि कश्मीर में बहुत बड़ी संख्या मुसलमानों की है और इसलिए उसे पाकिस्तान की भेंट चढ़ा देना चाहिए।

हम में से जो मुसलमान हैं, उनको यह याद रखना चाहिए कि वे उस जगह हैं जहाँ अल्लाह की मरजी ने उन्हें रखा है और उनकी हिन्दुस्तानी शहरियत एक बहुत बड़ी कहानी और नैतिक प्रतिज्ञा है। मुसलमानों के देश-भाइयों को भी बहुसंख्या में होने के नाते अपने पूरे दिल और दिमाग से सब देशवासियों की भलाई के लिए काम करना चाहिए।

हमारी फौज ने जो शानदार जौहर दिखाया है, उससे हमारे लिए भी यह फर्ज हो जाता है कि हम भी अपने को एक फौज की शक्ल दें। हमें इस ढंग से काम करना चाहिए, जैसे हमें कोई लड़ाई जीतनी है। यह बहस-मुबाहसे का समय नहीं है। हमें चुपचाप तेजी से फैसला करना है और उसको अमल में लाना है। आज खेत में किसान को, खानों में मजदूरों को, कारखानों में कामगरों को, सब को अपनी मातृभूमि की सेवा में जान लड़ा देनी है, क्योंकि उन्हीं के दम पर यह लड़ाई लड़ी जा सकती है। जो लोग तालीम के काम में लगे हैं उन सबको अपनी योग्यता बढ़ाना और उसे जनता की खिदमत में लगाना है। हमारे व्यापारियों पर भी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, वास्तव में हमारे हौसले को ऊँचा रखने का दारोमदार व्यापारी भाइयों पर ही है। अगर वे ज्यादा मुनाफा कमाने के लालच से दाम बढ़ा देते हैं, तो लोगों में यह भावना पैदा हो सकती है कि जब हम मुसीबत उठा रहे हैं, तब और लोग मुनाफा कमा रहे हैं।

भूमिका

वीरता मनुष्य का आभूषण है। अपार सम्पत्ति और विशाल वैभव से सम्पन्न होने पर भी मनुष्य के हृदय में यदि स्वाभिमान, साहस और शौर्य-प्रदर्शन की भावना का अभाव हो तो वह नितान्त दयनीय जीवन बिताने वाला तुच्छ प्राणी ही कहा जायगा। वस्तुत : मनुष्य अपनी मननशीलता के कारण ही 'मनुष्य' संज्ञा का अधिकारी नहीं है, उसमें 'मनस्वी' होने का भी गुण है। मनस्वी' वह जिसमें दृढ़ इच्छा शक्ति हो, कुछ कर गुजरने की तड़प हो, जीवन को उत्सर्ग करने की क्षमता हो। संक्षेप में दुखी व्यक्ति अथवा पीड़ित समाज और राष्ट्र की रक्षा के लिये अपना सर्वस्व निछावर करने वाला ही मनुष्य कहा जायेगा। विशेष रूप से किसी संकट के समय ही मनुष्य की मनुष्यता की परीक्षा होती है। उस समय केवल योद्धा ही नहीं प्रत्येक देशवासी अपनी मनुष्यता का परिचय दे सकता है। कुछ ही दिन पूर्व समाप्त हुए पाकिस्तान के साथ भारतीय संघर्ष में हमारे देश ने उसी मनुष्यता का परिचय दिया है। उसमें वीर सैनिकों के अतिरिक्त कवि, लेखक, अध्यापक, छात्र, व्यापारी, सरकारी कर्मचारी, कृषक, मजदूर आदि सभी ने एक जुट होकर राष्ट्र रक्षा के यज्ञ में अपने अंश की आहुति डाली और इस यज्ञ को सफल बनाया। शताब्दियों बाद भारत को अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा मिली। हमने अपना मस्तक गर्व से ऊँचा किया और विश्व ने वीरता को सराहा।

यह सब क्यों हुआ ? इसलिए कि सारी जनता ने इस संघर्ष को अपना समझा। गाँधी और नेहरू का यह भारत अहिंसक हो कर भी कायरता को प्रश्रय नहीं दे सकता, यह प्रमाण हमारे स्वर्गीय प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री

ने दिया। वे 'लाल' थे, भारतमाता के सच्चे लाल, लेकिन ऐसे नहीं जो केवल जौहरियों की दूकान की शोभा बढ़ाते हैं। वे ऐसे लाल थे जो अपनी बहादुरी से मृतकों में प्राण फूँक देते हैं। वे शान्त ज्वालामुखी थे, तूफ़ान को अन्तर में छिपाये गंभीर समुद्र थे, तन से छोटे पर मन से महान थे। उनके नेतृत्व में भारत ने भावात्मक एकता का अत्यन्त उज्जवल आदर्श उपस्थित किया।

हमारे कवियों ने उसी वातावरण में सांस लेकर 'गर्जना' के उद्गार व्यक्त किये हैं। गाँधी, नेहरू और लालबहादुर विश्व-शान्ति के ये तीन दूत भारत की सारभूतिक निधि को लिए विश्व की सर्वश्रेष्ठ विभूतियों के रूप में समाहित हुए हैं। 'गर्जना' इन्ही के भावों और विचारों का भाष्य प्रस्तुत करती है। अतीत, वर्तमान और भविष्य के भारत की सुन्दर झाँकी हमें इन कविताओं में मिलती है। एक वाक्य में कहें तो आधुनिकतम वीर-काव्य की मंजूषा जैसी यह पुस्तक अपने आप में महत्वपूर्ण और संग्रहणीय है। मैं संकलित कविताओं के रचयिताओं को बधाई देता हूँ। साथ ही प्रगति प्रकाशन के संचालक रामगोपाल परदेसी को साधुवाद देता हूँ कि उन्होंने संकट में अपने कर्त्तव्य का सही रूप में पालन किया।

मुझे आशा है कि इन कविताओं से काव्य प्रेमियों को भारतीय शौर्य की सच्ची झाँकी प्राप्त होगी और वे अपने स्वाभिमान एवं बलिदान की भावनाओं को जाग्रत करने का अवसर पाकर धन्य होंगे।

—डा० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'

संकेतिका

• •

वीरों को सन्देश

अमरनाथ 'आशुतोष'

अमर हे भारत मां के वत्स, चलो बढ़ते ही विश्व-दुर्द्धर्ष
टिका है सत्य-शिला पर दिव्य, हमारा यह पावन संघर्ष
चरण चूमने तुम्हारे व्यग्र विजय-श्री रावलपिण्डी खड़ी
डालने गले दिव्य जयमाल, वहीं सत्रह वर्षों से पड़ी

गोलियाँ खा पागल की तीन, महा सर में जो हुआ निमग्न
तुम्हारे भुजा-कर्म पर वीर ! पूर्ण हो उस बापू का स्वप्न
युगों से खण्डित दुखी विपन्न, मिटे माँ की छाती का दाह
पुलक हो झेलम सरिता बीच, गोडसे नाथू अस्थि-प्रवाह

विश्व-योद्धा चौवालिस कोटि, माँ के सन्तान अग्रसर साथ
तुम्हारे रक्त-विन्दु पर सहस कटाने को उद्दत हम माथ
तुम्हारे पौरुषेय यम-दण्ड, हाथ में भारत माँ की लाज
रुके ना जयी तिरंगा केतु चलो बढ़ते ही विश्व सिर-ताज

खड़ी सामने लौह प्राचीर चूमती अनन्त नीलाकाश
अकरुणा निर्मम अगम अभेद्य मिलाती विश्व-छोर का व्यास
और उस पर चढ़ महा कराल नृत्य करती चपला सी-अधीर
हाथ में लिये हलाहल चषक मृत्यु सामने तुम्हारे वीर !

चूमते हुये नटी का गाल हलाहल पीते हुये सगर्व
अरे निलकण्ठ देश के जयी चलो बढ़ते ही आगे सर्व
मसलते हुये मत्त गज-इन्द्र कुसुम सा लौह विश्व-व्यवधान
बढ़े चलते ही चलो सहास हमारे वीर देश के ज्वान

हमें स्थिति पर गहरी नजर रखनी होगी और दृढ़ता से कार्रवाई करनी होगी।
—रक्षामंत्री चव्हाण

खबरदार होशियार

आशारानी व्होरा

ऋषियों की इस तपोभूमि में कौन भेड़िए ये खूंख्वार ?
मानसरोवर के मोती चुन किसने बिखराये अंगार ?
खबरदार ! ओ होशियार ! हम तैयार ! हम तैयार !

देख अहिंसा की हिंसा को मानवता में हाहाकार,
पंचशील का देख निरादर राष्ट्रीयता में आया ज्वार !
खबरदार ! ओ होशियार ! हम तैयार ! हम तैयार !

चलीं टोलियाँ सैनिक दल की माँ का आमन्त्रण स्वीकार,
ऊँचे शैल, इरादे ऊँचे मानेंगे ये कभी न हार !
खबरदार ! ओ होशियार ! हम तैयार ! हम तैयार !

गाँव गाँव की चौपालों से उठती "आल्हा" की हुंकार
"जाको बैरी सूख से सोवे ताके जीवन को धिक्कार ।"
खबरदार ! ओ होशियार ! हम तैयार ! हम तैयार !

नगर नगर में गृह रक्षक दल गली गली में एक कतार,
घर घर से आवाज आ रही हम तैयार...हम तैयार !
खबरदार ! ओ होशियार ! हम तैयार ! हम तैयार !

भारत की हर नारी भी ज्यों लक्ष्मीबाई की अवतार,
पति-पुत्र, धन-धान्य निछावर स्वयं भी लड़ने को तैयार !
होशियार ! अब होशियार ! हम तैयार ! हम तैयार !

उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम सब की गूंजी एक गुहार
हम अनेक, पर आज एक हैं छेड़ो मत हमसे तकरार !
खबरदार ! ओ होशियार ! हम तैयार ! हम तैयार !

पाकिस्तान चीन से मिलकर भारत को तबाह करना चाहता है ।
— राजदूत नेहरू

सेनापति से

उच्चेश्वरप्रसाद सिंह 'ईश्वर'

बढ़ो बढ़ो निर्भय सेनापति
आगे ध्वनि करते जाना !
आयेंगी विपदायें पथ में
उन्हें देख मत घबड़ाना !

बनकर नहीं कपूत पीठ को
फेर मातु को कलपाना !
सत्वर साहस शौर्य दिखाते
आगे को ही बढ़ जाना !

या तो लेना विजय माल को
या रण में ही खप जाना !
जननी जन्म-भूमि सेवा में
'ईश्वर' नाम अमर पाना !

पाकिस्तान की सैनिक तानाशाही ने जो संघर्ष भारत पर थोप दिया है, उसमें लोकतन्त्र का तकाजा है कि हमारी जीत हो, अन्यथा एशिया में स्वाधीनता का दीपक बुझ जायेगा।

—राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन

उमाशंकर वर्मा

कदम नहीं नापक बढ़ाओ

कदम नहीं नापाक बढ़ाओ, भारत की मिट्टी है,
हिमगिरि पर उत्तुङ्ग तिरंगा अविरल लहरायेगा !

भाईपन का घोंट गला, नैतिकता को दफनाकर,
शर्म हया को पी, बेशर्मी-पशुता को अपनाकर,
काला है कर दिया मनुजता की काया को तुमने,
माफी इस बर्बरता को इतिहास न दे पायेगा !

साक्षी है संसार, रहे हम सदा शान्ति आराधक,
सत्य-अहिंसा, न्याय-नीति, मर्यादा के प्रतिपालक ।
किन्तु तुम्हीं ने हमें खड्ग धरने को विवश किया है,
काँप उठेगी धरा, निमिष में अम्बर थर्रायेगा !

एक-एक हिन्दुस्तानी एटम बम का गोला है,
यहाँ दूब पर उगने वाली शबनम भी शोला है;
समझ लिया हमको तुमने क्या माटी की मूरत ही,
नहीं हमारा कतरा खूँ का एक व्यर्थ जायेगा !

इतिहासों में नाम सदा हम शोणित से लिखते हैं,
समझो मत मेमना, शेर के दाँत हमीं गिनते हैं,
हमें तोड़ना आता है जबड़े भी खूँखारों के,
युग-युग तक संसार हमारा शौर्य-गीत गायेगा !

पाकिस्तानी चूहों ने है केहरि को ललकारा,
दौड़ उठो नस-नस में चंचल विद्युत की है धारा ।
तुम्हें नहीं मंजूर शान्ति से जोड़ें हम नाता, तो
हमें स्नान करने दो खूँ से, बड़ा मजा आयेगा !

पाकिस्तानी आक्रमण देश की प्रभु सत्ता पर आक्रमण है ।

—भू० रक्षामंत्री वी० के० कृष्णा मेनन

जीवन दीप जलाना होगा

उमाशंकर शुक्ल 'उमेश'

प्रणय-गीत का समय नहीं, अब, प्रलय-गीत ही गाना होगा।
गीत नहीं वे जिन गीतों में,
युग-युग की रसधार नहीं हो;
जीना मरना व्यर्थ है जग में
जब स्वदेश का प्यार नहीं हो।
शान मान के लिये साथियों, शूलों पर भी जाना होगा।
स्वतन्त्रता की बलि वेदी पर,
जाने कितने वीर मिट गये;
अपनी ही खूनी स्याही से—
भारत का इतिहास लिख गये।
इस आजादी को जो छीने जिन्दा उसे जलाना होगा।
पाक, चीन की करतूतों को,
भली-भांति अब समझ लिया है;
'आवें बढ़कर समरांगण में—
जिसने माँ का दूध पिया है।'
भारत माँ की लाज बचाने कदम बढ़ाकर जाना होगा।
गरम हो चुका खून हमारा,
गरम हो चुकीं तोपें सारी;
भारत का हर युवक कर चुका—
लड़ने की पूरी तयारी।
तिल भर भूमि न जाने देंगे, भले हमें मर जाना होगा।

पाकिस्तान ने कश्मीर में हमला करके भारत की प्रभुसत्ता को चुनौती दी है। उसने हमारी एकता को नष्ट करने का प्रयास किया किया है।
—सैयद नाजर वनी

ओमकुमार

दिशाएँ आग उगलतीं

आज दिशायें आग उगलती खून टपक रहा अम्बर से !
देश बुलाता चलो जवानों ले लो अब बल्लम घर से !
जिसकी ऊँची शिखरों से निकली गंगा की धारा है
देश का ताज हिमालय वह हमें प्राणों से प्यारा है
कोटि कोटि वीरों ने जिस पर अपने को वारा है
प्रकृति का क्रीड़ा स्थल वीरो ! कश्मीर हमारा है
दुश्मन से कह दो हट जाये अर्जुन भीम की टक्कर से !
नहीं तो बचना मुश्किल है कृष्ण के सुदर्शन चक्र से !
हम मानवता के रक्षक हैं, शान्ति की पूजा करते हैं
किया प्रण जो एक बार फिर उस पर खरे उतरते हैं
धमकी से हम आज तलक न डरे कभी, न डरते हैं
देश की आन बान पर तो हम हँस-हँस कर मरते हैं
जिसको चाऊ नचा रहा कह दो उस धूर्त बन्दर से !
बन्द करो यह शैतानी, न खो देंगे धरती पर से !
यह भारत की जनता है कच्चे बालू की भीत नहीं
विजय गीत के सिवाय इसे और याद दूसरा गीत नहीं
सत्य प्रेम को छोड़ कभी हम करते छल से प्रीत नहीं
और दिखाना पीठ युद्ध में छत्रपति की रीत नहीं
चाहे ज्वालामुखी फटें चाहे आग सितारों से बरसे !
मैदान जीतकर लौटेगा अब राणा निकल पड़ा घर से !

कश्मीर पर किया गया हमला सारे भारत पर हमला माना जायेगा।
--स्व० जवाहरलाल नेहरू

बढ़े चलो तुम राह बनाते

ओमप्रकाश 'हेमकार'

आगे बढ़ते रहो जवानो सन्मुख विजय महान है !
पीछे पीछे साथ तुम्हारे सारा हिन्दुस्तान है !!

सारा हिन्दुस्तान कि जिसकी एक यही आवाज है,
हर अत्याचारी हाथों को हमें काटना आज है,
साम्राज्यवादी बदकारों के कुत्सित अरमान का—
गला घोंटना आज वतन का पहला-पहला काज है,

आज तुम्हारी शक्ति देख स्तम्भित सकल जहान है !
पीछे-पीछे साथ तुम्हारे सारा हिन्दुस्तान है !!

बढ़े चलो तुम राह बनाते बमबारों की मार से,
मुक्त करो कश्मीर समूचा अय्यूबी अधिकार से,
हम अपनी अखण्डता की रक्षा में स्वयं समर्थ हैं—
दिखलादो तानाशाही को, कह दो सब संसार से,

कह दो भारत का हर बच्चा साहस की सन्तान है !
पीछे-पीछे साथ तुम्हारे सारा हिन्दुस्तान है !!

तुम भारत के लाल बहादुर शक्ति स्रोत चौहान हो,
पूरब से पश्चिम तक चमका वह उज्जवल दिनमान हो,
बढ़ो तोड़ दो व्यूह शत्रु का फौलादी आघात से—
चढ़े चलो तुम वीर देश की आन-बान और शान हो,

आज तुम्हारे हाथ देश का मान और सम्मान है !
पीछे पीछे साथ तुम्हारे सारा हिन्दुस्तान है !!

वास्तव में यह एक आदर्शवाद की लड़ाई है। हमें हर कीमत पर साम्प्रदायिक एकता एवं शान्ति कायम रखनी चाहिए।

—श्रीमती इन्द्रा गाँधी

कमलाशंकर त्रिपाठी 'हृदय'

स्वर्ण दान

करो स्वर्ण का दान आज तुम
करो स्वर्ण का दान !
आज हो रहा जग में गर्जन !
करो सम्पर्ण तन, मन, धन !
जननी-जन्मभूमि रक्षा हित,
करो तुमुल आह्वान !
यदि सोने का दान न होगा !
फिर माँ का कल्याण न होगा !
पुनः करेंगे कलुषित पापी,
परम पुण्य भारत की शान !
बजा दो रण भेरी का थाप !
हो तुम्हीं शिवा राणा प्रताप !
अरि को अविलम्ब पराजित कर,
बोलो जय भारत वीर जवान !
मां, बहन, बहू घूंघट खोलो !
अरि लहु से तुम होली खेलो !
पद्मनी तुम्हीं लक्ष्मी बाई,
दिखलादो निज जौहर महान !

भारत पुरानी युद्ध-विराम रेखा से अब बंधा हुआ नहीं है। अब जो भी नई युद्ध-विराम रेखा बनेगी वही भारत और पाकिस्तान के बीच अन्तर्राष्ट्रीय सीमा होगी। —जी० एम० सादिक

घूम रही हर गली भवानी

कुसुम खरे 'श्रुति'

यह मोने की चिड़िया इसको हवा नहीं उड़ने देगी,
किरनों में यह चमकेगी अंधियारे न बढ़ने देगी ।
यहाँ झोंपड़ी में सीता, महलों में बसती लक्ष्मीबाई–
घूम रही हर गली भवानी, तुम्हें नहीं धंसने देगी ।

नहीं चलेगा तूफानों का जोर हिमालय के आगे,
हमें नहीं अब तरस तुम्हारी भिक्षुक नीति पर जागे ।
रोम-रोम तलवार बना है ढाल एकता की थामे–
बच्चों के मुँह दूध तभी सोहेगा मां जब उठ जागे ।

लोरी ऐसी गाओ कि दुश्मन की सांसें सो जायें,
प्रणय गीत वह छाती दुश्मन की हो, और अपनी बांहें ।
करो द्रोपदी सी प्रतिज्ञा पूरा हो शृंगार तभी–
दुशासन दुश्मन के खून से मांग भरने प्रीतम आये ।

इस बात के निर्विकाट प्रमाण हैं कि पाकिस्तान ने महीनों पहले भारत पर आक्रमण की योजना बनाई थी । पाकिस्तान के शासकों के सैनिक षड़यन्त्र की प्रतिदिन पोल खुलती जा रही है ।

—गृहमन्त्री गुलजारीलाल नन्दा

स्वतंत्रता की कली

केदारनाथ कोमल

......सोता रहा
सपनों के टूटे चांद
बिजलियों की छावों में
बोता रहा......
नींद टूटी
खिड़की खोली
रोष भरी बयार बोली -
'महाऋषि हिमालय के
चरणों से आई हूं
तुम्हारे नाम उनकी
पाती लाई हूँ !'
'जिसने तुम्हें
चांदी की नदियाँ
सोने के खेत दिये हैं
युगों से संतरी का
काम किया है
अपने वक्ष से लगाए रखा
मातृ-भूमि को...
बरसात दी
फुआर दी
रंग दिये
बहार दी
उस हिमालय की समाधि,
हो गई है भंग !......

नयन डबडबा आए
माथा झुक गया
जैसे भागता समय
क्षण भर के लिये
रुक गया......
अब आजादी के परवानों को
चैन से नींद न आयेगी
चांदनी संग डोलने वाली कल्पना
अंगारे बरसायेगी
गाता जाऊँगा जब तक
नयन में एक बूंद भी
पानी है
मृत्यु को गले लगाने की
बच्चे बच्चे ने ठानी है !

लेखनी अब चांदनी नहीं
आग बरसायेगी
जीवन की अंतिम समाधि पर
स्वतंत्रता की कली मुसकायेगी

यह शत प्रतिशत सही है कि पाकिस्तान की कार्यवाइयों के कारण ही कश्मीर में लड़ाई शुरू हुई है।

—फिलिप पीटर, वाशिंगटन

संकेत

केवल गोस्वामी

घुसे गैर के घर में फिर क्या तुम रह पाओगे।
लुटे लाज धरती की क्या फिर तुम सह पाओगे।
उठो कि सब तिनके मिलकर तूफान बनें हम
उठो कि अपनी किस्मत के भगवान बनें हम।
हमें नहीं गैरों के आंगन को हथियाना
उठो कि अपने आँगन के वरदान बनें हम ॥

देख सुकोमल पौधों को उगते उपवन में
पर उपवन का माली क्यों विवरस देता है।
पंचशील की उगती लहराती बेलों को
एक विनाशी क्यों फुफकार से डस लेता है।

अभी तो पहले घाव नहीं पूरे भर पाए
अभी तो मन की पीर नहीं जग से कह पाए।
अभी तो जीवन के साधन पाने की खातिर
नहीं सुखद छाया के नीचे हम रह पाए।

अभी घिनौने दाग़ द्वार से नहीं धुले हैं
नए लहू के देखो कुछ चिन्ह और मिले हैं
फिर भी रक्त पिपासा तेरी नहीं बुझी है
नंगी मानवता के कितने कफ़न सिले हैं।

शांत सौम्य और सुखद हिमालय की छाती से
तुमने अमृत के बदले लहू धार बहाई।
सुखद कल्पनाओं के प्रगति पथ पर चलती
मानवता सारी तुमको दे उठी दुहाई।

स्वदेश प्रेम दुरात्मा की अन्तिम शरण है।

—सेमुएल जॉनसन

के० सी० भारती

अपराधी वह होता है

जुल्म ढाहने वाले के जुल्मों को चुपके से सहले जो—
मेरी नजरों में वह सबसे पहले अपराधी होता है ।

अपने घर की कमजोरी को औरों के घर में बतलाना
अपने ही संग के साथी की दशा देख करके हँस जाना—
अपने श्रम के बल पर मंजिल की सीढ़ी तक बढ़े नहीं जो—
उनका और किसी के मधुमय प्रांगण में जाकर इठलाना ।

धरती की ममता ने जैसा भी आंका हो उसका जीवन—
मेरी नजरों में वह सबसे पहले बरबादी बोता है ।

स्वर्ण हर्म्य में रहकर नैसर्गिक कुटिया का मान न करना,
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाकर उसको अह-रह शान न करना,
राष्ट्र प्रेम की हार चुराकर नीलम से झरनों में बहना—
विष को मधु औ' मधु को विष जा मूँगों की बेलों से कहना ।

रक्त दान करने वालों से पूछा नहिं है मैंने पर यों—
मेरी नजरों में वह सबसे पहले आजादी बोता है ।

हमारे जवान भारतीय लोकतन्त्र और आजादी की लड़ाई ही नहीं लड़ रहे हैं बल्कि एशिया में आजादी की मशाल को कभी न बुझने देने के लिये इस अदम्य और अजेय साहस का परिचय दे रहे हैं ।

—"सैनिक", आगरा

हुंकार उठाते चले चलो

कैलाश श्रीवास्तव

ओ सेनानी ओ समर वीर तुम कदम मिला कर बढ़े चलो,
तुम हो निर्भर पावन प्रवाह तुम बन पर्वत को चीर चलो ।

तूफानों के बीच खड़ा है देश तुम्हारा भाग्य विधाता,
संग्रह शक्ति यत्न करना है देश रहे यह जीवन दाता ।

तुम जनवाणी तुम युग वाणी हुंकार उठाते चले चलो,
तुम क्रांति किरन तुम कल्याणी तुम कदम मिलाकर बढ़े चलो ।

मृत्यु चूमते रहे सदा बिजलियाँ गिरीं अंगारे झेले,
फिरे अकेले डरे न बन में सैनिक वीर श्रृंग से खेले ।

तुम हर फण पर फिर नर्तक बन जहरी सर्पों को नाथ चलो,
तुम अमर पुत्र तुम वरदानी तुम कदम मिला कर बढ़े चलो ।

खरे परीक्षा में उतरे वे भारत मां के वीर सलोने,
कष्ट भयंकर चिन्ताएं जिनके जीवन के रहे खिलौने ।

तुम हो विद्रोह पराभव प्रेमी, परिवर्तन में मिले चलो,
ओ देश भक्त ओ जन नायक तुम कदम मिलाकर बढ़े चलो ।

हमारी शक्ति देश की ४७ करोड़ जनता की शक्ति है और अगर जनता इसी प्रकार संगठित रही तो हम संसार के किसी भी देश या देशों के गठजोड़ों का मुकाबला कर सकते हैं ।

—प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री

कृष्णकुमार वर्मा 'राज'

स्वप्न देश का

उठो अब नव निर्माण पथ पर, स्वप्न-देश को सत्य कर दो।

जीवन का यह सन्देश अमर
ला दो स्वर्ण-विहान अवनि पर
घर-घर मधुर-सुधा-रस भर दो,
उठो अब नव निर्माण पथ पर, स्वप्न-देश को सत्य कर दो।

तंद्रिल दृगों को खोल-खोल
जीवन-शक्ति को तोल-तोल
आज धरा को प्रफुल्लित कर दो,
उठो अब नव निर्माण पथ पर, स्वप्न-देश को सत्य कर दो।

नई उमंग नई चेतना से
और मानस-उर वेदना से
ग्राम को मंगलमय कर दो
उठो अब नव-निर्माण पथ पर, स्वप्न देश को सत्य कर दो।

लड़ाई हमने शुरू नहीं की, पाकिस्तान की तरफ से हुई है। अब हम चाहते हैं कि उसे वहाँ तक ले जाएँ, जहाँ कश्मीर के रोजमर्रा के झगड़ों से निजात मिल जाये।

—उपराष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन

चुनौती

कृष्णदत्त ओझा

आज चुनौती पुनः मिली है, माता के अभिमान को,
क्यों न अलापे अरे भारती, भूषण के उस गान को।
पृथ्वीराज फिर जागो अब तो, जयचन्दों की चिता जले,
प्रताप शिवा की अमर शक्तियाँ हम में आकर आज मिलें।

पुण्य देश की दीवारों पर फिर से दुश्मन आया है,
टैंक तोप बम अनगिन आयुध साथ स्वय के लाया है,
सत्तावन के वीरो जागो माता को ललकारा है,
लक्ष्मी, तात्या और कुँवर सिंह कहाँ जफ़र वह प्यारा है ?

मेट न पाए दुश्मन कोई अमर विधान को,
आज चुनौती पुनः मिली है, माता के अभिमान को।
भगतसिंह आजाद, जगो तो, क्षण - क्षण में हुँकार हो,
देश हेतु जो पीछे हटता, उस कायर को धिक्कार हो।

तिलक कहाँ तुम ? लजपत मेरे ? लाज न अपनी लुट पाए,
गांधी, नेहरू, अरे सुनो तो, देश न अपना फिर बँट जाए।
तुम्हें शपथ है भारत माँ की, आगे कदम बढ़ाओ तो,
दुश्मन का तुम करो सफाया, माँ पर खून चढ़ाओ तो।

बात न सोचो व्यर्थ धर्म की, देश भक्ति का नारा हो,
विजय हमारी, देश हमारा, दुश्मन हम से हारा हो।
आखिर कब तक सहन करेंगे, भारत के अपमान को,
आज चुनौती पुनः मिली है, माता के अभिमान को।

जब तक हमारे देश के नौजवानों के खून के एक भी कतरे में गरमी बाकी है, तब तक इस दुनिया की कोई ताकत हमारी ओर आँख उठाकर नहीं देख सकती। —*श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा*

खेमचन्द शिवा

देश की पुकार

नव जवान जाग आज देश की पुकार है !

मित्र बन के आज शत्रु घुस गये हैं देश में,
और शत्रु रह रहे हैं मित्र के ही वेश में,
पर न तुम डरो यहाँ कि सामने पहाड़ है,
साथ तेरे कोटि-कोटि सिंह की दहाड़ है।

वक्त आ गया है आज रक्त से सिंगार है !

जाग जाग देख आज देश आज लुट रहा,
शांति शांति में ही आज शांति मंत्र मिट रहा,
अब प्रणय व्यापार का तो समय नहीं रहा—
रोष और जोश से थरथरा गगन रहा।

देश प्रेम पर तो आज प्राण भी निसार है।

जन्म भूमि है यही भामाशाह प्रताप की,
जब भी रण में भाला चमका शत्रु ने प्रलाप की,
आज भी अशोक की कीर्ति महान है,
पृथ्वीराज शौर्य को जानता जहान है !

किन्तु अब जयचन्द यहाँ हो गये हजार हैं !

देश प्रेम की हिलोर को संवारते चलो,
और शत्रुओं को सामने पुकारते चलो,
कौन मित्र कौन शत्रु यह निहारते चलो—
मर मिटेंगे आन पर यह विचारते चलो।

देश रक्षा हेतु आज चल रही कतार हैं !

मुझे दुख है कि मैं केवल एक ही बार जीवन को स्वदेश पर अर्पित कर सकता हूँ।
—नाथन हेल

सावधान ! सीमा के पहरेदार

गणेश विशारद

जिनकी सूनी गोद पी गई खून प्यार का अपने !
जिनकी उजड़ी माँग चुनौती बनी लुटा कर सपने !
उन बलिदानी माँ बहनों की उठी आज ललकार,
बन्द करो कवि ! गीत, फूँक रण शंख करो हुँकार !

विवश बुद्ध ने आज युद्ध के लिये गही तलवार !
रहा कौन उनके पौरुष को बार बार ललकार !

कुरुक्षेत्र है बना हिमालय, यमुना रहे अछूती,
जाग उठा कैलाश, रहे शुचि गंगा शिव की दूती,
शुद्धोदन खोजते भुजा में राहुल की मजबूती,
यशोधरा कहती है—कायर सुत से भली निपूती,

लोहा और लहू का आया सरहद पर त्योहार !
विवश बुद्ध ने आज युद्ध के लिये गही तलवार !

देते हैं अखनूर जौरिया छम्ब कसूर गवाही,
हर मोरचा महाभारत है हर इंसान सिपाही,
हिमगिरि कागज, अस्त्र-शस्त्र है कलम, खून है स्याही,
युग का व्यास चला जाता इतिहास नया लिखता ही,

फौलादी दीवार बक्ष है, हर जवान हुंकार !
विवश बुद्ध ने आज युद्ध के लिये गही तलवार !

जब मेरे बच्चे बड़े हों तो उन्हें समझा देना कि मुझे अपने देश से कितना प्रेम था ।
—मैनौटी

गयाप्रसाद द्विवेदी 'प्रसाद'

जन्मभूमि जगदम्बे

जय जन्मभूमि जगदम्बे !
मुकुट मेरु मणिमाल हिमालय,
गङ्गधार हियहार सुमनमय;
काश्मीर कल-कंठ अनिन्दित,
वक्षस्थल पंजाब सुशोभित ।

अनुपम उदर अवध मालव कटि—
नव-निमाड़ नितम्बे !
जय जन्मभूमि जगदम्बे !

परिकर विन्ध्य, क्वणित किङ्किणिकल—
श्रीरेखा प्रवाह वह निर्मल;
ऊरु आन्ध्र उत्कल पद-पंकज;
सेतुबन्धु सेवित शिव, हरि, अज ।

सिंहल-सिंहवाहिनी विलसति—
केरल कलिल कदम्बे !
जय-जन्मभूमि जगदम्बे !

स्कन्ध सिन्ध, सिन्धुरपुर सुन्दर,
स्पन्दित भुज मेवाड़ सुगुर्जर;
बाहु निजाम, बिहार विशालम् ।
अंग-अंग : धृतकर करवालम् ।

पाप-ताप प्रणताति प्रणाशन—
प्रसरित पाणि प्रलम्बे !
जय-जन्मभूमि जगदम्बे !

उस स्वाधीनता को तिलांजलि दे दो जो पाप की अनुचरी हो ।
—रामकृष्ण परमहंस

बहनों से

गिरिजा देवी 'निर्लिप्त'

वीर नारियों आज तुम्हें है जन जाग्रति का शंख बजाना,
आज नहीं मंगलदायक है पायल की झनकार सुनाना।
आज धरा की कोमल छाती कठिन भार से दबी हुई है,
उच्च हिमालय की गर्दन भी पद प्रहार से नवी हुई है;

आज राष्ट्र की कीर्ति-पताका है तुम को ऊँची उठवाना।
आज विश्व का कोना-कोना मिलकर तुम्हें पुकार रहा है,
विश्व-प्रेम का अमर देवता इकटक बाट निहार रहा है;
विश्व-बंधुता के माथे पर आगे बढ़कर तिलक लगाना।

विश्व-शान्ति का नन्हा पौधा आल बाल में अकुलाया है,
विध्वंशों के विषम ब्याल ने वायु विषैला फैलाया है;
आँचल की शीतल छाया में है इसको फिर से पनपाना।
अन्नपूर्णा के हाथों से देखो, अन्न लुटा जाता है,

त्राहि-त्राहि के आर्तनाद में चिरविश्वास छुटा जाता है;
ज्वाल भूख की क्रांति-ज्वाल बन तांडव करती है मनमाना।
तूफानों के घन घिर-घिर कर महा घोर गर्जन करते हैं,
महाकाल के काले साये जगती का तर्जन करते हैं;

भूल भुलैयों के चक्कर में भूल गया पथ आज जमाना;
मानव को दो शक्ति कि जिससे दानवता नीची पड़ जाये,
गूँजे जय जयकार जगत में मानव का झंडा गड़ जाये;
इस प्यासी सूखी धरती पर प्रेम-सुधा-रस-धार बहाना।

जो व्यक्ति अपना स्वामी (इन्द्रीयजित) नहीं वह कभी स्वतन्त्र नहीं।

—इपिक्टेटस

हम लें संगीनें हाथों में

गिरिराज शरण अग्रवाल

●

हम ले संगीन हाथों में,
दुश्मन पर चढ़ते जायेंगे,
भारत माता के चरणों में,
तन, मन, धन भेंट चढ़ायेंगे।
हिम-मुकुट हिमालय पर चोटें,
आघात हमारे सीने पर,
दुश्मन का शीश न नत करदे;
लानत है उसके जीने पर।
हम मृत्यु-जयी, हैं सत्य-पथी
हम विजय-केतु फहरायेंगे।
स्वर्णिम बेला की किरणें अब,
चिंगारी बन कर धधकेंगी,
हिम-सरिता की क्रोधित-लहरें,
लपटें बन करके लिपटेंगी।
यह शीत नहीं है ग्रीष्म प्रखर
तेजी को और बढ़ायेंगे।
हम दिल से ठन्डे चाहे हों,
लेकिन गर्मी में पलते हैं,
हैं दुनिया के शुभ-चिन्तक पर
दुश्मन को देख मचलते हैं।
हम भोले हैं, हम शंकर हैं,
प्रलयंकर नृत्य रचायेंगे।

वसुधा ही मेरा देश है, सम्पूर्ण मानव जाति मेरा बन्धु है और भलाई करना ही मेरा धर्म है।
—थामस पेन

हुँकार उठो

गुलाबचन्द गुप्त 'क्रांति'

भारत मां के वीर सपूतों;
वतन के कर्णधार उठो !

रिपु तोड़ रहा है सर अपना,
स्वयं पतन की दीवारों से !
नष्ट भ्रष्ट हो रहा स्वयं,
सरिता की बह रही किनारों से !!

कर में तेग संभालो भाई,
सावन की सुप्त बहार उठो !

बहिनों से कह दो हमें मोर्चे पर
जाना, शत्रु मानमर्दन करने को !
रणचंडी का है शृंगार सजाना,
सेनानी हैं नहीं डरेंगे मरने को !!

कलि के लाखों कंस कूद रहे.
द्वापर के कृष्ण दहाड़ उठो !

दृढ़ प्रतिज्ञ हो रवि रथ चढ़,
अटल ध्रुव नक्षत्र बन जावोगे !
अति पुलकित होंगी माताएँ,
जब शहीद बन जावोगे !!

जंग खोर गिर पड़ें दहल कर,
भारत के नरसिंह हुंकार उठो !

जिसे सत्य ने स्वाधीन बना दिया वही स्वाधीन है, शेष सभी दास हैं।

—कूपर

भारत भारत है

गुलाबचन्द 'दुलारेजी'

ढलता रहा जमाना, करते थे जब इशारे !
चलते थे ढाल बरछे, होते थे जब इशारे !!
थीं म्यान में जो सोई, नागिन सी लपलपायें !
हुंकारते थे जब हम, धुन बीन की सुनायें !!

सोये हुवे थे जगते, नागिन के काटने से !
थी फैलती लहर पर, था गूँजना इक स्वर मे !!
कोई काटले ये सिर पर ऊँचा सदा रहेगा !
झण्डा जो हाथ में है, नीचे नहीं झुकेगा !!

इक बार हमने की थी, फल भूल का भी पाया !
है घाव ना पुराना, बिलकुल नया नया है !!
बकरों सी बली दिया है, हमने पुजारियों का !
हिंसा नहीं अहिंसा, के हम बने पुजारी !!

पर यह भी जान लो की, राणा व लक्ष्मी का !
पावन जो ये है उपवन, हैं सिंह वाटिका के !!
हम भारती हैं बच्चे, भारत सदा हमारा !
हम है शकुन्तला तो, भारत भरत भी देखो !!

मुझे प्रतीत होता है कि स्वदेश प्रेम ही पर्याप्त नहीं है, अपितु मुझे किसी के प्रति घृणा न करना भी अपेक्षित है।

— एडिथ केवैल

फुफकार सुना लो

गोपाल सिजुआर

हमने झंझावात बहुत देखे हैं,
तुम अपनी भी फुफकार सुनालो अच्छा है।

जब कोटि कोटि हम खड़ग धरे हाथों में,
बन काल रूप समराङ्गण में धायेंगे।
भ्रू चापों से ही धरती डगमग होगी,
भूचाल लिये हम तुम पर जब आयेंगे।

चंगेजी शासन का सपना भूल जाओ,
दुनियाँ में कुछ बात बनालो अच्छा है।
हमने झंझावात बहुत देखे हैं,
तुम अपनी भी फुफकार सुनालो अच्छा है।

गांधीवाद की नीति को तुम मत टोको,
दुनियां में कोई पुरसा हाल न होगा।
चाऊँ माऊँ कुछ काम नहीं आयेंगे,
लज्जा से तेरा ऊँचा भाल न होगा।

अभी क्रान्ति के दून नहीं जागे हैं,
इसके पहले त्यौहार मनालो अच्छा है।
हमने झंझावात बहुत देखे हैं,
तुम अपनी भी फुफकार सुनालो अच्छा है॥

मानव के लिये क्रूरतम अभिशाप है—पराधीन रहना।
—सुभाषचन्द्र बोस

गोपालकृष्ण गौड़ 'सुधाकर'

देश के बहादुरो

बढ़े चलो हे नौजवान, देश के बहादुरो !

आज मातु भारती तुम्हारा शीश चाहती,
आज फिर स्वतन्त्रता तेरा रक्त मांगती।
मरो कटो आ आन पर,
स्वतन्त्रता की शान पर—
बढ़े चलो हे नौजवान, देश के बहादुरो !

तेरी भक्ति भावना से मारवाड़ जग गया,
तेरे क्रान्तिनाद से मराठा वीर बढ़ गया,
उन्हीं का पथ बुहार कर,
मातु की पुकार पर—
बढ़े चलो हे नौजवान, देश के बहादुरो !

तू जभी जगा कि देश एक दम बदल गया,
जब बिगुल बजा कि दुश्मन का रंग उड़ गया,
दुश्मनों की गाज पर,
अपना वक्ष तान कर—
बढ़े चलो हे नौजवान, देश के बहादुरो !

वासना की भूमि पर कभी भी स्वतन्त्रता अंकुरित नहीं होती, स्वतन्त्रता ज्ञान के बीच उदित होती है।

—टी० एल० वासवानी

भारत की ललकार

गोपालसिंह चौहान 'राजेश'

बच्चा-बच्चा भारत का अब बोला हर-हर नारा रे...!

हिमगिरि की श्वेत श्रेणियां हुई रक्त से लाल रे,
जाग उठा है हिन्द 'केसरी' बना काल विकराल रे,
सोचा होगा भारत तेरी तोपों से डर जायेगा,
सीमा पार कर भारत की तू दिल्ली तक बढ़ जायेगा,
लौट नहीं सकता तू जिन्दा यही हमारा नारा रे...!

जान चुकी है दुनिया सारी तेरी दुरंगी चाल को,
देख चुका है मूरख तू भी 'मित्र-राष्ट्र' की ढाल को,
एक नहीं अनेकों मस्तक कफन बांध आ जायेंगे,
हंसते-हंसते भारत मां की वेदी पर चढ़ जायेंगे,
सौगंध हमें है पवित्र दूध की मां ने आज पुकारा रे...!

आज देश की हर नारी में जगा देश का मान रे,
दुश्मन से बदला लेने को ली 'लक्ष्मी' की आन रे,
पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण आज उठा तूफान रे,
धरती का कण सुना रहा है महाविजय का गान रे,
आज देश के हर कोने से भारत ने ललकारा रे...!
जागा वीर मराठा जागा 'राजस्थान' हमारा रे...!

उनसे अधिक दयनीय दासता किसी की भी नहीं जो स्वयं इस भ्रम में रहते हैं कि वह स्वतन्त्र हैं।
—गेटे

घनश्याम अग्रवाल

फिर से है ललकार उठी

फिर से ललकार उठी, फिर से तुम जागो वीरों,
दो फिर से उत्तर उनका तुम, ओ भारत के वीरों !
थाप पड़ी है आज पुनः रणचण्डी के मैदानों में,
बाज उठी है रणभेरी भी महायुद्ध के मैदानों में,
फिर से रच दो आज युद्ध का चक्रव्यूह मैदानों में,
द्रोणाचार्य उठो फिर से तुम भारत के मैदान में,
देना है हमको हर उत्तर आज चुनौती का वीरों
उठो, बढ़ो, फिर से तुम पहनो भगवा भारत के वीरों !
फिर से है ललकार...!

युद्ध नहीं करते भाई से भारत की तो शान है,
पर न कभी मिटने ही देंगे ये गीता की आन है,
'अर्जुन अस्त्र डालकर देखे ये वसुधा तो मेरी है,
कृष्ण उन्हें समझाते हैं पर ये वसुधा तो रण की है,
यहाँ शक्ति से निर्णय होगा मानव के इन्साफ का,
सत्य अगर संहार करे तो करते जाओ तुम वीरों !
फिर से है ललकार...!

युद्ध मचा था त्रेता युग में, युद्ध हुआ था द्वापर में,
आज पुनः होकर के रहेगा युद्ध पुनः इस कलियुग में,
होकर के भी देव राम ने रावण का संहार किया,
और कृष्ण ने कितने जन का मानो यूँ उद्धार किया,
देव सदा उतरे भारत की शस्य श्यामला अवनी पर,
देव सभी तुम, करो नाश तुम, सबका भारत के वीरों !
फिर से है ललकार...!

मानवता का संगीत स्वतन्त्रता की ओर अग्रसर होता है।
— सुभाषचन्द्र बोस

जीवन दान करो

घनश्यामदास व्यास

रत्न-प्रसूता भारत माँ यह, राम कृष्ण की जन्मभूमि यह।
इस पर यदि कोई आँख उठाता उसका दमन करो,
देश हित जीवन-दान करो ॥

यह स्वराज्य की कुसुम कली है,
विकसित होना दूर अभी है।
आँधी तीव्र प्रकाश - पुँज से इसकी पीर हरो।
देश हित जीवन-दान करो ॥

ग्राम, ग्राम और नगर नगर में,
प्रिय भारत की डगर डगर में।
शान्ति, प्रेम, सहयोग, अहिंसा तुम चरितार्थ करो।
देश हित जीवन-दान करो ॥

श्रम से अधिक अन्न उपजाओ,
उद्योगों को सतत बढ़ाओ।
खेत और खलियानों में भी,
तुम स्वराज्य अभियान करो।
देश हित जीवन-दान करो ॥

गीता का उपदेश न भूलो,
सीता का वह वेष न भूलो।
रिपुदल का मर्दन कर करके शोणित पान करो।
देश हित जीवन-दान करो ॥

व्यक्तिगत स्वतन्त्रता ही मानव-समाज की मर्यादा एवं प्रसन्नता का प्रथम सोपान है। — *बुल्वर लिटन*

नया मसीहा

चन्द्रसेन 'विराट'

भारत देगा नया मसीहा फिर से इस संसार को।

यह न नया कुछ भारत के हित यह तो उसकी रीत है,
सदा मसीहा देने वाली भारत भूमि पुनीत है,
फिर से यह धरती जनमेगी ईश्वर के अवतार को।

सदा किरण पूरब से फूटी पश्चिम को दी रोशनी,
वरना पश्चिम की धरती रह जाती तम से ही सनी,
फिर प्रकाश फूटेगा इससे चीर सकल अंधियार को।

विस्फोटों को मात दिलायेगा कोयल की कूक से,
मानवता के पाँव पुजायेगा वह हर बन्दूक से,
वह फूलों की छड़ी करेगा हर उठती तलवार को।

हिंसा दमन समर्पित होंगे आकर उसके पांव में,
जुल्म जोर सब शरण गहेंगे उसकी शीतल छाँव में,
उसके कारण शक्ति मिलेगी जीवन के अधिकार को।

मानवता धीरज मत खोना भारत की भू बोलती,
जन्म माँगती आज कोख में कोई हस्ती डोलती,
किये प्रवाहित हैं वह उर से ममता, स्नेह दुलार को।

एक स्वतन्त्र देश में संतापों की अल्पता में भी अधिक क्रन्दन रहता है, किन्तु एक स्वेच्छाचारी शासन में संतापों का बाहुल्य रहते हुए भी क्रन्दन अत्यल्प होता है। —*कारनर*

तुझे माँ ने बुलाया

चाँदमल अग्रवाल 'चन्द्र'

•

समय फिर वह आज आया ।

उठ कि हे भारत-सपूत पुनः तुझे माँ ने बुलाया ।
सुन कि रणभेरी बजी, दिग्गण गगन तक थरथराया ।

द्रौपदी-काश्मीर पर खल 'पाक' दुशासन बढ़ा तब,
क्योंकि भारत मौन, नत, करबद्ध पान्डव सम रहा तब ।
संधि वार्ता जब करो, कश्मीर-कृष्णा-कच न भूलो,
तोड़-फोड़-मरोड़ दो शठ-कलुष कर वह जो उठा अब ।

दुष्ट ने भारत-धरा पर फिर महाभारत मचाया,
सुन कि रणभेरी बजी, दिग्गण, गगन तक थरथराया ।

उठ कि तू ही भीम अर्जुन, गर्जना गूँजे चराचर,
नष्ट कर रिपु व्यूह चक्राकार तू अभिमन्यु बनकर ।
आसुरी सत्ता मिटाना चाहती फिर मनुजता को,
'पाँचजन्य' बजा पुनः, गीता मुखर कर चक्रधर वर ।

प्रमद सत्ता युक्त पशुता ने अरे फिर सर उठाया,
सुन कि रणभेरी बजी, दिग्गण, गगन तक थरथराया ।

तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र कर देगा ।

— जॉन

ओ सपूत भारती

चिरन्जीलाल माथुर 'पंकज'

ओ जवान देश के, मां तुम्हें पुकारती।
ओ सपूत भारती ॥

नीति युद्ध क्षेत्र की
शत्रुओं को दो सिखा
शौर्य शक्ति, वीरता
कायरों को दो दिखा
कर रही बहिन, विदा आरती उतारती।
सत्य न्याय पर अड़िग
मर मिटो ओ शूरमा
सैन्य पंक्ति के लिये,
और शक्ति करो जमा
दुश्मनों के रक्त से रूप माँ सवारती।
आज एक हैं सभी
एक रूप एक प्राण
जाति कुछ हो मगर
एक देश एक आन
मातृभूमि के सभी, हैं सपूत भारती।

जो दूसरों को स्वतन्त्रता से वंचित रखते की चेष्टा करते हैं, वे स्वयं भी स्वतंत्र होने के अधिकारी नहीं होते। और ईश्वर की सृष्टि में वे अधिक दिन तक अपनी स्वतंत्रता कायम नहीं रख सकते।

—लिंकन

भारतीय जवानों से

चित्रभूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध'

उठो ए भारत के नौजवानों, सुनो हिमालय तुम्हें पुकारे।
उठी है आँधी, घिरे हैं बादल, हो हिन्द माँ के तुम्हीं सहारे।
ए शांति वालों उठो संभालो, गठन की तोपें मिलन का बाना।
तुम्हें हिमालय का आर्त क्रन्दन बुला रहा है उसे बचाना।

उठो कि तुमको बुला रही हैं अनाथ बच्चों की सर्द आहें।
कि माँग सिन्दूर पुंछा है जिनका, उन 'उत्तरा' की विकल कराहें।
ओ रक्त रंजित बुला रही है तुम्हें रे ! गंगा-यमी की धारा।
सुनो तिरंगा बुला रहा है, बुला रहा है धरम तुम्हारा।

विवश मनुजता के पास अब भी है न्याय बल का बड़ा सहारा।
ओ मेरे अभिमन्यु ! खड़ा है देखो तुम्हारे पीछे जहान सारा।
हर एक जन-मन है जाग उट्ठा, धरा के कण-कण में जागरण है।
है भीति मन में नहीं मरण की, स्वदेश हित की लगी लगन है।

जगे हैं घर घर, गली गली, खेत खलिहान औ' कल-कारखाने।
जगे हैं दिन और जगी हैं रातें, चले हैं भारत नया बनाने।
डटे पहरुये हैं मोरचों पर औ' जागता है नया जमाना।
है ढेर बारूद का अब हिमालय, अरे ए दुश्मन यहाँ न आना।

स्वाधीनता और दासता मन के खिलवाड़ हैं। जिसका मन स्वाधीन है, वह विष्ठा का टोकरा उठाते हुए भी राजा है।

—म० गाँधी

चौपटानंद

कालजयी यशवन्त

●

रक्षामन्त्री जिस दिन बना यशस्वी राव।
लगे उसी दिन लौटने रिपुदल उल्टे पांव।
नहीं राव चौहान है अरे सिर्फ बलवन्त।
महावीर हनुमन्त है, कालजयी यशवन्त।
पंचशील का कर खड़ा, रे धोखे का टाट।
चाह रहा था मारना चीन धोबिया पाट।
टकराना पर है मना पर्वत से हे मित्र।
चेतो बन्धु अफीमची ! छोड़ो चाल विचित्र।
खिला न सकते देश को मरो समुन्दर डूब।
उपजाने नाहक चले, तुम पत्थर पर दूब।
क्यों मरते हो चीनियों ! जैसे कीट पतंग।
छोड़ो नशा अफीम का, पीलो थोड़ी भंग।
निर्बल तिब्बत-विजय पर, हुये चीन तुम शोख।
कद्दू पर रहता सदा चौपट सितुहा चोख।
चौपट मैत्री पर किया था हमने विश्वास।
सेना रखी न इसलिए हमने सीमा पास।
हमने किया न आक्रमण, साक्षी है इतिहास।
किन्तु सदा करते रहे, हम असुरों का नाश।

क्षुधित जनता को कितनी मात्रा में भी राजनीतिक स्वतंत्रता संतुष्ट नहीं कर सकती।

—लेनिन

ख़ून से सींचा है हमने

जगदीश श्रीवास्तव

सामने दुश्मन हमारे, कोई आ सकता नहीं,
और आजाये तो फिर वह बच के जा सकता नहीं।

ये जमीं गाँधी की है, हर एक नेहरू है यहाँ,
इस वतन के सर को अब, कोई झुका सकता नहीं।

सर जो उठेगा कुचल देंगे मिटा देंगे उसे,
पाक भारत की ज़मीं को अब दबा सकता नहीं।

चाहता है जो हमें, हम प्यार करते हैं उसे,
जंग से कोई हमें, अपना बना सकता नहीं।

हम कभी धब्बा न आने देंगे अपनी आन पर,
हिन्द के माथे पे कोई दाग़ आ सकता नहीं।

हमने इज्जत दी तुम्हें तुम सर पै चढ़ कर आ गये,
बाँध कर निकले क़फन कोई भुला सकता नहीं।

दुश्मनों के वास्ते हम बर्क हैं शमशीर हैं,
कोई दुश्मन अब नजर हमसे मिला सकता नहीं।

खून से सींचा है हमने गुलशने कश्मीर को,
कोई दुश्मन इसपे अपना हक जमा सकता नहीं।

स्वाधीनता विकास का प्रथम चरण है।

—विवेकानन्द

जगत प्रकाश माथुर

प्रयाण-गीत

अजेय हिन्द - सैनिको !
बढ़े चलो ! बढ़े चलो !!
सु - धीर वीर सैनिको !
बढ़े चलो ! बढ़े चलो !!

सुनो, सपूत भारती !
पुनीत माँ पुकारती—
घुसा बलात् शत्रु जो
निर्लज्ज, नीच, स्वार्थी !

खदेड़ दो ! खदेड़ दो !!
बढ़े चलो ! बढ़े चलो !!
अजेय हिन्द सैनिको !
बढ़े चलो ! बढ़े चलो !!

विशुद्ध वज्र - गात है,
सदैव सत्य साथ है,
बढ़ो असीम शौर्य से,
सु-कीर्ति जीत हाथ है !

नहीं रुको ! नहीं झुको !!
बढ़े चलो ! बढ़े चलो !!
अजेय हिन्द सैनिको !
बढ़े चलो ! बढ़े चलो !

स्वतन्त्रता केवल अनुशासन की शृंखलाओं द्वारा प्राप्त की जा सकती है।
—म० गाँधी

मानता हूँ

जगमोहन सिंह 'मोहन'

घर में तुम्हें आबाद मानते हैं,
मैं तो तुम्हें बरबाद मानता हूं।

तुम्हीं ने तो अपना धरम छोड़ डाला,
मधुर शहनाई का स्वर तोड़ डाला।
तुम्हें प्यार का जो नगीना मिला था,
खिलौना समझकर उसे फोड़ डाला।

तुम्हारे मरम को सभी जानते हैं,
तुम्हें झूठ में उस्ताद मानता हूं।

उठे तुम जो देने बम्बों की धमकी,
उठे तुम जो लेने जीवन की डुबकी।
गिरा मेह बादल खाली हुआ है,
मगर खेत थाली चाँदी सी चमकी।

घर में तुम्हें आबाद मानते हैं
मैं तो तुम्हें बरबाद मानता हूं।।

जो लोग आजादी के आराम को ज्यादा पसन्द करते हैं वे स्वतन्त्रता के सुख का मूल्य अधिक मानते हैं, वे न आराम ही पाते और न आजाद ही रह सकते हैं।

—दादा धर्माधिकारी

बोल दो स्वाधीनता की जय

जयकिशोर

•

राष्ट्र का बट बृक्ष बढ़ लहरा रहा है,
मन्द मधुमय छन्द रह-रह गा रहा है,
कोपलें इसकी नई नित फूटती हैं,
लालिमा मिस स्नेह-धारा छूटती है,
हो रहा है दैन्य दुख संताप का नित क्षय;
बोल दो स्वाधीनता की जय !

देश पर जब शत्रु कोई आन चढ़ता है,
तो जटाएँ खोलकर हुंकार बढ़ता है,
ताल तांडव का उठा भूचाल देता भर,
औ' उठा कर, शूल-डमरू दौड़ता शंकर,
डिमिक डिम डमरू बजाता ताल में भर लय;
बोल दो स्वाधीनता की जय !

नाश की उठती लहर संसार कँपता है,
शत्रुओं का दल दहल जयकार जपता है,
शृंग गिरते पर्वतों के सिन्धु-उठते हैं,
प्रलय नर्तन को सकल ग्रह आन जुटते हैं,
और, होती है धरा यह रक्त कर्दममय;
बोल दो स्वाधीनता की जय !

स्वतंत्रता कितनी मोहक कल्पना है ! व्यक्ति सर्वस्व की बाजी लगाकर भी उसे साकार करने को आतुर हो उठता है।

—अनाम

कुरबानी करनी पड़ती है

जसविन्द्र 'अशान्त'

जब भी संकट आये तुमको रहना है तैयार, जवानो !
आज़ादी के लिये लहू की कुरबानी करनी पड़ती है !

आजादी का दीप बुझे ना, इसका ख्याल तुम्हें रखना है,
शीश भले कट जाए, माँ का ऊँचा भाल तुम्हें रखना है;
नींद नहीं आ जाए तुमको,
पहरेदारो ! ओ रखवारो !
मुश्किल से जो कोष मिला है, वह सम्भाल तुम्हें रखना है !

आज़ादी के हर हीरे पर नजर लुटेरों की रहती है,
जाग-जागकर इन हीरों की निगरानी करनी पड़ती है !
पैनी सदा हुआ करती है, कुटिल समय की धार, जवानो !
दृढ़ निश्चय के बिना असम्भव इससे होना पार, जवानो !
सबक समय ने दिया यही है
युग-युग से, इसको मत भूलो—
ताकतवर की विजय सदा है, कमज़ोरों की हार, जवानो !

मुश्किल से घबरा जाने से कुछ भी हाथ नहीं आता है,
आज़ादी के लिये कष्ट की महमानी करनी पड़ती है !
आज़ादी के लिये लहू की कुरबानी करनी पड़ती है !!

सब एक के लिए और एक सबके लिये ।

— अलेक्जेंडर ड्यूमा

जितेन्द्र प्रसाद सिंह

बढ़ते चलो जवान

चट्टानों को फाड़ शान्ति पुष्पित होती है।
कोमल मक्खन के भीतर आगें पलती हैं।
मजबूरी को पुनः नहीं कमजोरी समझो।
रातों की शीतलता में किरणें फबती हैं।

सारा देश तुम्हारे पीछे बढ़ते चलो जवान।
प्रलय-कुहा छा जाये लेकिन उठते चलो विहान।
भारत के बहुरंगी दल से उठता है समगान।
दुश्मन की लपटों के हित हैं तने हुये हिम-बाण।

गदराओ तुम रात कि बिजली फिर से गाये।
घहराओ रावण जिससे बादल घिर आये।
ओ! अन्दर के दुश्मन तोड़ो बाहर सीमा।
मानवता का स्वर ऐसे ही कर दो धीमा।

भारत को ललकार रहे हैं दुश्मन आज अजान।
शान्ति पर्व को क्षुधा अधूरी कर प्राणों के दान।
अरे, आदमी आदम के हित बन जाओ हैवान।
सारा देश तुम्हारे पीछे बढ़ते चलो जवान।

कुम-कुम की घाटी न समझना, माँ का है सिन्दूर।
दुश्मन की आँखें ललचायी देख रहा है घूर।
आदर्शों का दर्पण है कश्मीर न होगा चूर।
बच्चे फाँद रहे नभ में हैं एक-एक हैं सूर।

हमें संगठित होकर प्राण देने को प्रस्तुत होना चाहिये, अन्यथा हम अलग अलग तो प्राण दे ही बैठेंगे।

—फ्रैंकलिन

प्रण - गान

ठाकुर दुलारे सिंह 'वीर'

आज प्रभाती की बेला में, प्रणय नहीं प्रण गान चाहिये।
ज्योति जगादे जो जीवन में,
नस नस में उल्लास भर सके,
मृत को अमृत बना सके जो, ऐसा नव निर्माण चाहिये।
वैभव के भारी भारों से,
दबी सिसकती है लाचारी,
घृणित घृणा के अभिशापों पर, वरदानों के दान चाहिये,
व्यथित हृदय के मर्मस्थल पर
दानवता का नृत्य हो रहा,
मानवता के पथ पर अंकित सक्रिय नया विधान चाहिये,
ऊँचे गिरि शृङ्गों को छूकर,
क्या प्रकाश का मान बढ़ गया।
टूटे छप्पर पर जो चमके ऐसा प्रतिभावान चाहिये।
वैयक्तिक हित के साधन में,
व्यस्त नयी दुनिया दीवानी,
सामाजिक जीवन में अपने, जीवन का बलिदान चाहिये।

जिसमें फूट हो गई है और पक्ष-भेद हो गए हैं, ऐसा समाज किस काम का? आत्म प्रतिष्ठा और आत्मा की एकता की मूर्ति का समाज चाहिए अलग रह कर जितना काम होता है, उससे सौ गुना संघ-शक्ति से होता है। —योगी अरविंद

डा० के० एस० 'आजाद'

मचली तलवार पुरानी

ओ देश के वीर जवानो, बढ़ने वाली सेनाओं,
जागो, माता की लाज आज रखने का दिन है आया।
फव्वारे खून के छूटें,
अम्बर उगले चिनगारी,
धरती रह-रह कर काँपे,
मिटने की हो यदि बारी,
तुम बढ़े चलो, तुम चढ़े चलो, मत रुको कहीं राहों में,
रुकना है क्यों, झुकना है क्यों, यह सोच हृदय भर आया।
सोते केहरि को छेड़ा,
है पाक बना मतवाला,
है जाग रहा निद्रा से,
अपना हिमगिरि रखवाला
हुँकार करो, फुँकार करो, सोचो न हिन्द के वीरो!
तुम सैलानी, हिन्दुस्तानी, यह स्वर्ण सुअवसर आया!
अम्बर में आग लगाकर
धरती है आज बचानी,
है आज समर की होली,
मचली तलवार पुरानी,
हम जियें अगर, हम मरें अगर, इसकी चिंता फिर क्यों हो?
हम सेनानी, हम अभिमानी, है ज्वार युद्ध का छाया।

देखो, बन्धुत्व की भावना से सम्मिलित होकर, एक सूत्र में बंधकर रहने में कितना आनन्द है! —*बाइबिल*

हम हिन्दुस्तान वाले हैं

तन्मय बुखारिया

●

हमें इसका नहीं ग़म है कि बेईमान निकले तुम,
फरिश्ता हम तुम्हें समझे थे पर शैतान निकले तुम;
कि तुमने दोस्ती के नाम को बदनाम कर डाला,
हमारी आस्तीं में साँप-से महमान निकले तुम !

तुम्हें सनयातसेनों की शपथ है, आज आओ तुम,
कि अपने धर्म-गुरु के तरकशों को आज़माओ तुम;
निकलने ही लगे अब चींटियों के पर, तो बस ही क्या,
जहां मंजूर हो तुमको चिता अपनी सजाओ तुम !

नहीं हम फॉरमोसा, कोरिया लघु प्राण वाले हैं,
न तिब्बत की तरह कुचले हुये अरमान वाले हैं;
छठी का दूध आजायेगा तुमको याद ऐ बौनो,
हिमालय से न टकराओ, हम हिन्दुस्तान वाले हैं !

महाभारत हमारे संस्कारों में समाया है,
हमें खुद कृष्ण ने मैदान में लड़ना सिखाया है;
हमारा धर्म गीता है, हमारा धर्म रामायण,
समझ लेंगे कि रावण फिर धरा पर लौट आया है !

अभी भी वक्त है कम्बख़्त, आओ, होश में आओ,
न अपनी हरकतों से मार्क्स को बदनाम करवाओ;
बड़ी मुश्किल से दुनिया ने जरा सुख चैन पाया है,
ये चिनगारी लपट बन जायेगी, झुलसो न झुलसाओ !

संगठन द्वारा छोटे-छोटे राज्य भी उन्नत हो सकते हैं किन्तु विभेद उत्पन्न होने से बड़े राज्य भी विनष्ट हो जाते हैं ।

—सालस्ट

ज्वार बाकी है

तपेश चतुर्वेदी

अभी तो हिन्द-सागर में उफनता ज्वार बाकी है,
दबी है आग लेकिन आग में अंगार बाकी है,
कोई नापाक हाथों से हिमालय छू नहीं सकता;
कि जब तक हिन्द की तलवार में कुछ धार बाकी है।

तिरंगे को हिमालय पर झुकाया जा नहीं सकता,
शहीदों के तराने को भुलाया जा नहीं सकता,
अरे ओ कलियुगी रावण गया तू भूल अंगद को;
जमा जो पाँव वह तुझसे हिलाया जा नहीं सकता।

बढ़ा है जो कदम आगे उसे रुकने नहीं दूँगा,
चमन की नई कलियों को कभी लुटने नहीं दूँगा,
कसम दुर्गा भवानी की शिवा के तेग पानी की;
जलाया दीप गाँधी ने उसे बुझने नहीं दूँगा॥

हमारे प्यार का बन्धन तुम्हें कमजोर लगता है,
हमारा शान्ति का नारा निरर्थक शोर लगता है,
नराधम चीनियों, तुम डूब कर क्यों मर नहीं जाते;
तुम्हारा देवता तक आज हमको चोर लगता है।

संगठित होकर हम खड़े रह सकते हैं, विभाजित होते ही गिर पड़ेंगे।

—कैन्ट्स का उद्देश्य

विजय भवानी दे

तारादत्त निर्विरोध

युग को नई जवानी दे,
तिलक सरीखा मानी दे,
विपदा में है देश, समय को फिर से विजय भवानी दे !

देख, पड़ोसी आग लगाए, हरी-भरी फुलवारी में,
पतझर बैठा नजर गड़ाए, मधुबन की हर क्यारी में,
लेकिन हमको गर्व चमन के फूलों की बलिहारी में;
पात-पात हरियाली दे,
शाख-शाख रखवाली दे,
दे अपने उपवन को माता, फूलों वाली डाली दे !

भाई बनकर प्यार चुकाए, तोपों से औ' गोलों से,
लेकिन हम तो खेल खेलते, ज्वालाओं से शोलों से,
बहुत सुनी गाथा लछमी की, बुन्देले हरबोलों से;
झाँसी वाली रानी दे,
कर्ण सरीखा दानी दे,
दे अपनी धरती को माता, वीरों की कुर्बानी दे !

रहें नहीं मदहोश, देश में दुश्मन कदम बढ़ाता है !
अपनी पुण्य धरा पर नाहक, वह अधिकार जमाता है,
जागें हम उजियाले पथ से, अंधियारा बढ़ आता है;
रणभेरी बजवाने दे,
सोया शौर्य जगाने दे,
शंकर के त्रिनेत्र खुला दे, तांडव नया रचाने दे !

स्वाधीनता और संगठन, अब के और सदा के लिये, अविभाज्य हैं।
— डेनियल वेब्स्टर

तीर्थराज झा

उठ, कि तू जवान है

उठ, कि तू जवान है ।
रक्त का उफान है ।।

उठ, कि है पुकारती, विन्ध्य की उपत्यका,
उठ, कि है पुकारती, हिमाद्रि की अटा-घटा,
उठ, कि है पुकारती, सह्य की छटा-तटा,
उठ, कि है पुकारती, भारती विकल पटा ।
कह रहा अरावली—तू काल की कलाम है ।
उठ, कि तू जवान है ।।

तू उठा, कि घोर-वृत्ति वृत्र भूमि खो गया,
तू उठा, कि दम्भ दानवी तूफान सो गया,
पैर में तेरे ही, दस्यु-दुर्ग दीन हो गया,
घोर राक्षसी प्रलय-प्रवाह लीन हो गया ।
सूर्य ग्रास बन गया—कि जब चढ़ा तूफान है ।
उठ, कि तू जवान है ।।

शत्रु सामने खड़ा औ' भर रहा हुंकार रे !
नींद छोड़, तज प्रमाद, मेरे भीम जाग रे !
राम जाग, कृष्ण जाग, चन्द्रगुप्त जाग रे !
जाग शिवा, ओ प्रताप, दे लगा न आग रे !
मातृ-भूमि द्रौपदी के केश का विधान है ।
उठ, कि तू जवान है ।।

प्रसन्नता ही स्वास्थ्य है और इसके विपरीत मलीनता ही रोग है ।
—हाली बर्टन

भारत माँ का कश्मीर

थम्मन सिंह 'सरस'

●

भारत माँ का कश्मीर भाल दुष्टो न तुम्हें छूने देंगे,
हर उठी आँख को चितवन से पहले बाहर निकाल लेंगे,
ओ ! पाक शासको सावधान इस ओर बढ़े जो पाँव अगर,
मेरे हैं पहरेदार सजग संगीनों से दुलार लेंगे ।

क्या शर्म नहीं आती तुमको मुँह से जनमत की रट रटते,
तेरे पोलिंग एजेन्ट मुजाहिद भाग रहे पिटते-पिटते,
मेरी सेनाओं का स्वागत उड़ी, पूँछ, टिथवल में होता,
ये जनमत ही तो है बोलो हब हटते हो कि नहीं हटते ।

पख्तून-कबाइलियों को तूने कितने मत अधिकार दिये,
ओ ! जनमत के हामी, कितने उनके दावे स्वीकार किये,
कितने चुनाव करवाये तुमने अपने पाकिस्तानों में,
बतलाओ उनके बनते समय कौन जनमत स्वीकार किये ।

खाने को मीठे सेव मूढ़ तेरी तबीयत ललचाई है,
सदियों से पड़ी पुरानी वृत्ति आक्रमण की अपनाई है,
मेरी राष्ट्रीयता चुनौती उन मंसूबों को देती है,
जिनकी चालों ने ललकारी मेरी विशुद्ध तरुणाई है ।

ओ ! दुनियाँ के पंचों सुनलो शान्ति चाहने वाले है हम,
पर कश्मीर हमारा है उसको न छोड़ने वाले हैं हम,
तुला न्याय की हाथ तुम्हारे ऊँची-नीची इसे न रखना,
छीना भाग इधर रक्खो काँटा निहारने वाले हैं हम ।

जिनके पास स्वास्थ्य है उनके पास आशा है, और जिनके पास आशा है, उनके पास सब कुछ है । —*अरबी लोकोक्ति*

दिनकर

जनता जगी हुई है

जनता जगी हुई है,
मंद-मूंद वे पृष्ठ शील के गुण जो सिखलाते हैं,
वज्रायुध को पाप, लौह को दुर्गुण बतलाते हैं,
मन की व्यथा समेट, न तो अपनेपन से हारेगा,
मर जायेगा स्वयं, सर्प को अगर नहीं मारेगा।
पर्वत पर से उतर रहा है महा भयानक व्याल,
मधु सूदन को टेर नहीं यह सुगत बुद्ध का काल।
जनता जगी हुई है।
नाचे रण-चण्डिका कि उतरे प्रलय हिमालय पर से,
फटे अतल पाताल कि झर-झर झरे मृत्यु अम्बर से।
झेल कलेजे पर, किस्मत की जो भी नाराजी है,
खेल मरण का खेल, मुक्ति की यह पहली बाजी है।
सिर पर उठा वज्र, आँखों पर ले हरिका अभिशाप,
अग्नि-स्नान के बिना धुलेगा नहीं राष्ट्र का पाप।

कभी दूसरों से मत कहो कि तुम बीमार हो, न कभी बीमार ही बनो। बीमारी एक ऐसी वस्तु है जिसे पनपते ही रोकने का प्रयास करना चाहिये।

—बुलवर लिटन

माता तुम्हें पुकारती

द्वारिका प्रसाद त्रिपाठी

काँप रहा है गगन, देख लो, धरती है हुंकारती।
उठो, हिमालय गरज रहा है, माता तुम्हें पुकारती ॥

साहस लेकर बढ़ो तुम्हें जननी की लाज बचानी है
और देश की रक्षा हित देनी फिर से कुर्बानी है
दुश्मन की आवाज आ रही, उत्तर से ललकारती
उठो, हिमालय गरज रहा है, माता तुम्हें पुकारती।

आज ईंट का उत्तर तुमको पत्थर से देना होगा
नए आयुधों से, सज्जित हो, प्रण नूतन लेना होगा
शिवा-भवानी चमकेगी, रिपु सेना को संहारती
उठो, हिमालय गरज रहा है माता तुम्हें पुकारती।

कैसे आज देश पर सहसा कृतघ्नता के घन छाए
जिनको तुमने स्नेह दिया वे ही तुमसे लड़ने आए
जन-जन कण-कण में कम्पन है, कौन सजाए आरती
उठो, हिमालय गरज रहा है, माता तुम्हें पुकारती।

निश्चय करो साथ मिल सबके या नितान्त अकेले में
'स्वतन्त्रता अक्षुण्ण रहेगी संघर्षों के मेले में।'
अरे सुनो, ओ भारत पुत्रों! आर्य-भूमि चीत्कारती
उठो, हिमालय गरज रहा है माता तुम्हें पुकारती।

प्रथम महान सम्पत्ति है सुन्दर स्वास्थ्य। —इमर्सन

दिनेश चंद्र शर्मा

मंगल गीत गाओ

आज किरणों की सुनहरी बाँसुरी पर,
जागरण का एक मंगल गीत गाओ।

छन्द रचना हो नई, स्वर भी नया हो,
व्यञ्जनाएँ हों नई, नव कल्पना हो,
फूँक दो नव प्राण कण-कण में धरा के,
और जन-जन में नई युग-चेतना हो;

स्वप्न शैया पर अभी जो हैं विनिद्रित,
जागरण की भैरवी उनको सुनाओ।

बाहुओं में हैं तुम्हारे चाँद तारे,
और हैं तुम से प्रकृति के दूत हारे,
पर मनुजता तक अभी पहुंचे नहीं हो,
क्या हुआ शशि लोक तक यदि पर पसारे?

बाँध लो तुम विश्व का हर एक कोना,
डोर कुछ बन्धुत्व की इतनी बढ़ाओ।

मानता हूं कौरवों का बल बढ़ा है,
पाँच ही हम शत्रु का शतदल खड़ा है,
पर जहाँ है सारथी भगवान अपना,
विश्व-कुरु में डर तुम्हें किसका पड़ा है?

है विजय निश्चित तुम्हारी सफलता है,
विश्व के संघर्ष में मत डगमगाओ।

स्वास्थ्य परिश्रम में वास करता है। और उस तक पहुँचने का श्रम को छोड़कर अन्य कोई मार्ग नहीं है।

—वैन्डेल फिलिप्स

मशालें जलाओ

दुर्गा प्रसाद झाला

तमस से मिली है किरण को चुनौती,
पहरुओ ! लहू से मशालें जलाओ !

बहुत सो लिये हो बहुत गा चुके हो
अमन के बहुत राग लहरा चुके हो
बहुत चाँदनी की सुधा में नहाए
लता से लिपट फूल जैसे सुहाए
मगर भूल अब कोकिला की मधुर धुन
प्रलय मेघ की गर्जनाएँ गुंजाओ !

जहाँ देवदारू खड़े शीश ताने
हरी घाटियों पर लहरते तराने
सुबह शाम सोना व नीलम बरसता
जहाँ मुग्ध मासूम झरना किलकता
वही स्वर्ण-भू रौंद जाए न कोई
चलो क्रुद्ध पौरुष की भेरी बजाओ !

सुनो भारती क्षुब्ध हुंकारती है
अमिय-धार गङ्गा की ललकारती है
न कुंकुम सजाओ, न केशर बिछाओ
न चन्दन की सौरभ में डूबो-डुबाओ
जमा शुभ्र हिम माँगता है रवानी
लहकते हुये लाल शोले जगाओ !

ईश्वर एक बार एक ही क्षण देता है। और दूसरा क्षण देने से पूर्व उस क्षण को ले लेता है। —स्वेट मार्डेन

दुर्गा प्रसाद 'विशारद'

कश्मीर

सिंहों के सुन्दर बन में श्रृगाल नहीं आने पाये,
मानवता के शुद्ध युद्ध में असुर नहीं जाने पाये।
म्यान भले ही जाय मगर शमशीर नहीं जाने पाये,
जान भले ही जाय मगर कश्मीर नहीं जाने पाये।

अरे हिमालय तेरी घाटी तेरा ही यह देश रहा,
परतन्त्र हुये थे यद्यपि हम पर तू केवल उन्मेष रहा।
जीते थे तूने सहस युद्ध पर एक युद्ध अब शेष रहा,
ये अन्तिम आज परीक्षा है, अब तू अरु तेरा देश रहा।
ध्यान रखो भारत संरक्षक तकदीर नहीं जाने पाये।

मैं भुजा उठा करके कहता हूँ आज समय बलिदानों का,
अरमान छिपाने वाले का भारत के वर अभिमानी का।
चल बढ़जा करले सदुपयोग इस नूतन भरी जवानी का,
अब रक्त रंग पर चढ़ने दे फिर क्या होगा इस पानी का।
चाहे चुल्लू भर रक्त रहे, तक़सीर नहीं जाने पाये।

पूँजी पतियों आगे बढ़कर पूँजी को आज लगा दो तुम,
बन जाओ राणा को भामा जगती को कुछ दिखलादो तुम।
कवियों, भूषण कवि चन्द बनो, जोशीले गान सुनादो तुम,
गायक श्रृंगार छोड़ दो अब लो भैरव राग सुनादो तुम।
धड़ कट जाय मगर आँखों में नीर नहीं आने पाये।

जिस कार्य में तुम्हारी प्रवृत्ति हो, उसी में लगे रहो। अपनी बुद्धि के अनुकूल मार्ग को मत छोड़ो। तुम्हें अवश्य सफलता मिलेगी।

—जान एंजिलो

रणभेरी बजरही निरन्तर

देवप्रकाश गुप्त

देशवासियों ! शीश चढ़ाने की बेला है आई !
देशवासियों ! शीश चढ़ाने की बेला आई !
जननी फिर से मांग रही सूरज जैसी तरुणाई !
सीमा का सवाल अब तो
बढ़ कर हल कर लेना है
दुश्मन को छिप कर घर में
घुसने का फल देना है
आज मिटानी है इस धरती से दुश्मन की परछाईं !
बलिदानों की बेला मित्रों
सदा नहीं है आती
यह तो जय की अमर ऋचा है
जो भू को छू जाती
अग्निपंथ पर बढ़ते जाओ, ध्वनि दे रही सुनाई !
दुश्मन कहीं छिपा है सकता
प्रहरी कभी न सोना
अपने रक्तचरित्रों के आदर्शों
को मत खोना
कोटि-कोटि जब बने पेशवा, हर जवान है भाई !
जननी फिर से माँग रही सूरज जैसी तरुणाई !

ढालू पर्वतों पर आरोहण के पहले धीमी गति की आवश्यकता है।
—शेक्सपियर

ध्वन्सावशेष त्रिपाठी

दुश्मन सावधान

•

अब गंगा-यमुना के जल में उबाल है,
और हिमालय से उठता अग्नि ज्वाल है,
ओ अंधियाले में रहने वाले दुश्मन सावधान !
तू क्यों स्वप्नों का बुनता इन्द्रजाल है ?

सुनो तुम्हारी तो छोटी सी ही हस्ती है,
पर घमन्ड की छायी तुमको मस्ती है,
हम लहू तुम्हारा पी डालेंगे ओ इतराने वाले-
भूल न जाना – यह शेरों की बस्ती है ।

जो शान्ति चाहने वालों पर अंगारे बरसायेगा,
वह भस्मासुर सा माटी में मिल जायेगा,
है चमगीदड़ सा अभिनय पाकिस्तान का,
कल विश्व उसे पैरों से ठुकरायेगा ।

भारत के बेटे गौतम के तुम चेले हो,
पर आज उसे ही मार रहे तुम ढेले हो,
कन्फ्यूशस रोता होगा अपने स्वर्ग लोक में-
दुनियाँ में तुम भारत के शत्रु अकेले हो ।

अगर विदेशी कोई दुश्मन बनकर आता है,
तब कौरव पाण्डव दल तुरन्त एक हो जाता है,
मत भूलो भारत में नारी भी शस्त्र उठाती है–
दुर्गा-रणचण्डी हैं ये इनसे काल सदा घबराता है ।

हमारी सफलता पूर्णतः हमारी नियंत्रण-योग्यता तथा व्यक्तियों को अनुशासित करने की शक्ति पर निर्भर करती है ।

—म० गाँधी

खड़े लुटेरे

धर्मपाल सिंह राघव 'रंजन'

लेने सीमा पर खड़े लुटेरे माता का गहना,
ओ वीर ! राष्ट्र के पुत्र उठो !! अब सोते मत रहना !
आज 'अभिमन्यु' बन तुम वीर !
दिखाओ कौशल रण के बीच ।
करो सबका ही तुम संहार,
भाग पाए न कोई नीच ।
अडिग तुम सीमा पर रहना—
ओ वीर ! राष्ट्र के पुत्र उठो !! अब सोते मत रहना ।
सुदर्शन लेकर भोले 'कृष्ण'
फूँक दो शंख विजय का आज ।
नहीं ले सकता कोई इसे,
यह है पावन भारत का राज ।
नहीं तुम धीरज खो देना—
ओ वीर ! राष्ट्र के पुत्र उठो !! अब सोते मत रहना !
देश की माता-बहनो सुनो,
बनो 'रणचण्डी' तुम साकार ।
आज तुम 'लक्ष्मी' 'दुर्गा' बनो,
देश करता है यही पुकार ।।
यही है तुम सबका गहना—
ओ वीर ! राष्ट्र के पुत्र उठो !! अब सोते मत रहना !

तुम्हारे स्वागत के लिये कहीं दूर पर कृत्रिम बादलों की ओट में सफलता की देवी खड़ी है । केवल दृढ़ता से उस ओर बढ़ने भर की आवश्यकता है ।

—स्वेट मार्डेन

बढ़ो जवानो

धर्मचंद्र वर्मा 'धर्म'

जिसकी आशंका करते थे दूर-दूर जिससे रहते थे
सपना वही सत्य हो बैठा नजरों में जिसको लखते थे
पारथ बन गाँडीव संभालो रिपु की सेनायें हन डालो
अपना ज्ञान अमल में लाओ बहकपने की बात न मानो !
बिगुल बज उठा, बढ़ो जवानो !

जिसको समझा अपना भाई उसने दिखलाई शठताई
तान हमीं पर बैठा तोपें खूब प्रेम की रीति निभाई
उसके प्रति कैसा लिहाज अब जिसे न आती तनिक लाज अब
कायरता का भ्रम भंजन कर रण नाहरता इन्हें दिखाओ !
बिगुल बज उठा, बढ़ो जवानो !

सत्य सदा विजयी होता है महा पतन अघ का होता है
द्वेष दंभ औ दुराचरण का दानव आखिर में रोता है
दुर्योधन अब पाक बन गया ताकत पाते जल्द तन गया
अब अवसर आ गया वही है तुम बन भीम गदा निज तानो !
बिगुल बज उठा, बढ़ो जवानो !

जन्मे गाँधी, बुद्ध, जवाहर, शांति समर्थक जन के प्रियवर
कमी रही कब वीर जनों की, जन्मे शिवा, प्रताप से नाहर
मातृभूमि हित प्राण गंवाया किन्तु न अपना शीश झुकाया
उसी देश के शूर वीर तुम इनको गौरव पाठ बखानो !
बिगुल बज उठा, बढ़ो जवानो !

संसार में सफलता प्राप्त करने और उन्नत होने के केवल दो मार्ग हैं। एक तो स्वयं अपने श्रम द्वारा और दूसरा दूसरों की मूर्खता से लाभ उठाकर। —ला ब्रूयेर

कश्मीर हमारी पाग है

नरेन्द्र शर्मा

केसरिया कश्मीर हमारी पाग है।
तिलकित मस्तक पर कश्मीर-पराग है।

खिलें कमल के कोश, खिलें केसर-कुसुम;
भारत के नंदन-बन हो, कश्मीर तुम।
लाख हुए शहीद खिला तब बाग है।

डाका डालेगा जो भी कश्मीर पर,
शीश चढ़ा देंगे उसका शमशीर पर।
ध्यान-ध्यान में खड्ग लपकती आग है।

धैर्य हमारा पत्थर की जड़ता नहीं;
शूल शत्रु का क्या हमको गड़ता नहीं ?
स्वाभिमान से हमको भी अनुराग है।

दुश्मन कपटी लम्पट कुटिल कुचालिया;
भेस बदल, छल-बल से आया जालिया,
लगा भागने चोर, पड़ गई जाग है।

तोड़ेंगे विष दंत आज हम सर्प का;
निश्चय होगा अंत शत्रु के दर्प का;
हम मयूर हैं, दुश्मन काला नाग है।

या तो आरम्भ ही मत करो और यदि आरंभ कर चुके हो तो पूर्ण करके हटो।

—ओविद

नंदकिशोर काबरा 'किशोर'

रावी के तट पर

पहिले मेरे गहरे घावों को भर जाने दो,
अमृत का यह घूँट बाद में पी लूँगा,
पहिले मेरे काश्मीर पर रंग चढ़ाने दो—
अगर चढ़ गया तो सदियों तक जी लूँगा।

नंद वंश का नाश न जब तक हो जाता।
दुश्मन रण के बीच न जब तक सो जाता;
मेरे ये चाणक्य शिखा फहरावेंगे—
चन्द्रगुप्त के तीर प्रलय ले आवेंगे।

शंकर का ताण्डव होगा कैलाश पर,
गीदड़ रोयेंगे दुश्मन की लाश पर।
पहिले मुझको दुर्योधन की जांघ चीरने दो-
पांचाली का चीर बाद में सी लूँगा।

होली और छब्बीस जनवरी बाद में,
पहिले पाक पड़ौसियों की याद में,
संगीने रावी के तट पर आ गई—
अरे! करांची कई कुलांचे खा गई।

दुश्मन ढक जाए तोपों की आग से,
केसर क्यारी भर जाएगी आग से।
पहिले मुझको भस्मासुर के हाथ काटने दो
शंकर का वरदान बाद में ही लूँगा।

सतत् साधना के महापरिणाम का नाम ही सफलता है।
—नलिन

कर शत्रु का संहार लो

नवल किशोर गुप्त

हिन्द के चमन को वीरो आज तुम उबार लो,
रोटी लो, गोली लो, बन्दूक लो, तलवार लो।

विनाश हेतु शत्रु सैन्य फिर कभी न आयेगी,
सुरम्य काश्मीर भू नित्य न बुलायेगी,
खिलेंगे फूल शान्ति के, चैन की सुकोंपलें,
चहचहा उठेंगी हर तरफ खुशी की बुलबुलें।

खून देके अपना तुम चमन से फिर बहार लो,
रोटी लो, गोली लो, बन्दूक लो, तलवार लो।

देश का ही मान अपना मान है सम्मान है,
देश-सेवा करना ही अपनी आन बान है,
बढ़े चलो, अड़े चलो, विजय निशान साथ है,
शूरता दिखाओ तुम विजय तुम्हारे हाथ है।

युद्ध वीर! शत्रुओं की मौत को पुकार लो,
रोटी लो, गोली लो, बन्दूक लो, तलवार लो।

सीख ऐसी दो इन्हें इधर न फिर नजर करें,
टूट पड़ो इस तरह यह चीटियों सदृश मरें,
देश की सुरक्षा ही सबसे बड़ा धर्म है,
शत्रु शीश काटना ही एक बड़ा कर्म है।

युद्ध के मैदान में कर शत्रु का संहार लो,
रोटी लो, गोली लो, बन्दूक लो, तलवार लो।

स्वच्छता और श्रम मनुष्य के सर्वोत्तम वैद्य हैं!

—रोमसिन

शुभाभिलाषा

नवलकिशोर झा 'नवल'

मोहन मधुर मुरली बजे फिर नवल-गीता गान हो,
संताप रोग शोक भय दुख मोह का अवसान हो ।
अकर्मण्यता अहमन्यता अब भीरुता का अन्त हो,
यह देश उन्नत शीघ्र हो ध्रुव-धर्म धन अत्यन्त हो ।

निःस्वार्थ मारुत हो प्रवाहित स्वार्थ-बादल दूर हो,
औदार्यमय सद्भाव से सबका हृदय भरपूर हो ।
भारत-निवासी स्वावलम्बी धीर वीर सुविज्ञ हो,
विज्ञान शिल्प कला यन्त्रादि में न अब अनभिज्ञ हो ।

एकत्व पावन-प्रेम-बंधन को कभी तोड़े नहीं,
सत्कर्म-पथ से भूल कर भी मुख प्रभो मोड़े नहीं ।
निज देश के शुचि भेष-भाषा धर्म को छोड़े नहीं,
मालिन्य ईर्षा फूट-मद से स्नेह तक जोड़े नहीं ।

दुर्भिक्ष उपसर्गादि दुख के नाम का न निशान हो,
नित हिन्द वासी के हृदय राष्ट्रीयता की तान हो ।
गुण शील विद्या ओज साहस धैर्य का उत्कर्ष हो,
विभु ! विश्व-सभ्य सुदेश में आदर्श भारतवर्ष हो ।

कोई भी व्यक्ति जब तक किसी वस्तु के लिये श्रम नहीं करेगा वह वस्तु उसे प्राप्त नहीं हो सकती ।

-- गारफिल्ड

भारत देश हमारा प्यारा

नारायण दास गुप्त 'कमलेश'

भारत देश हमारा प्यारा, भारत देश हमारा है ।

जिसकी बलिदानी माटी से, बना हुआ हम सबका तन,
जिसके गुण गौरव-गरिमा से, सना हुआ हम सबका मन,
उसी मातृ-भू पावन रज ने, हमको आज पुकारा है । भारत...

इसकी शान न जाने देंगे, तन-मन-प्राण गँवायेंगे,
अपनी इंच-इंच भू हम, दुश्मन से वापस लायेंगे,
भारत के बच्चे बच्चे ने, आज यही व्रत धारा है । भारत...

'सत्यमेव-जयते' अपने, वेदों से हमने पाया है,
अरि मर्दन का महामन्त्र, गीता ने हमें सिखाया है,
अपने नेता शास्त्री जी का हमको सबल सहारा है । भारत...

ओ राणा के सिंह - सपूतो, लक्ष्मी की सन्तान,
अर्थ - दान दो, रक्त-दान दो, दो अपना बलिदान,
रंगे सियारों ने शेरों के, पौरुष को ललकारा है । भारत...

चीन - चवाई हो, या होवे पिट्टू पाकिस्तान,
उसे बतादो रहे होश में, यह है हिन्दुस्तान,
जिसका लोहा सदा मानता, आया यह जग सारा है । भारत...

जिस श्रम से हमें आनन्द प्राप्त होता है, वह हमारी व्याधियों के लिये अमृत तुल्य है, हमारी वेदना की निवृति है ।

—शेक्सपियर

नारायण प्रसाद 'करुणेश'

दानवता का मर्दन कर

अपने इस अनुपम उपवन को, नहीं पददलित होने देंगे,
दानवता का मर्दन कर हम, मानवता को देखेंगे।
चीनी शत्रु घोल कर तुझको, शर्बत सा पी जायेंगे,
हिमगिरि के ही श्वेत वस्त्र का, तुझको कफन पिन्हाएंगे।

शिष्य कृतघ्नी नहीं कभी, अपमान गुरू का करना था,
जिस भारत से ज्ञान लिया था, उसका ऋण तो भरना था।
गुरू तो सदा रहेगा गुरू ही, बड़ा सदैव बड़ा ही,
तुझे अन्त में करना होगा, प्रायश्चित्त कड़ा ही।

सोते हुये सिंह को तूने, सहसा आज जगाया है,
उसकी तन्द्रा से तूने भी, अनुचित लाभ उठाया है।
अंगड़ाई लेकर आया वह, तहस - नहस कर देगा,
अपने अतुल पराक्रम से, वन निष्कंटक कर लेगा।

गंगा - यमुना का उद्गम जल, नहीं किसी को छूने देगा,
मदमाते चीनी हाथी को जीवित नहीं लौटने देगा।
विक्रमार्जित इस उपवन में, आशा सुमन खिलाएगा,
सौरभ से सब धरा सनेगी, विश्व वन्द्य कहलाएगा।

यदि तुम अपवित्रता और संसार भर के पापों से बचना चाहो तो अपना कार्य खूब परिश्रम और चुस्ती से करो, चाहे तुम्हारा काम अस्तबल साफ करने का ही क्यों न हो। —थोरो

उठ मेरे भारत के वीर

न॰ सु॰ रा॰ गणात्रो

उठ मेरे भारत के वीर !
आज तक माना जिसे था भाई अपना
आज वह विश्वास घातक
मित्र द्रोही, प्राण घातक।
सत्य है हम हैं अहिंसक
किन्तु कायर नहीं हैं हम।
देखकर ये बहशियाना और छुपके घात करना
आज फिर तलवार पर जाता अचानक हाथ है।
देखना है झूँठ का अब कौन देता साथ है।
विजय निश्चित है हमारी
उठ मेरे भारत के वीर !
चप्पा चप्पा तुम से हम लेकर रहेंगे
युद्ध में अर्जुन बनेंगे।
दस दिशाएँ गा रहीं—
मेरे वतन की कीर्ति।
उठ मेरे भारत के वीर !

हमें ध्यान रखना चाहिये कि हम समय किस प्रकार व्यतीत कर रहे हैं क्यों कि हम अपने भाग्य के निर्माण में अपनी सहायता कर रहे हैं।
—राबर्ट हीप

निर्मल चन्द्र 'निर्मल'

ये खून उन्हीं का है

यह खून उन्हीं का है।

गंगा यमुना को धार बहाने वालों का
अपनी महनत की रोटी खाने वालों का
चीनी दुश्मन को मार भगाने वालों का
भारत माता के लाल कहाने वालों का।
यह खून उन्हीं का है।

ये खून यहाँ है खेतों का खलियानों का
जो ताजे ताजे हुये यहाँ बलिदानों का
दृढ़ आजादी के बढ़ते हुए जवानों का
अपनी माता के गोदी के मेहमानों का
यह खून उन्हीं का है।

ये खून नहीं है, ये तो है पागल पर्वाना
उस बूढ़ी विधवा माँ का है यही खजाना
लुटा खजाना आज माँग गोदी खाली है
मिटकर भी जो शेष रही उसकी लाली है।
यह खून उन्हीं का है।

यदि हम सही तरीके से विचार करें कि वस्तुओं में कितना अंश प्राकृतिक है और कितना श्रमोत्पादित, तो हमें ज्ञात होगा कि १०० में से ९९ अंश श्रम के ही परिणाम हैं। —जॉन लॉक

होती है नीलामी

निर्मल 'मिलिन्द'

होती है नीलामी, तुम भी बोली बोलो—
आजादी के बदले अपना सिर बेचोगे ?
वह आजादी— जो हथकड़ियाँ तोड़ी तब पाई है,
वह आजादी-जिसकी महिमा दुनियाँ ने गायी है,
आजादी, जिस पर सुभाष ने सपनों की बलि दे दी,
आजादी, जिसमें तेरे लोहू की परछांई है।
रिक्त पड़ा है इन्द्रासन, बस एक शीश कीमत है,
बोलो, तुम मिट्टी की कीमत पर भी सोना लोगे ?
होती है नीलामी, तुम भी बोली बोलो—
आजादी के बदले अपना सिर बेचोगे ?
धमकाया है तुम्हें यार, पेकिंग के डिक्टेटर ने,
ललकारा है मीत तुम्हें नापाक पाक खंजर ने,
नहीं सुनेंगे, अब लाशों से धरती पाट चलेंगे,
एक शीश एक क़फन साथ ले दीवाने निकलेंगे।
लग्नशालियों की जय होती—ओ चट्टानी पौरुष,
प्रश्न ईंट तो उत्तर पत्थर, बोलो बदला लोगे ?

क्या तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है ? तो समय को व्यर्थ मत गंवाओ। क्योंकि जीवन इसी से बना है।

—फ्रैंकलिन

उठो साथियो

निरंकार देव 'सेवक'

उठो साथियों समय नहीं है, अब शोभा शृंगार का।
आज चुकाना है ऋण तुमको, अपनी मां के प्यार का।
प्राण हथेली पर रख कर,
चलना है मैदान में।
फर्क नहीं आने देना है,
देश जाति की शान में।
सब के आगे एक प्रश्न है, सीमा के अधिकार का।
बच्चे बच्चे के हाथों में,
हिम्मत का हथियार दो।
जो दुश्मन चढ़कर आया है,
उसको बढ़ कर मार दो।
समय नहीं है यह फूलों का, अंगारों के हार का।
सबसे बढ़ कर शक्ति समय की,
आज तुम्हारे पास है।
तुम्हें खून से अपने लिखना,
आज नया इतिहास है।
दुश्मन घुस आया भीतर तो, क्या होगा घर बार का।

समय को नष्ट मत करो क्योंकि यही जीवन का निर्माण अवयव है।

—फ्रैंकलिन

दुश्मन को ललकार दे

नीरज

ओ शरमीले काश्मीर उठ ! दुश्मन को ललकार दे,
झूम उठें ख़ैबर-हिन्दूकुश, ऐसी नयी बहार दे।
सरहद पर बारूद लिए है आँधी खड़ी तलाश में,
घुला हुआ है ज़हर हवा में, धुंआं घिरा आकाश में,
लन्दन में वाशिंगटन और करांची से लाहौर तक,
तुझे मिटाने की हर कोशिश है मज़हबी लिवास में,
चढ़ती हुई उमर वाले ! जगती हुई नजर वाले !
उठती हुई लहर वाले !
शोर हो रहा जो जिहाद का उस जानिब बेबात है,
उसके पीछे पिरामिडों के क़ातिल का ही हाथ है,
एटम के हथियारों की जो जुड़ी नुमायश पास ही,
वह नागासाकी के आदमखोरों की बारात है,
नई सुबह-सूरज वाले ! नई सिन्ध सतलज वाले !
नई गुहार-गरज वाले !
ओ सर्जन के दूत ! उलझनी लट हर एक संवार दे।
शुभ चिनार की छाँव, छलकलती झीलों वाली गागरी,
बादामों के बाग, हवा की जिनमें बजती बाँसुरी,
शमीना पहने पहाड़ियाँ, जड़ी नगीना घाटियाँ,
फेंक रहा है दुश्मन सब पर ही ज़जीरें डाल री,
चिर स्वतन्त्र छाहों वाले ! चिर स्वतन्त्र राहों वाले !

श्रम प्रत्येक वस्तु पर विजय प्राप्त कर लेता है। —होमर

पद्मसिंह 'कमलेश'

चूके नहीं निशान

चूके नहीं निशान
साथियो ! चूके नहीं निशान !
दुश्मन धोखे बाज़ बड़ा है
छलिया, मौके साज़ बड़ा है
इसको खुद पर नाज़ बड़ा है
दो ऐसी ठोकर
मिट जाये सारा गरब-गुमान
साथियो ! चूके नहीं निशान।
बनता था यह अपना भाई
हर आँखों पर चरबी छाई
पंचशील को धता बताई
अत्याचारी बन कर
अपना भूल गया ईमान
साथियो ! चूके नहीं निशान
इसको बातों में मत आओ
सब जंगी सामान जुटाओ
और मोर्चे पर जम जाओ
करो देश के बाहर
पाओ दुनिया में सम्मान।
साथियो ! चूके नहीं निशान।

समय की कसौटी पर ही मनुष्य की आत्मा की परीक्षा होती है।
—थामस पेन

चलो साथियो

पृथ्वीनाथ मधुप

जागी राणा के प्रण-सी भारत की नई जवानी है,
वीर शिवा की क्रूर-काल सी जागी पुनः भवानी है।
यह धरती है राम, कृष्ण औ' भीम, कर्ण-से वीरों की,
लक्ष्मी बाई, बोस, भगत, इतिहास-कोष के हीरों की।

यहाँ दानवी-शक्ति सदा ही कुचली कदमों के नीचे,
न्याय फला, अन्याय भगा सिर पर पग धर आँखें मींचे।
हम पौरुष साकार देखलो चाल लिये तूफानी हैं,
जागी राणा के प्रण-सी भारत की नई जवानी है।

आजादी के दीवाने हम प्यारी यह प्राणों से भी,
इसकी रक्षा-हेतु कभी भी हमने आनाकानी की ?
इसकी ओर नज़र टेढ़ी कर देखेगा जो मूढ़ कभी—
कोई भी—जोड़ेंगे उसका नाता यम से शीघ्र तभी।

यहाँ गर्भ में ही तो हमने कला युद्ध की जानी है,
वीर शिवा की क्रूर-काल-सी जागी पुनः भवानी है।
शिरा शिरा में खून खौलता चरण चरण संचरणोत्मुक,
माँ की आन बचाने को है भारत जन-गण मरणोत्सुक।

किस मतिहीन अफीमचिये ने किया मौत का आवाहन—
स्वयं ? शिवालय ओर बढ़ाये अपने दूषित दुष्ट चरण !!
चलो साथियो ! पुरुखों की यह बुला रही कुर्बानी है !
वीर-प्रसू भारत जननी के हम सब सुत बलिदानी हैं।

शहीदों के रक्त बिन्दु ही उपासनाओं की आधार शिला होते हैं।
—लार्ड मेकाले

होशियार

पाण्डेय आशुतोष

मातृभूमि पर मिटने वाले जय हो सजग सिपाही !
अमर हुई इतिहास तुम्हारा लिखने वाली स्याही !!

सफल हो गया सचमुच माँ का तुमको दूध पिलाना,
सफल हो गया आज शिवाजी का वह भगवा बाना,
सफल हो गया तेग बहादुर सफल हो गया नाना,
और लटकते फन्दे के ऊपर 'बिस्मिल' का गाना,

बचा लिया तुमने रजपूती तलवारों का पानी !
कभी नहीं भूलेगा मंगल पाण्डे यह कुर्बानी !!

धन्य हुई वह माता जिसने तुमसा शूर जना है,
धन्य हुई संगीन तुम्हारे कर का जो गहना है,
होशियार ! हल्दी घाटी से बढ़कर युद्ध ठना है,
यह है भारतवर्ष शीश लौटाना बहुत मना है,

विश्व-शान्ति को जहर पिलाने तक्षक आज चला है !
सावधान ! हिंसा ने किया अहिंसा पर हमला है !!

भरत सरीखे बच्चे ने भैरों की मूँछ उखाड़ी,
मूण्डमाल देकर लौटाती रण को रानी हाड़ी,
अरावली से पूछो, खेल खेलते जहाँ खिलाड़ी,
तब भी नगपति देख रहा था, छोटी बड़ी पहाड़ी,

टीपू की औलाद देखना कहीं दाग मत लागे !
टुकड़े हो जाना पर मत झुकना दुश्मन के आगे !!

शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले, वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा। —अनाम

दुन्दुभी फूँको, सपूतों

पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु'

●

चलो सीना तान सीमा पर चलो,
लुटेरों ने देश का भू-भाग लूटा है !
कुचल दो इन छद्मवेशी लोभियों को,
आज डमरू से प्रलय का राग फूटा है !

बना दो ज्वालामुखी हिमवान को !
इष्ट मानो दान को बलिदान को !
मातृ वेदी पर सुरक्षा के लिए,
चढ़ा दो सब ज्ञान को, विज्ञान को !

दुन्दुभी फूँको, सपूतो ! दुन्दुभी,
आज अरि रण-हेतु हो बेलाग टूटा है !

स्वयं रोको आज भ्रष्टाचार को !
भुजा में भर लो प्रलय के ज्वार को !
बुलाता है देश सैनिक - वेश में,
चूमलो तलवार को, अंगार को !

वज्र-आयुध छोड़ने शूरो ! चलो,
आज पौरुष का प्रबल नग-नाग टूटा है !

सामने देखो खुले इतिहास को !
हृदय में लाओ विजय-विश्वास को !
देश के ओ सिंह ! गुरु गर्जन करो,
ध्वस्त कर दो धूल में बेशर्म को !

पर्व यह अनमोल, वीरो ! बढ़ चलो,
आज अपने देश में जप-याग झूठा है !

अपने संपूर्ण देश की शुभ कामनाओं की शीतल छाया में वीर कितने विश्राम से शयन करते हैं ! —*कोलिन्स*

प्रभाकर भारद्वाज

आगे बढ़ेंगे

●

आज मत तुम रागिनी पर राग साधो,
आज मत निज प्राण-प्रिय की वेणि बाँधो।
आज जग में एक भीषण ज्वार ला दो,
क्योंकि अरि कश्मीर लेना चाहता है।

आज परियों के सदन की बात छोड़ो,
आज तुम रंगरेलियों का साथ छोड़ो।
आज बन शोले भड़क जाओ समर में,
क्योंकि अरि भारत हड़पना चाहता है।

अब चमन प्यारा हमें लगता नहीं है,
अब बहारों से भवन सजता नहीं है।
आज तरुणों का रुधिर भी खौलता है,
क्योंकि अरि माँ को कुचलना चाहता है।

आज है स्वीकार उसकी हर चुनौती,
आज वह समझे न भारत पर बपौती।
आज प्रलयंकर बने आगे बढ़ेंगे,
क्योंकि भुट्टो मार खाना चाहता है।

जिसमें स्वयं मरने की शक्ति है, वही वीर है। त्याग का आदर्श महान् है, और वही संसार में कुछ कर सकता है जिसमें त्याग की मात्रा अधिक हो। —अनाम

अभियान

पी० आर० रुक्मा जी 'अमर

खबरदार !
होशियार !!
हम भारत की हैं संतान महान
हमें न करो चीनी हमलावर हैरान।
मत भूलो—
यहीं जन्मे थे
भीमार्जुन, अभिमन्यु, शिवा, प्रताप, साँगा, रणजीत
भारत माता वीर प्रसविनी सदा विजयिनी
आज भी यहाँ जीवित है वीरों की सन्तान। खबरदार॥
यहीं बने थे—
बज्रयुध, अमोघ अस्त्र, सम्मोहक, शब्दबेधी बाण
जिन से हुआ था
अरि का अहम् चूर-चूर
और दुश्मन के निकले थे प्राण।
हम पंचशील के प्रणेता हैं
सत्य, अहिंसा, धर्म नीति के नेता हैं
आज भी यहाँ बसते हैं
वीर जवाहर जैसे युग द्रष्टा
शान्तिदूत, शासक, राजनीतिज्ञ महान। खबरदार॥
चीनियों—
गुमराह मत बनो।

प्रलोभनों के प्रतिरोध का प्रत्येक क्षण ही एक महान विजय है।
—फेबर

शत्रु को पछाड़ दो

पुष्पलता श्रीवास्तव

●

एक इंच भूमि पर अनेक शीश वार दो ! शत्रु को पछाड़ दो !!

उठाये आँख जो इधर फोड़ दो बहादुरों,
बढ़ाये पाँव जो इधर तोड़ दो बहादुरों,
शत्रुता दिखायें यदि बन्धु की कलाइयाँ—
शील मत करो अरे मरोड़ दो बहादुरों;
दिखायें छुरियाँ अगर उन्हें कटार-धार दो ! शत्रु को पछाड़ दो !!

बतादो दुश्मनों को रक्त पूर्वजों का शेष है,
"जन्म भूमि पर मिटो" प्रताप का सन्देश है;
युग बदल गया परन्तु आज भी तो साथियों—
वही धरा, वही गगन, वही अरे दिनेश हैं;
आगया समय कि मातृभूमि-ऋण उतार दो ! शत्रु को पछाड़ दो !!

अशान्ति चाहते नहीं हमें तो शान्ति इष्ट है,
समाज-भारतीय शत्रु के लिये भी शिष्ट है;
परन्तु आबरू की ओर दृष्टि जो उठायेगा—
ऐसे पापियों के लिये दण्ड ही अभीष्ट है;
बहुत मदान्ध हो रहे नशा जरा उतार दो ! शत्रु को पछाड़ दो !!

वीरता एक सस्ता और अशिष्ट गुण है, जिसके सर्वाधिक उदाहरण निष्कृष्ट कोटि के असभ्यों में मिलते हैं।

—चैटफिल्ड

राष्ट्र वन्दना

प्रभाकर शर्मा 'प्रभाकर'

वंद्य राष्ट्र देव तुम, वंद्य तुम वसुंधरा।
धन्य मेरा देश ये, धन्य देश की धरा।

आदिकाल का स्वरूप, आज भी है विद्यमान।
सारा विश्व कर रहा, तेरा ही तो कीर्तिगान।

कोसों दूर है रही, तुझसे ही तेरी जरा।
धन्य मेरा देश ये, धन्य देश की धरा।

पूण्य भू पर देश की, देवता का वास है।
देव करते आ रहे, दैत्य का विनाश हैं।

संकट आते ही रहें, देवों ने उन्हें हरा।
धन्य मेरा देश ये, धन्य देश की धरा।

गंगा-यमुना में सदा, अमि ही बहता आ रहा।
पुण्य गाथा देश की वो, अब भी कहता जा रहा।

तूने ही तो सरसरी, भागीरथ वंश को तरा।
धन्य मेरा देश ये, धन्य देश की धरा।

चरण तेरे पखारता है, उदधि देख सर्वदा।
आरती उतारती है, क्षीप्रा, चंबल, नर्मदा।

अंग अंग लैस है, शीश हिम मुकुट धरा।
धन्य मेरा देश ये, धन्य देश की धरा।

वंद्य राष्ट्र देव तुम, वंद्य तुम वसुंधरा।
धन्य मेरा देश ये, धन्य देश की धरा।

लापरवाही प्रायः अज्ञानता से भी अधिक क्षति पहुंचाती है।
—फ्रैंकलिन

'प्रभात' जैन

अफजल ने आँख उठाई है

सोये प्रलय के गीत उठो, हे महाक्रान्ति के मीत उठो,
फिर एक पड़ौसी 'ग़ौरी' ने, भारत पर आँख उठाई है।

मैं तो चुप था जाने कब से, यह मौन लेखनी मेरी थी,
यह प्रतिशोध की चिन्गारी, इक छुपी राख की ढेरी थी।

बढ़कर रोको नापाक चरण, करना मृत्यु का तुम्हें वरण,
फिर टिड्डीदल ने भारत के, सिहों पर आँख उठाई है।

अम्बर, अवनि सब काँप उठें, दुश्मन के दाँव बदल जायें,
इतिहासों के, भूगोलों के—भूलों के, पृष्ठ बदल जायें।

अब छोड़ अहिंसा का बाना, लो, पहिनो केसरिया बाना,
फिर आज 'शिवा' की धरती पर, 'अफजल' ने आँख उठाई है।

समर भूमि में रण होने दो, अब शिव को ताण्डव करने दो,
मेरे भारत का मान चित्र, फिर ठीक हमें कर लेने दो।

गा रही विजय के गीत किरण, बढ़ रहे लक्ष्य की ओर चरण,
फिर आज भेड़ियों ने मिलकर, पौरुष पर आँख उठाई है।

वास्तविक वीरता तो वह है कि जो कुछ कोई संपूर्ण विश्व को दिखाकर कर सकता है, वही बिना किसी को दर्शाये कर डाले।
—ला रोश फूको

सीमाओं पर चल

प्रभुदयाल भटनागर 'अंगारे'

युद्ध के बादल घिरे, बजते कहीं मादल,
उठ सोचता है क्या ? सीमाओं पर चल !
सीमाओं पर चल।

आती है आवाज कहीं से,
दुश्मन चाऊ चोर की,
मार मार कर शान मिटाओ—
पापी आदम खोर की।
तैयार खड़े रण बांकुरे भाये न पायल,
सीमाओं पर चल।

हिम किरीट न रौंदे कोई,
पहले ही पग काट दो,
जिसके द्वारा दुश्मन आये—
खाई दुश्मन से पाट दो।
रंग लायेगा खून गिरा जो हो करके घायल।
सीमाओं पर चल।

काटो मारो भाग न पाये,
आया जो दुश्मन द्वारे,
प्रहरी हर भारत का बच्चा—
गिन गिन कर देखो मारे।
ऊगा जो विनाश का सूरज जायेगा ढल,
सीमाओं पर चल।

विजय कितनी सुन्दर है, किन्तु कितनी मूल्यवान भी !

—वाडफलसे

उठो उठो हे

प्राणमोहन शाह 'प्राण'

उठो भवानी के भुज दस कर प्रबल प्रहार उठो !
शिव ग्रीवा से ससर शेष भीषण फुफकार उठो ।
उठो वीर बजरंग भीम भैरव ललकार उठो ।
उठो इन्द्र पवि से अरिदल की छाती फाड़ उठो ।
ज्वलित नेत्र से ले त्रिशूल शिवशंकर नाच उठो ।
उठो भीम की गदा राम - अर्जुन नाराच उठो ।

हे परशुराम तुम उठो, भीष्म तुम उठो ।
द्रोण तुम उठो, उठो रिपु मर्दन सत्वर उठो ।
हे प्रताप तुम उठो, शिवाजी उठो ।
बहादुरशाह, कुंवर सिंह उठो ।
उठो लक्ष्मीबाई तुम उठो ।
हे अतीत के गौरवमय इतिहास उठो ।
उठो देश की भक्ति लिये सब शक्ति उठो ।

चन्द उठो भूषण से कवि का छन्द उठो ।
उठो देश के जन-जन, कण-कण उठो उठो ।
हे उठो उठो हे उठो उठो ।।

एक लापरवाह व्यक्ति की पत्नी विधवा के समान है ।
—हंगेरियन लोकोक्ति

नव परिवर्तन

प्रेमनारायण सिंह 'प्रशांत'

निर्विकल्प कवि प्रलयंकर,
कलिमल-कंदर्प दहन कर,
महाप्राण ! तम-त्राण कंठ से,
गा कविता, गर्जन कर ।
ताप - शाप - शोषित ऊसर उर,
उगते सूख गये प्रेमांकुर,
तम - झंका - हत, धूल - धूसरित,
अधर - सधर - उर असुर तृषातुर ।
युगल पलक आलोक - वरण कर,
तन्वि - चरण - गति तरुण - चरण पर,
प्रणय - स्नेह की मेह - धार से
धुले दिशा-तम - ज्ञान, किरण कर ।
दीपित हो युग ज्योति - तप्त-तन,
मधुकर रव चिर चुम्बित मधुवन,
वरण - किरण - कविता परिरंभित,
दो प्राणों का स्वर सरोज वन ।
मन के महाब्धि में भर गर्जन,
गुन - गुन गुंजन, नव परिवर्तन,
दृग में भर कर दिग्देश काल,
शत - शत शताब्दि स्वर में नूतन ।

मृत्यु में आतंक नहीं होता, बल्कि मृत्यु तो एक प्रसन्नता पूर्ण निद्रा है जिसके पश्चात् जागरण का आगमन होता है ।

—म० गाँधी

प्रेमबहादुर 'प्रेमी'

प्रयाण गीत

स्वदेश के जवान रे !
करो अभी प्रयाण रे !
कि शृंग पर खड़ी-खड़ी वसुन्धरा पुकारती ।
उठो कि पाण्डु-पुत्र ! आज द्रोपदी उदास रे !
उठो कि दुष्ट चीन का करो अभी विनाश रे !
उठो कि एक कृष्ण क्या अनेक कृष्ण सारथी ।
समुद्र, शत्रु -सैन्य का हिमाद्रि तुङ्ग पर चढ़ा,
पियो कि तुम 'अगस्त्य' हो न काम कुछ तुम्हें बड़ा;
करो न तुम विलम्ब और, पंथ माँ निहारती ।
डरो न मृत्यु से, अरे अमर्त्य कौन है कहाँ ?
अमर्त्य है वही कि जो मिटा स्वदेश पर यहाँ;
उठो कि प्राण दान सु-मात कर पसारती ।
स्वतन्त्रता अमर रहे, रहे न तुच्छ प्राण यह,
प्रवीर हो, अगर रहे स्वदेश-स्वाभिमान यह;
जला असंख्य दीप तुम – करो अखण्ड आरती ।
रुको न राह में कहीं चढ़ो सवेग शत्रु पर,
सहो विपत्ति, विघ्न किन्तु रुक सकें न अग्नि-शर;
समस्त सृष्टि कह उठे—कि धन्य-धन्य भारती ।

मृत्यु जीवन से उतनी सम्बन्धित है जितना जन्म ।

—रवीन्द्र

स्वाधीनता दिवस

फूलचन्द कुशवाहा

जन जन की नव आशाओं के
शुभ प्रतीक मधु इच्छाओं के ।
तुम्हें आज पाकर चिर हर्षित ।
तन - मन से जन - जन हैं पुलकित ।
बलिदानों के मधुर दिवस हे
स्वागत जय स्वातंत्र्य दिवस हे ।

मातृ भूमि के वरद सुतों के ।
त्याग तपस्या बलिदानों के ।
तुम सन्देशक बन कर उनके ।
भर दो नव उत्साह राष्ट्र के ।
जन-जन के स्वाधीन मनस में ।
स्वागत जय स्वातन्त्र्य दिवस हे ।

स्वतन्त्रता के राष्ट्र क्षितिज में
कभी घिरे नीरद संकट के ।
शौर्य सूर वन जन जन दल में ।
पौरुषता के रथ पर चढ़ के ।
राष्ट्र दिवाकर कभी घिरे नहीं ।
पराधीनता गहन तमस से ।
स्वागत जय स्वातंत्र्य दिवस हे ।

क्या मृत्यु अन्तिम निद्रा है ? नहीं, अन्तिम चेतावनी है ।

—वाल्टर स्कॉट

चेतावनी

बच्चन

जागो कि तुम हज़ार साल सो चुके,
जागो कि तुम हज़ार साल खो चुके,
जहान सब सजग-सचेत आज तो,
तुम्हीं रहो
पड़े हुए
न बेखबर।

उठा चुनौतियाँ मिलीं, जवाब दो,
कदीम कौम नस्ल का हिसाब दो,
उठो स्वराज्य के लिए खिराज दो,
उठो स्वदेश
के लिए
कसो कमर।

बढ़ो गनीम सामने खड़ा हुआ,
बढ़ो निशान जंग का गड़ा हुआ,
सुयश मिला कभी नहीं पड़ा हुआ,
मिटो मगर
लगे न दाग
देश पर।

मृत्यु से डरना क्यों? यह तो जीवन का सर्वोच्च साहसिक अभियान है। —चार्ल्स फ्राहमैन

माँ

बदरी नारायण सिनहा

चरण - धूल स्वर-मूल बने ।

गहन साधना वर्ष-वर्ष की
भाव-मनन-भाषोत्कर्ष की

जन संस्कृति अनुकूल बने ।
चरण - धूलि स्वर-मूल बने ॥

जर्जर, हत में शक्ति भरें जो
विचलित की आसक्ति हरें जो
तप से संचय अमृत करें जो

उनका सुरभित फूल बने ।
चरण-धूलि स्वर-मूल बने ॥

यदि परिस्थितियाँ अनुकूल न रहें तो भगवान को दोष न दो। अपना ही निरीक्षण करो। यदि जरा भी गहराई से सोचोगे तो तुम्हें स्वयं ही अपनी कठिनाइयों के कारण ज्ञात हो जायेंगे।

—एनन

बलबीरसिंह 'रंग'

हम आते हैं

ओ बहादुरो, रण के पथ पर तुम बढ़े चलो, हम आते हैं।
बहुत कठिन है काम तुम्हारा
लड़ना ही आराम तुम्हारा
आने वाली पीढ़ी, सदियों
सादर लेगी, नाम तुम्हारा
लिए तिरंगा, गौरव गिरि पर, चढ़े चलो हम आते हैं।
तुम बढ़े चलो हम आते हैं।
अपना रक्त नहीं है पानी
जागरूक जन जन की वाणी
प्राणों से अतिशय बढ़ कर है
प्यारी मातृ भूमि-कल्याणी
बलिदानों की यश-गाथाएँ, बढ़े चलो हम आते हैं।
तुम बढ़े चलो हम आते हैं।
शत्रु सफलता पा न सकेगा
तुम से आँख मिला न सकेगा
वीर-प्रसूता वसुन्धरा पर
आकर, जीवित जा न सकेगा
जब तक अंतिम हिन्दुस्तानी, लड़े चलो हम आते हैं।
ओ बहादुरो, रण के पथ पर तुम बढ़े चलो, हम आते हैं।
तुम बढ़े चलो हम आते हैं।

अब मैं गहन अंधकार में अग्रसर होकर अपनी अन्तिम यात्रा को चलने वाला हूँ। *—थामस हाब्स*

उठो जवानो

बाबूराम राठौर

उठो जवानो ! जाग उठो !! भू माँ ने तुम्हें पुकारा है।
तोड़ अहिंसा की दीवारें, दुश्मन ने ललकारा है।

हमने जिस भूले भटके राही को राह लगाया था।
अपना भ्रात समझ हमने सोते से जिसे जगाया था।
पाक इरादे जान इसे दुनिया में जगह दिलाई थी।
मृत्यु प्राय रोगी को हमने अमृत दवा पिलाई थी।
क्या समझा था कुटिल दुष्ट को नहीं दुष्टता छोड़ेगा।
धोखा देकर चढ़ सीमा पर दिये वचन को तोड़ेगा।
हम हैं शान्त अहिंसक पर अन्याय न हमें गवारा है।
तोड़ अहिंसा की दीवारें, दुश्मन ने ललकारा है।

जिनको अपना समझा वे भारत पर हमला बोल रहे।
छद्मवेष में नीच भेड़िये आज अकड़ कर डोल रहे।
पर मत समझो भारतवासी डर कर पीछे भागेंगे।
जूझ मरेंगे मातृभूमि हित उठ-उठ गोली दागेंगे।
ऐसा पानी भारत का अन्याय न कोई सह सकता।
अंग-अंग कट जाय देश हित आँसू कभी न बह सकता।
भू माँ पर संकट आने पर हमने सब कुछ वारा है।
तोड़ अहिंसा की दीवारें, दुश्मन ने ललकारा है।

ईश्वर ने ही जीवन दिया था, ईश्वर ने ही जीवन ले लिया। धन्य है वह ईश्वर !

—बाइबिल

सावधान होले

बाबूलाल दुबे निषङ्ग

अग्रणी रही हमारे शान्ति
जगत में फैलाता तू भ्रांति
विश्व में होगी इससे क्रांति
पड़ेंगे तुझ पर भी गोले,
दुष्ट तू सावधान हो ले।

नहीं इसमें तेरा कल्याण
आज भी कहना मेरा मान
छिपानी होगी मुश्किल जान
बने हैं अब भी हम भोले
दुष्ट तू सावधान हो ले।

नहीं फिर समय लगेगा हाथ
न देगा कोई तेरा साथ
विवश हो थामेगा निज माथ
गिरेंगे जब तुझ पर शोले,
दुष्ट तू सावधान हो ले।

अतः मत व्यर्थ करे तकरार
अन्यथा होगी भारी हार
भाग जा सीमा के उस पार
कपट का अन्तर्मन घोले,
दुष्ट तू सावधान हो ले।

जरा सी निद्रा, जरा सी खुमारी और निद्रा के उपक्रम में अंगों का संकोचन यही मृत्यु है। —*बाइबिल*

उठो वतन के वास्ते

बालकृष्ण मिश्र

उठो वतन के वास्ते
उठो वतन के वास्ते

शिखर शिखर पुकारता
सिन्धु है दहाड़ता,
डिगी समाधि शम्भु की
त्रिशूल रक्त माँगता।

सुमन की सेज त्याग कर
जगो वतन के वास्ते।

बांह जब समर्थ है,
खण्डता अनर्थ है,
जो देश के न काम आ—
सके वह जन्म व्यर्थ है।

अखण्डता को दूर कर,
वरो अजेय रास्ते।

सजाओ आज आरती
माँ खड़ी निहारती,
काश्मीर केश को
संवारना है चाहती।

प्रलय का राग छेड़कर,
उठो नमन के वास्ते।

मृत्यु से अधिक सुन्दर और कोई घटना नहीं हो सकती।
—वाल्ट ह्विटमैन

बालस्वरूप 'राही'

हो जाओ तैयार

हो जाओ तैयार साथियो, हो जाओ तैयार !
अर्पित कर दो तन-मन-धन,
माँग रहा बलिदान वतन,
काम न आया अगर देश के तो जीवन बेकार !
साथियो, हो जाओ तैयार !!

तूफानी गति रुके नहीं,
शीश कटे पर झुके नहीं,
तने हुए माथों के सम्मुख, ठहर न पाती हार !
साथियो हो जाओ तैयार !!

सुस्ताने का समय गया,
उठो, लिखो इतिहास नया
वंशी फेंक उठा लो अपने हाथों में तलवार !
साथियो, हो जाओ तैयार !!

काँप उठे धरती अम्बर,
और उठाओ ऊँचा स्वर,
कोटि-कोटि कंठों से गूँजे भारत का जयकार !
साथियो, हो जाओ तैयार !!

जो एक से अधिक बार जीवित रहता है उसे एक से अधिक बार मृत्यु का ग्रास भी होना पड़ेगा। —वाइल्ड

आक्रमण उलट दो

बालाप्रसाद 'बाला जी'

उठो बहादुरो उठो जगो जवान देश के।
तान दो विशाल वक्ष कक्ष पर स्वदेश के।

फोड़ दो निशाचरों की आँख पांख तोड़ दो।
खींच लो समूल हीन नासिका मरोड़ दो।
"छीन लो जमीन पाक है जिसे हड़प रहा।"
आन पर 'प्रधान' हिन्द सिंह सा तड़प रहा।

उठो बहादुरो उठो जगो जवान देश के।
तान दो विशाल वक्ष कक्ष पर स्वदेश के।

भंग कीं अनेक बार पंचशील संधियाँ।
सह चुके हजार बार शत्रु की अनीतियाँ।
बढ़ो जवान देश के बढ़ो सशक्त देवियाँ।
बीन बीन फेंक दो पाक की ये चींटियाँ।

उठो बहादुरो उठो जगो जवान देश के।
तान दो विशाल वक्ष कक्ष पर स्वदेश के।

खोल दो अनन्त कोष देश के कुबेर हे।
बन उठे स्वदेश शक्ति शस्त्र का सुमेर हे।
अखण्ड हिन्द की ज़मीं, अखण्ड हिन्द शान है।
निशंक हिन्द नौजवां, प्रचण्ड स्वाभिमान है।

उठो बहादुरो उठो जगो जवान देश के।
तान दो विशाल वक्ष आन पर स्वदेश के।

भूमि मेरी माता है। मैं पृथ्वी पुत्र हूँ।

— अथर्ववेद

उठो सपूत देश के

ब्रजभूषण सिंह आदर्श

उठो सपूत देश के महान् तेजवान हो,
कि मातृभूमि के तुम्हीं अजेय शक्तिमान हो।
है शत्रु आज छा गया हिमालया कगार पर,
कि उससे जूझने की अर्चना हो द्वार-द्वार पर,

उठो सम्हाल शस्त्र लो मित्र शत्रु है बना,
कि कौंध वक्ष रौंध दो घमंड से जो है तना।
जिन्दगी अमर वही जो काम आये देश के,
धन वही है सार्थक जो लग सके स्वदेश के

लाल खून तो वही जो राष्ट्र के लिये अड़े,
कि अंधकार में प्रकाश की किरण सा चल पड़े,
तो आज है पुकारती, भारती ले आरती,
दुश्मनों को दो भगा, स्वतन्त्रता पुकारती।

उठो कि अस्त्र-शस्त्र ले. देश के लिये चलो,
कि पास जिसके जो भी हो, देश पर लुटा चलो,
बढ़े चलो जवान तुम, बढ़ के रक्तदान दो,
कि जुट पड़ो कृषक मजूर श्रम के पग पखार लो,

कि एक साथ सब बढ़ो एक राष्ट्र के लिए,
कि एक साथ सब बढ़ो, एक लक्ष्य के लिए।

मृत्यु के कुछ समय पूर्व स्मृति बहुत साफ हो जाती है। जन्म भर की घटनायें एक एक करके सामने आती हैं। सारे दृश्यों के रंग साफ होते हैं। समय की धुन्ध बिल्कुल उन पर से हट जाती है।

—गुलेरी

ध्वंस दूत से

ब्रह्मसिंह भदौरिया

दे रहा चिनौती आज ध्वंस के दूतों को
कह देना जाकर के कोई हत्यारों से
हम आज सिंह बनकर आये हिम शिखरों पर
करने को आलिंगन उनके हथियारों से ।

तुम यदि विनाश के दूत मृत्यु के भाई हो
सर्जना हमारी बहिन मृत्यु का दूल्हा हूँ
कर्तव्य और आदर्श हमारी डोरी है
बाधाओं की घाटी में पड़ा हिंडोला हूं ।

तुम यदि मायावी जाल बिछाने आये हो
क्षण में मैं उसे तोड़ने में पारांगत हूं
तुम यदि विनाश के बीस हाथ दस शीशधीय
मैं पंचशील का दूत, क्रान्ति का अंगद हूँ

घबड़ाओ मत हम युद्ध अहिंसा के बल
प्रति हिंसा की ज्वाला को खेद बहायेंगे
राहों में खड़ी किले बन्दी विनाश की तोड़-तोड़
पतझर को पीछे रोक बहारें लायेंगे ।

फिर देख सकूँगा जीत कि किसकी होती है
विध्वंसों की या "शान्ति पुजारी" के बल की
जिसके आगे पशुता भी शीश झुकाती है
सामने खड़ी थर्राती है प्रतिमा छलकी ।

जीवन में प्रथम हमारी प्रसन्नता नष्ट होती है और तब हमारी आशा, भय भी चले जाते हैं । इनके समाप्त होते ही धरा अपना ऋण माँगती है और हम भी चिर निद्रा में लीन हो जाते हैं ।

—शैली

भँवर जी हाड़ा

घड़ी नहीं मनुहारों की

त्याग सुमन-शृंगार, प्यार, सुख, साज सजाओ तुम रण के।
भूलो, राग, रङ्ग इठलाना, गाओ गीत शहीदों के।

छोड़ परस्पर द्वेष, दम्भ, मिल,
सभी शत्रु को ललकारो;
फोड़ सुराही आज सुरा की,
तलवारों पर धार करो।

पायल की रुन-झुन सुनना भी, पिया! आज अभिशाप है......

प्रीत-मीत के मस्त हिंडोले,
प्राण? आज तुम मत भूलो।
रिपु के तप्त, लाल शोणित से,
रण में जा होली खेलो।

मत उलझो अलकों-पलकों में रूप के नगर में मत भटको,
काटो शीश शत्रुओं के चण्डी सम रण में भड़को।
मेंहदी रचे हाथों को छूना पिया! आज अपराध है......।

मातृ-भूमि पर विपदा आई
अति व्यथित है भारती,
समरांगण में गमन करो
मैं करूँ हर्ष से आरती।

बड़े भाग्य से अवसर आया इसको प्रियतम! मत छोड़ो,
देश, धर्महित बलि होने में, आज नहीं मुखड़ा मोड़ो।
यदि नहीं लड़ने जाओ तो पिया! तुम्हें धिक्कार है......।

हमें केवल भय से ही भयभीत होना चाहिये।

—रूजवेल्ट

घर घर में धौंसे धमक उठें

भगवती चरण निर्मोही

●

जब बैठे थे हम शान्त मौन, तब अकस्मात छिड़ गया युद्ध,
सीमा के प्रहरी जाग उठे, हुंकार कर उठे महाक्रुद्ध,
सिंह की गुफा पर लपक पड़ा, लो देखो वह पाकी-सियार,
ललचाई आँखों को लेकर, टप टप से टपका रहा लार।

हो गया विश्व भी स्तब्ध देख, इस महाधूर्त की कुटिल चाल,
ले आया जिसको खींच खींच, भारत के सम्मुख महाकाल,
अपना समझे थे हम जिसको, वह निकला कितना महानीच,
जिसको समझे थे पाक-साफ, वह निकला कितना घृणित कीच।

संकट का अवसर आ पहुंचा है, ओ भारत के नौजवान,
भारत माता रणचण्डी बनकर, माँग रही है रक्तदान,
किलकार उठी काली किलकिल, खप्पर लेकर चल पड़ी आज,
पाकी-उलूक पर झपट पड़ी, झपसे बन करके क्रुद्ध बाज।

ललकार रहे तुझको दानव, ओ शक्तिमान भारत सपूत,
करना ही होगा आज नष्ट, यह क्रूर दुःखदायी कपूत,
ओ भीम वृकोदर! उठा गदा तू आज बजादे पौंड्रदध्म,
बहरी हो जाये रिपु सेना, मिट जाये उसका वेष छद्म।

ओ शिव! अब तू तजदे समाधि, यह सती हो रही भस्म आज,
पैदा करदे अब वीरभद्र, रह जाये तेरी अरे लाज,
नरसिंह! नखों से दैत्यों की, आँतों को तू दे चीर फाड़,
पाकी शोणित से बुझा प्यास, फैला करके विकराल दाढ़।

जिस समय हम समझते हैं कि हम नेतृत्व कर रहे हैं, उस समय प्रायः हम स्वयं दूसरे के नेतृत्व में होते हैं।

—बायरन

भगवान सिंह सेंगर

युद्ध-चुनौती

खौल उठा है खून हिन्द का, जन-जन यह नारा है।
सावधान हो पाक लुटेरो, यह कश्मीर हमारा है :
सीमा पर ये जंगी शोले, तूने ही भड़काया,
गाँधी के इस पुन्य धरा पर, तूने बम बरसाया।
काश्मीर के हरित चमन पर, बरबस आग लगाकार,
पाक-सियारो ! तूने नाहक, शेरों से टकराया।
तुम्हें समूल नष्ट कर देंगे, यह संकल्प हमारा है।
यदि हरकत से बाज न आया, करता रहा लड़ाई,
तो फिर हिंसा कर बैठेंगे, गौतम के अनुआई
अब न चलेगी चाल तुम्हारी, कायर पाक लुटेरो—
तेरे दर्प-दमन के खातिर, हमने अलख जगाई।
सच्चाई पर चलने वाला कभी न रण में हारा है।
लुट जायेगा रावलपिंडी, मत कर हिन्द से रारी,
कर देंगे शमशान करांची, है यह टेक हमारी।
सैन्य-भीख क्यों माँग रहा है, दर दर बना भिखारी,
कर दे आकर आत्म-समर्पण, यदि नहीं शक्ति तुम्हारी।
तेरा युद्ध-सहायक भी अब, भारी शत्रु हमारा है।
किस ताकत के बल पर भूला, तू कायर अभिमानी,
बलिवेदी पर चढ़ने वाले, हम हैं हिन्दुस्तानी।
लड़ न सकेंगे हम शेरों से, गीदड़ सैनिक तेरे,
बिना मौत ही मर जायेंगे, निर्बल पाकिस्तानी।
कायरता के उन पुतलों को, तूने व्यर्थ जुझारा है।

भय सदैव अज्ञानता से उत्पन्न होता है। — इमर्सन

करोड़ों प्राण न्यौछावर

भवानी शंकर

तिरंगा है हमारी साधना का घर।
तिरंगे पर करोड़ों प्राण न्यौछावर।
कि हम आज़ाद हैं झंडा उड़ाते हैं,
मगन होकर खुशी के गीत गाते हैं,
कठिन तप से मिला है देश यह प्यारा,
इसे हम जान से अपनी लगाते हैं,
न हो विश्वास देखो आजमाने पर।
तिरंगे पर करोड़ों प्राण न्यौछावर।
यहाँ पर प्यार की बरसात होती है,
सुनहरे दिन सुहानी रात होती है,
हमारा देश गौतम राम गाँधी का,
सच्चाई की यहाँ हर बात होती है,
असम्भव झूठ का चढ़ना सच्चाई पर।
तिरंगे पर करोड़ों प्राण न्यौछावर।
नहीं हम व्यर्थ की बातें बनाते हैं,
नहीं हम बल किसी से आजमाते हैं,
हमारे देश पर जब गोलियाँ चलतीं,
विवश हो हम तभी तोपें उठाते हैं,
महकते फूल भी हम हैं विषैले शर।
तिरंगे पर करोड़ों प्राण न्यौछावर।

यदि नेत्रहीन व्यक्ति का नेतृत्व करने वाला भी नेत्रहीन हो तो दोनों कूप में गिर पड़ेंगे। —बाइबिल

मदनमोहन 'उपेन्द्र'

विंध्याचल हुँकार रहा

मूक शिखर की चट्टानों में देवासुर संग्राम हो रहा,
भारत का हर वीर सिपाही आज नया इतिहास लिख रहा।
धधक उठी है धरा कांप आकाश रहा है,
विन्ध्याचल सतपुड़ा अर्वली देख-देख हुँकार रहा है।
गंगा जमुना ब्रह्मपुत्र की धारायें लेतीं उफान हैं—
बुन्देला मेवाड़ मराठा जयकारों से गूँज रहा है।
ताण्डवकारी शंकर का कैलाश आज फुफकार भर रहा।

मदमाता यौवन गर्जन तर्जन करता है,
माँ बहिनों को आज दुलार नहीं भाता है।
ओढ़ - ओढ़ कर कफन शीश पर राष्ट्र प्रेम में—
युवक युद्ध के बाने में ही मुस्काता है।
छोड़ परस्पर द्वेष भाव को बन्धु-बन्धु सहयोग कर रहा।

आज नहीं होली दीवाली दशहरे की खुशी हमें है,
ईद मुहर्रम कब होता है यह तक याद नहीं है।
बस है होंस हुँमस हमको बलिवेदी पर मिट जाने की,
किसका मेला और झमेला जबकि राष्ट्र ही संकट में है।
कोटि-कोटि जन-जन के मुख से सत्यमेव का घोष हो रहा।

सामग्री द्वारा नहीं अपितु नैतिकता के बल द्वारा ही मनुष्यों और उनके कर्मों पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है।

—कार्लाइल

उठो जवानो

मदनमोहन शुक्ल 'मधुर'

उठो जवानो, उठो जवानो माँ ने आज पुकारा है।
अब दुश्मन को मार भगाना ही कर्तव्य हमारा है।
सर से कफन बाँध कर निकले हैं हम सब टकराने को,
इंच इंच भारत की भू पर अपना लहू बहाने को,
कोटि चवालिस हम मिल करके अपने कदम बढ़ायेंगे,
भारत माँ के चरणों में प्राणों के सुमन चढ़ायेंगे,
गौरी शंकर की चोटी से यह किसने ललकारा है।
अब दुश्मन को मार भगाना ही कर्तव्य हमारा है।
गंगा यमुना का पानी अब खौल खौल उफनाता है,
भारत के हर वीर सिपाही को यह कसम दिलाता है,
रण चण्डी के खाली खप्पर को फिर से भरना होगा,
दुष्ट चीनियों के मुण्डों को काट काट धरना होगा,
चीनी मनुजों को तराश दो यही हमारा नारा है।
अब दुश्मन को मार भगाना ही कर्तव्य हमारा है।
जिस धरती पर जन्म लिया औ' पिया जहां का पानी है,
आज उसी के चप्पे चप्पे पर करना कुर्बानी है,
भेद भाव को आज भुलाकर हमको ज्योति जगानी है,
हिन्दू - मुस्लिम, सिख - ईसाई केवल हिन्दुस्तानी है,
एक हमारे मन्दिर मस्जिद एक वही गुरुद्वारा है।
अब दुश्मन को मार भगाना ही कर्तव्य हमारा है।

जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। —*वाल्मीक*

मदनमोहन श्रीवास्तव

आह्वान

उठो जवान देश के, पुकार तुम्हारी हुई।
कदम - कदम पहाड़ है,
कदम - कदम तुषार है,
कदम-कदम पै दुश्मनों—
की होलियाँ हजार हैं।
बढ़े चलो, कि देख शत्रु को लगे छुई-मुई,
उठो जवान देश के, पुकार तुम्हारी हुई।
डिगो नहीं बढ़े चलो,
पहाड़ पर चढ़े चलो,
सदा ज्वलित मशाल ले—
प्रयाण पथ गढ़े चलो।
कि छेड़ ध्वंश-राग, जले शत्रु जिस तरह रुई,
उठो जवान देश के, पुकार तुम्हारी हुई।
न मृत्यु से कभी डरो,
कि रक्त दो विजय वरो,
बढ़ो स्वदेश के लिए—
कि हिन्द की व्यथा हरो।
कि शत्रु चले भाग, मंत्र छोड़ एक जादुई,
उठो जवान देश के, पुकार तुम्हारी हुई।

क्रांतियाँ की नहीं जातीं, वे होती हैं। —वैन्डेल फिलिप

निडर बढ़ो

मलखान सिंह 'सिसौदिया'

सुनील आसमान है हरीभरी धरा,
रजत भरी निशीथिनी, दिवस कनक भरा,
खुली हुई जहान की किताब है पढ़ो,
बढ़ो बहादुरो, कदम मिला चलो बढ़ो।

चुनौतियाँ सदर्प वर्तमान दे रहा,
भविष्य अन्ध सिन्धु बीच नाव खे रहा,
भिड़ो पहाड़ से अलंघ्य शृंग पर चढ़ो,
विकृत स्वदेश का स्वरूप फिर नया गढ़ो।

विवेक, कर्म, श्रम-मिज्योति-दीप को जला,
प्रमाद, बुज़दिली, विषाद हिम-शिला गला,
अजेय बालवीर ले शपथ निडर बढ़ो,
सुकीर्ति-दीप्ति से स्वदेश भाल को मढ़ो।

समाज-व्यक्ति, राष्ट्र-विश्व, शृंखला मिला,
अशेष भ्रातृभाव शत कमल-विपिन खिला,
अटूट प्रेम-सेतु बाँधते हुए बढ़ो,
अखण्ड ऐक्य-केतु गाड़ते हुए बढ़ो।

मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं, अपितु परिस्थितियां मनुष्य की दासी हैं।
—डिजरायली

महावीर 'सिंहल'

हथियार संभालो रे

सोने वालो जागो रे
उठ हथियार संभालो रे

जागो सोने वालो तुमको जगा रहा सतलज का पानी,
अमृतसर के मन्दिर से हुंकार उठ रही पहचानी;
बप्पारावल गर्जन करता उठा-उठाकर भुजा पुरानी,
माँग रही माँ आज तुम्हारी तुमसे अपनी ही कुर्बानी।

वीरों अब तो जागो रे
दुश्मन को ललकारो रे

जिसको तुमने माना अपना भाई वह बढ़ आया है,
मस्तक आज झुकाने उसने फिर से हाथ बढ़ाया है;
कुम्भकरण तुझको वह समझा कैसा अत्याचारी है,
और द्वारका आज पुण्य तीर्थ को उसने ठोकर मारी है।

निद्रा छोड़ो जागो रे
अपने को पहचानो रे

है सौगन्ध तुम्हें कण - कण की जो तुम सोते आज रहो,
है सौगन्ध तुम्हें ममता की जो तुम माँ का दुःख सहो;
केसरिया कपड़े रंगवालो दुश्मन भाग न पाये रे,
जो घुस आया घर में वह फिर जिन्दा लौट न पाये रे।

एक बार जो जागो रे
दुश्मन देखो भागो रे

अपने पापों पर परदा डालना अपने भविष्य पर परदा डालना है।

—अनाम

उठो धरा पुकारती

महेश चन्द्र 'सरल'

उठो ! धरा पुकारती,
चलो संवार आरती,
जगो, स्वदेश के लिये,
बढ़ो प्रसून भारती।
कि आ गई परीक्षा, कि युद्ध पर्व आ गया,
कि जागरण मुखर उठा, कि रक्त पर्व आ गया।
चलो, पहाड़ तोड़ दो,
नयी डगर को मोड़ दो,
उठे जो हाथ देश पर,
उसे वहीं मरोड़ दो।
तुम्हें शपथ स्वराष्ट्र की, पुनीत कार्य आ गया,
झुके न राष्ट्र ध्वज कहीं, अपूर्व शौर्य छा गया।
बढ़ो कि शत्रु ध्वस्त हो,
लड़ो कि शत्रु पस्त हो,
समर जो छेड़ने चला,
उसी का सूर्य अस्त हो।
अजेय तुम रहे सदा, सुयश महान आ गया।
झुके न तुम इसीलिये, विजय विहान आ गया।

पाप से घृणा करो, पापी से नहीं।

—म॰ गांधी

माखनलाल 'चतुर्वेदी'

क्या झुक जायें हाथ पसारे

भरत - खण्ड, क्या सुनते हो तुम
आज हिमालय की मनुहारें
सिर वाले बलिपन्थी भी हम
क्या झुक जाएँ, हाथ पसारें ?

चलो उठो अब, प्रलय - रागिनी
गा दें सागर को दहला दें,
आज चीन को भारत से—
भिड़ने का थोड़ा मजा चखा दें !

हिमगिरि मुकुट कहाता अपना
अरे मुकुट पर वार सहोगे ?
गङ्गा - जमुना माँग रही है
बलियाँ, क्या इनकार करोगे ?

जो पाप में फँस जाता है, मानव है; जो उस पर खेद प्रकट करता है, देवता है; जो उस पर घमंड करता है, दानव है।

—थामस फुलर

जागो वीर जवानो रे

मूलचन्द्र 'श्वेतांशु'

जागो वीर जवानो रे,
भारत की संतानो रे।
भारत मात पुकारती, है तुमको हुँकारती,
भारत के सोये सिंहों के पौरुष को ललकारती।
सजा मात की आरती,
बोलो सब जय भारती,
निज पौरुष को याद करो और अपना सीना तानो रे।
जागो वीर जवानो रे।
दुश्मन सर पर आया है, भारत पर मडराया है,
गौतम, गाँधी की भूमि पर तलवारों का साया है,
रण का बिगुल बजाया है,
गान विप्लवी गाया है,
रह न जाये शत्रु देश में कौना कौना छानो रे।
जागो वीर जवानो रे।
वेला ये बलिदानी है, फिर क्यों आनाकानी है
निज शीशों से आजादी की कीमत हमें चुकानी है
घर-घर अलख जगाती है
माँ की लाज बचानी है
समर भूमि में विजय मिलेगी ये ही दिल में ठानो रे।
जागो वीर जवानो रे।

प्रसन्नता ही स्वास्थ्य है। इसके विपरीत मलिनता ही रोग है।
—हैली बर्टन

हाथों में संगीन उठाओ

मोहन 'भारतीय'

उठो जवानों ! समय आ गया, हाथों में संगीन उठाओ ।
राणा के तीखे भालों की, फिर दुश्मन को याद दिलाओ ।

एक पड़ौसी रावण बन कर,
लक्ष्मण रेखा लाँघ रहा है ।
दानवता से, मानवता की—
सीमाओं को बाँध रहा है ।

सीता पर जो आँख उठी है, उसको मृत्यु तक पहुँचाओ ।
लंका वाला युद्ध छेड़ दो, फिर से रामायण दुहराओ ।

काश्मीर की द्रोपदी का—
केसरिया आँचल हथियाने ।
एक बार का हारा कौरव—
आया है शक्ति अजमाने ।

पंचाली पर हाथ उठा है, भीम आज संकल्प निभाओ ।
एक बार फिर महाभारत का, केवल अंतिम दृश्य दिखाओ ।

गंगा यमुना की इस पावन,
धरती के ओ पहरेदारो ।
पहिन केसरी बाना दुश्मन—
की छाती पर पाँव पसारो ।

तुम शंकर हो, तुम प्रलयंकर, ताण्डव की झंकार सुनाओ ।
महाकाल बन जाओ, शत्रु के मुण्डों की जयमाल सजाओ ।

यदि तुम प्रसन्नता की कामना करो तो प्रसन्नता तुमसे दूर भाग जायेगी और यदि तुम प्रसन्नता से दूर भागोगे, तो प्रसन्नता तुम्हारा अनुसरण करेगी ।

—हेवुड

आह्वान

'रंगेश'

●

हिमालय तुङ्ग पर अपने जहाँ मोती चमकते हैं,
धवल शुचि खण्ड मलयागिरि जहाँ चन्दन महकते हैं।
अभी तो हिन्द की तलवार में वह ओज, पानी है,
जिसे चखकर सिकन्दर ने हमारी धाक मानी है।

छियालिस कोटि हिन्दी शूल पर जब भूल जायेंगे,
हिमालय, गंग, यमुना को तभी हम भूल पायेंगे।
यहाँ पर कह रहे लवकुश असुर संहार कर देंगे,
अगर यमराज भी आयें, हिमालय पार कर देंगे।

अभी तो देश की रज को तुम्हें मस्तक चढ़ाना है,
अभी तो पूर्वजों की कब्र पर दीपक जलाना है।
अभी तो पूर्वजों की कीर्तियों को प्यार करना है,
अभी इस पुण्य धरती का तुम्हें शृंगार करना है।

अभी स्वाधीन भारत का तुम्हें त्यौहार करना है,
अभी ओ राष्ट्र वलिपंथी, सभी व्योहार करना है।
हटा देंगे न अपनी भूमि से अरिओं को हम जब तक,
न लेंगे चैन जीवन में, हटेंगे भी नहीं तब तक।

उठो अभिमन्युओ ! सत्वर चढ़ाओ रक्त चण्डी को।
कुचल दो आज पैरों से नए दम्भी शिखण्डी को।

जो प्रसन्नता से प्रेम करता है, वह अवश्य ही एक निर्धन व्यक्ति बनेगा।

—लोकोक्ति

नमन

रघुनाथ प्रसाद 'विकल'

मैं नहीं नमन करता हूँ देव-पुजारी को।
मैं नहीं नमन करता हूँ सत्ताधारी को।
पर, चरणारोप जो निर्भय रण में बढ़ते हैं।
संकट का कर गहने के लिये मचलते हैं।
निज मातृभूमि की रक्षा के हित आतुर जो,
शतवार नमन है - वैसे वीर बहादुर को।

× × ×

रग-रग में तेरे उमग रही तरुणाई है,
तुम यशःकाय लौटो, यह सुखद विदाई है।
ओ वत्स! ठीक मैं ही, तुम क्रान्ति पुजारी हो!
यह अंशदान तेरा, मुद-मंगलकारी हो।

एक बुद्धिमान पुरुष की प्रशंसा उसकी अनुपस्थिति में कीजिए किन्तु सभी की प्रशंसा उसके मुख पर। —जेनोफोन

माँ जन्म भूमि

रघुनाथ प्रसाद शास्त्री 'साधक'

माँ - जन्म - भूमि तेरी; सेवा करूँगा जीते ।
तू दुःख पा रही थी, शत वर्ष कल्प बीते ।
माँ जन्म भूमि तेरी...।

बीते अनेक युग हैं, बन्दी हुई दुखी थी ।
दश मुख विदेशियों से, अब मुक्त मातृ सीते ।
माँ जन्म भूमि तेरी...।

माता न शोक कर तू, दुःख से स्वतन्त्र अब हो ।
निधि कोष सब भरूँगा, जो हो गये हैं रीते ।
माँ जन्म भूमि तेरी...।

वञ्चक गये लुटेरे, आघात भी किया है ।
पर अब न त्रास होगा, भयभीत हो न भीते ।
माँ जन्म भूमि तेरी...।

सुख का प्रभात आया, ले देख रश्मियों को ।
स्वागत बिछा रही है, "श्रद्धा" हुलास हीते ।
माँ जन्म भूमि तेरी...।

जनता के लिए, जनता के द्वारा संचालित, जनता की ही शासन प्रणाली का नाम प्रजातंत्र है । —लिंकन

रघुनाथ 'प्रियदर्शी'

करवट बदली

मौसम ने करवट बदली है।
सिंह - हिमालय की चोटी पर, बर्फों की परतों के नीचे,
उसके बेटे जो सोए थे, सुख से अपनी आँखें मीचे।
आज किसी ने उसे छेड़कर, उनकी नींद भुला डाली है।
मौसम ने करवट बदली है।

सब के मन पर राष्ट्र-प्रेम के, उमड़-घुमड़ कर बादल छाए,
बिजली बनकर आज गिरेंगे, जो चाहे सम्मुख आ जाए।
रक्त नीर बरसेगा छम-छम, शपथ घटा उस काली की है।
मौसम ने करवट बदली है।

खड़े ताज काँटों का पहने, देश बाग के फूल सिपाही,
केसर-तिलक सजे मस्तक पर, भंवरों ने रणभेरी गाई।
कली-कली अधखुली आँख में, लिए खड़ी मद की प्याली है।
मौसम ने करवट बदली है।

उधर बनी थी चीनी खारी, इधर पाक नापाक हुआ है,
जो शंकर भोला भाला था, वही प्रलय की आग हुआ है।
वीर जवाहर की शक्ति अब, लालबहादुर ने पा ली है।
मौसम ने अंगड़ाई ली है।

बुद्धिमान मनुष्य मूर्खों से जितनी शिक्षा प्राप्त करते हैं उतनी मूर्ख बुद्धिमानों से नहीं। —केरो

उठो ऐ जवानो

रजनीश 'मिश्र'

उठो ऐ जवानों बढ़ो तान सीना,
वतन पर कहीं आँच आने न पाये।
तिरंगे पे छायीं दुरंगी घटायें,
कि बिजली कहीं गिर के जाने न पाये।

अजन्ता, एलौरा की चीखीं गुफायें,
कुतुब, ताज भी आज देते सदायें।
किला आज झाँसी का ललकारता है,
दहक उठी फिर से शहीदी चिताये।

चढ़ेंगे समर पर कफन बाँध सिर पर,
'शहीदों' का यह मान जाने न पाये।

अमन के पुजारी रहे हम सदा से,
मगर दुश्मनों का दमन जानते हैं।
अमन के दरिन्दों से मैं कह रहा हूँ,
तुम्हारे इरादों को हम जानते हैं।

पहरूओ ! हमेशा यह तुम ध्यान रखना।
दरिन्दा कोई बच के जाने न पाये।

जो दुश्मन की आँखें उठी हैं इधर को,
तो तुम बनके शोले पुतलियाँ जलादो।
कदम जो बढ़े हैं भारत धरा पर,
उन्हें काट कर छोटा छोटा बना दो।

हमारी सुरक्षा हमारे करों में,
जवाहर की यह शान जाने न पाये।

वह मनुष्य परम सुखी है जिसे सुबुद्धि प्राप्त है और जिसके पास विवेक है।
—बायबिल

रफत 'अधीर'

जागरूक रहना

मेरे देश के सिपाही ! प्यारे देश के सिपाही !
आज हिमालय ने तुमको आवाज दी है
जागरूक रहना मेरे देश के सिपाही !
प्यारे देश के सिपाही ।

आज समय है उत्पादन निर्माण का
आज समय है प्राणों के बलिदान का
उठा हमारी सीमाओं पर कोलाहल
मची हुई है आज देश में उथल पुथल
आज किसी ने फिर से खूनी आँख उठाई है
जागरूक रहना मेरे देश के सिपाही
प्यारे देश के सिपाही ।

युद्ध भूमि में मिटजाने की बात है
तुम न अकेले देश तुम्हारे साथ है
साथ तुम्हारे माँ बहनों का प्यार है
और शास्त्री जैसा पहरेदार है
भारत माँ की ओर घूरने वाले को ललकारना,
मेरे वीर सिपाही रण में तुम न हिम्मत हारना ।
शान्तिघाट और राजघाट की धरती अब अकुलाई है
जागरूक रहना मेरे देश के सिपाही ।
प्यारे देश के सिपाही ।

ज्ञान तो अध्ययन द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु बुद्धि तो महान् अनुभवों के बीच ही उत्पन्न होती है ।

—निर्मला हरबंससिंह

दुश्मन ने ललकारा है

रमेश चन्द्र 'गुप्त'

●

बढ़े चलो तुम, बढ़े चलो तुम, दुश्मन ने ललकारा है,
कह दो भारत के कण-कण पर, बस अधिकार हमारा है।
घूँघट की लुक-छिप घातों को, बन्द नहीं होने देंगे,
पायल की रुनझुन-रुनझुन को अभी नही सोने देंगे।

फूल-फूल की रक्षा करना, यही हमारा धर्म है,
कली-कली को फूल बनाना, यही हमारा कर्म है।
सरसों के पीले खेतों पर खूनी हाथ बढ़ाया है,
भारत की उन्नत छाती पर इतना क्यों ललचाया है।

मलयानिल की श्वेत चूनरी अभी नहीं फटने देंगे,
कोयल के पंचम स्वर को बेहोश नहीं होने देंगे।
अपनी चादर में ही सो जा, वरना फिर पछतायेगा,
बुरी निगाहों से देखा तो अभी भस्म हो जाएगा।

बड़े-बड़े यत्नों से हमने अपना बाग सँवारा है,
गली-गली में चाँद उगा है, कदम-कदम पर खुशहाली।
एक चहकती दुनियाँ है ये, यहां महकती हर डाली,
नदियों की कल-कल में हम बारूद नहीं मिलने देंगे।

अपनी माँ के अरमानों पर कफन नहीं पड़ने देंगे,
एक कदम भी और रखा तो काम-दहन हो जाएगा।
शंकर का तीसरा नेत्र ज्वालाओं से भर जाएगा,
यही सुनाता जाता नदिया का हर कूल, किनारा है।

बुराई क्या है ?—जो कुछ दुर्बलता से उत्पन्न होती है।

—नीत्शे

उड़ा तिरंगा

रमेश शर्मा 'एकाकी'

उड़ा तिरंगा नील गगन में,
कर चण्डी का आवाहन !
आज स्वत्त्व-हित मिला वीरता–
दिखलाने का नव-मधु-क्षण !!

उठो जवानों बढ़ो बोलते,
जय जय जय भारत माँ की !
और दुश्मनों को दिखलादो,
अपने भुज बल की झाँकी,

संकट में हैं प्राण मुक्ति के,
करो उचित प्रतिकार प्रयत !
और करो क्या जबकि शत्रु ने,
स्वयं बुलाई है शामत !!

बढ़ो हिलादो चीनी ढाँचा,
'चाऊ' का हर आडम्बर !
ढूँढे से न मिले 'माओ को,
प्राण बचाने का अवसर !!

साथ तुम्हारा देगी जनता,
बढ़ो तानकर सीने को !
बच्चा-बच्चा उत्तेजित है,
रक्त शत्रु का पीने को !!

हमारा उद्देश्य संसार के प्रति भलाई करना है, अपने गुणों का गान करना नहीं। —विवेकानन्द

उठो........

रवीन्द्र कुमार 'श्रीवास्तव'

उठो वतन के रखवालो ।
अब अपने हथियार सम्हालो ।
धरती पर फैला अंधियारा,
तुम्हें उगाना है उजियारा,
लोकतन्त्र के लिये जवानों;
काम आये बलिदान तुम्हारा ।
अपने को कुछ ऐसा बदलो ।
उठो वतन के रखवालो ।
उधर चले गीमा पर गोली,
और मने बारूदी होली,
तब तुम ऐसा फूँको शंख;
च जाये शत्रु पर टोली ।
हाथों में बन्दूक उठालो ।
उठो वतन के रखवालो ।
हर इंच भूमि बनी रहे,
संगीन शत्रु पर तनी रहे,
जिसने शेरों को जगा दिया;
अब उससे लड़ाई ठनीं रहे ।
दुश्मन से कश्मीर छुड़ालो ।
उठो वतन के रखवालो ।

यदि मनुष्य केवल यही समझ पाते कि भलाई करने के अतिरिक्त सुरक्षा का अन्य कोई उपाय नहीं, तो वे कितने प्रसन्न होते !

— जाब फाउन्टेन

रहबर 'मंजौरवी'

बढ़ो रे जवानो बढ़ो रे

भारतीय चमन के सुरभित ओ फूलों,
जहाँ से न्यारा ये तेरा चमन है।
बापू, चन्द्रशेखर और वीर भगतसिंह ने
अपने तन के लहू से सींचा है जिसको
जहाँ की बहारें कदम चूमती हैं–
इस मुसीबत की घड़ियों में न भूलो उसको,
ऐ ! भारतीय चमन के सुरभित फूलों–
जहाँ से न्यारा कि तेरा चमन है।
इसी भारत की मिट्टी और जलवायु से ही,
निर्मित हुई तेरी सुन्दर ये काया,
है तेरे वतन को हड़पने को दुश्मन,
रंगीन चादर है उसने बिछायो,
लुट न जाये-लुट न जाये-लुट न जाये,
जहाँ से ये न्यारा तेरा वतन है।
बढ़ो रे जवानो बढ़ो रे जवानो।

जो व्यक्ति भलाई से प्रेरित होकर भलाई करता है, वह न तो प्रशंसा का आकांक्षी होता है, न पुरस्कार का; यद्यपि दोनों स्वतः ही उसे अन्त में प्राप्त हो जाते हैं। —*विलियम पेन*

रक्तदान दो

डा० राजकुमार पाण्डेय

•

रक्तदान दो, जवान रक्तदान दो।

यह समय नहीं है आज प्रेयसी के प्यार का।
यह समय नहीं है आज शबनमी-शृंगार का।
यह समय नहीं है आज मौन-मनुहार का,
यह समय नहीं है आज वाटिका-विहार का।

द्रोपदी खड़ी तुम्हारी आज केश-कर्षिता,
दस्यु की दगा पै आज लाज लोम-हर्षिता,
यह समय नहीं है आज व्यर्थ के विवाद का,
यह समय नहीं है आज वाद-प्रतिवाद का,
पुरु ने रची जो कभी पौरुष की पीठिका—
विश्व के समक्ष आज फिर वह प्रमान दो।
जवान रक्तदान दो।

नग्न ही रहेंगे हम फेंक अलंकार को,
क्या करोगी तुम भी लेके साज औ' शृंगार को,
कर्णफूल शूल हो लगेगा दस्यु - कंठ से—
चूड़ियाँ बनेंगी आज दुश्मनों को गोलियाँ,
जल उठेगी आग फिर सीमंत के सिन्दूर से—
बालियाँ बनेंगी आज प्रेयसी की बर्छियाँ,
इसलिए स्वदेश के स्वराष्ट्र के महाजनों !
स्वर्णदान दो महान स्वर्णदान दो।
रक्तदान दो जवान रक्तदान दो।

विश्व को महापुरुषों की परम अपेक्षा है। महापुरुषों के पुजारियों एवं खुशामदियों की नहीं। —*बीरजी*

राजमल 'पवैया'

नहीं दिया तो

छोटी मोटी हानि न हो यदि किसी युद्ध में,
मज़ा युद्ध में लड़ने का क्या खाक आएगा।
शत्रु अगर दुर्बल हो तिनके जैसा पतला,
मूल्य विजय का यह जग कैसे आँक पाएगा।

संघर्षों में चोट घाव यदि कहीं न आएँ,
जय का स्वाद बताओ तो कैसे आएगा।
रक्त दान धरती माता को नहीं दिया तो,
इतिहासों में नाम भला कैसे जाएगा।

छोटी मोटी हार हमारी जय की द्योतक,
लक्ष्मण को भी मेघनाथ की शक्ति लगी थी।
दूने साहस शक्ति शौर्य से तभी राम ने,
रावण को जीता था पाई विजय सभी थी।

कुरुक्षेत्र के मैदानों में पांडव दल ने,
खो अभिमन्यु हानि कितनी भीषण थी झेली।
किन्तु न खोया धैर्य प्रबल साहस के बल पर,
लड़े अन्त में विजय श्री की सुषमा लेली।

अलक्षेन्द्र को विपुल सैन्य के छल में फंस कर,
बन्दी होकर भी तो पुरु ने हार न मानी।
पृथ्वीराज ने नेत्रहीन हो शब्द भेद से,
वाण चलाकर लिखी शौर्य की अमिट कहानी।

महान् बनो और अन्य मनुष्यों में होने वाली महानता तुम्हारी महानता से मिलने के लिए उठ खड़ी होगी — लोवेल

जय जय हिन्दुस्तान

राजेन्द्र 'काजल'

एक पुत्र ने बन कपूत निज माता को ललकारा है
भूल गया जो त्याग को उसके जिसने उसे संवारा है
माँ फिर आखिर माँ होती है हर गलती को क्षमा किया
आज उसी का फल है सम्मुख लेकर खड़ा दुधारा है

अब न होने देंगे लेकिन हम सपूत अपमान।
अस्त हो गया ममता के अब संयम का दिनमान।

ओ दुजिया के चाँद तुझे इसका है शायद ज्ञान नहीं
बिन माँ के आशीष जगत में मिलता है सम्मान नहीं
नभ ने जब देखा चंदा पर तेरे कारण दाग़ है
तुझे काट कर अलग कर दिया इससे तू अनजान नहीं

तू निष्कासित पथिक और हम मंज़िल की पहचना।
कौन देश के हित में मरने से है कार्य महान।
जय जय हिन्दुस्तान हमारा जय जय हिन्दुस्तान।

अब न दबाने से दब सकती जाग चुकी जो आग है
मिटाके ही दम लेंगे जोकि माथ पर दाग़ है
सहमी सी हैं काशमीर के झरनों की किलकारियाँ—
सिसक रहा आवाज़ आ रही "शालीमार का बाग़ है"

खाली हाथ न लौटेगा यह यौवन का तूफ़ान।
रण का बिगुल बजाता भारत सम्भलो पाकिस्तान।
जय जय हिन्दुस्तान हमारा जय जय हिन्दुस्तान।

परिमाण किसी भी व्यक्ति अथवा राष्ट्र की महानता की निकृष्टतम कसौटी है।
—जवाहर लाल नेहरू

राजेन्द्र 'च्यवन'

जम्मू कश्मीर हमारा है

भूतल का स्वर्ग देवताओं का प्रिय जम्मू कश्मीर हमारा है।
हमने काले नागों को नाथा है तुम साधारण जल के दीन सर्प।
ओ पशुता के पूजक अयूब ! तानाशाही का मत करो दर्प।
हमने तो तानाशाही दिमाग को अपनी तलवारों से बदला है।

अलक्षेन्द्र के अरमानों की फसलों को अपने कदमों से कुचला है।
मत भूलो देवों की धरती का कण-कण जलता अंगारा है।
ललचाई नजर उठाओ मत ओ खुलना के हिंसक हत्यारे।
कब ठहरेंगे रवि पूजक के आगे तेरे ध्वज के यह चाँद सितारे।

तेरी काली करतूतों का कल्मष मोटा संकुल पर्दा फट जायेगा।
भारत म रुत झाको से तूने फैलाया जो भ्रम का बादल हट जायेगा।
मत भूलो देव दारु का प्रति पत्ता विष बुझी तेग की धारा है।
ओ बंधु ! समझ जाओ अब भी मेधा फिर गई तुम्हारी है।

हमको जग जननी जामकी लग रही सुरभित केशर की क्यारी है।
अन्यथा राम के भीषण बाणों से तेरी यह लंका जल जायेगी।
फिर एक बार विजयादशमी भारत की भूमि मनायेगी।
अपना सुरभित मधु नन्दन वन हमको प्राणों से प्यारा है।

सत्य से स्वाधीनता मिलती है, केवल यही बात ठीक नहीं है। उसके साथ-साथ यह भी ठीक है कि स्वाधीनता हमें सत्य प्रदान करती है।

—रवीन्द्र

मातृ-भूमि

राजेश्वर मिश्र 'रत्न'

धन्य भूमि भारती !
हिमाद्रि आसमुद्र शुभ विलास यह
निगम निसर्ग का निखिल विकास यह
कि स्निग्ध ऋद्धि सिद्धिमय सुहास यह
नियति शृंगार-दान ले तुझे सतत संवारती ।
हरित, कलित, प्रसित, सुवन, समीर हैं
झरित सुनीर, निर्झरी अधीर है
त्वरित तुमुल निनाद खग कुटीर हैं
हिमांशु, अंशु नत सजा रहे यशस्व आरती ।
सुर प्रसू तुम्हीं चतुस चिरन्तना
सुविश्व बुद्धि आत्म-शुद्धि अंजना
सुसत्य शिवं सुन्दरं सुरंजना
अमल सफल सुहम पर समस्त सृष्टि वारती ।
कि राजनीति, धर्म भित्ती धीर तू
कि रंग रीति पूर्ण प्रीति वीर तू
मनोज्ञ प्रज्ञ श्री सुभग अबीर तू
कि नत सुवेष - स्वस्ति नित वसुन्धरा उचारती ।
धन्य भूमि, भारती !

सत्य की खोज एक परम सौभाग्य है, किन्तु इसका पूरा मूल्य तभी आँका जा सकता है जब हम सिद्ध कर सकें कि जो कुछ हमें ज्ञात है वह सत्य है ।

—बर्जेलियस

राधेश्याम द्विवेदी

देश की खातिर

•

देश की खातिर सिपाही डग बढ़ाता जा रहा है,
सुमन पौरुष के लिये पग पग चढ़ाता जा रहा है।

आज उसकी राह में वीरांगना पत्नी खड़ी है,
प्रेम पर कर्तव्य के जय की निकट पावन घड़ी है,
किन्तु संगिनि माँग के सिन्दूर की देती दुहाई;
श्वास के अंतिम क्षणों तक, जूझने रण, लो, बिदाई,

गाँठ कंगन में बंधी ममता छुड़ाता जा रहा है,
देश की खातिर सिपाही डग बढ़ाता जा रहा है।

देख अपना लाल, विधवा माँ सजा कर थाल आई,
तिलक कर कहती, न तू ने कोख है अब तक लजाई,
दूध की तुझको शपथ है, शपथ मेरे रक्त की सुन;
शत्रु के छक्के छुड़ाना, शान रखना मृत्यु की सुन ?

वीर जाया के चरण में, प्रण निभाता जा रहा है,
देश की खातिर सिपाही, डग बढ़ाता जा रहा है।

एक सैनिक है कि जो कर्तव्य से करता सगाई,
एक सैनिक है कि जिसने मौत सीने से लगाई,
एक सैनिक है कि जिसने देश की महिमा जगाई,
धर्म सब कुरबान तुझ पर, वतन के प्यारे सिपाही,

एकता का सूत्र तू ही दृढ़ जुड़ाता जा रहा है,
देश की खातिर सिपाही पग बढ़ाता जा रहा है।

जिनके मस्तिष्क अन्धविश्वास से मुक्त हैं, उनको मृत्यु रंच मात्र भी भयभीत नहीं कर सकती है। —*गुरू नानक*

ताण्डव हो फिर एक बार

रामकुमार वर्मा

ताण्डव हो फिर एक बार !
प्रलयंकर ! कम्पित झंकृत कर
सृष्टि-सृष्टि का तार-तार।
कण-कण में प्रतिक्षण रण-रण हो
प्राण-प्राण से हो पुकार।
विचलित थल थल पर प्रतिपल हो
बार-बार द्रुत पद-प्रहार।
पृथक्-पृथक् नव प्रकृति-तत्व
नल अनिल-अनल जल भूमि-भार।
अंग-अंग में ओ अंगरिपु !
मंगलमय हो बार-बार।
ताण्डव हो फिर एक बार।

समय मूल्यवान अवश्य है, किन्तु सत्य समय से भी अधिक मूल्यवान है। —डिजरायली

रामकुमार शर्मा

शीश नहीं झुक पायेगा

आज अमन की इज्जत ने हमको आवाज लगाई है,
मुक्तिदूत भारत के पुत्रों ! पुण्य घड़ी फिर आई है।
भारत का इतिहास विश्व की लम्बी एक कहानी है,
वैसे तो हम शान्ति दूत हैं, सच्चे जीवन दानी हैं।
शौर्य, पराक्रम की गाथायें तुझ से ही अनजानी हैं;
पीकिंग से जा पूछ हमारे स्वाभिमान में पानी है।
अंग्रेजों की वक्रनीति ने हमसे मुँह की खाई है,
उठो देश के वीर सपूतो ! पुण्य घड़ी फिर आई है।
सत्रह साल हुए जब तुझ को एक अलग अस्तित्व दिया,
मित्र धर्म को हमने अब तक पाला है, परिपक्व किया;
इस धरती के अहसानों को ऐसा बदला आज दिया,
नोंच रहा है उसी कोख को जिसका तूने दूध पिया।
अपनी ही माँ की इज्जत पर तूने नजर उठाई है,
वीर शिवाजी की संतानों ! पुण्य घड़ी फिर आई है।
मुसोलिनी - हिटलर के बेटे लोकतन्त्र के ये भूखे,
संभव है इनकी सन्तानें इनके ही मुँह पर थूकें,
अभी कच्छ के समझौते पर अक्षर चार नहीं सूखे;
चंगेजी सपने थे आखिर अपनी चाल नहीं चूके।
केशर क्यारी के सपनों में उसने आग लगाई है,
गोविन्दसिह के वीर सपूतो ! पुण्य घड़ी फिर आई है।

राष्ट्रों की सम्पत्ति तो मनुष्य हैं, रेशम, कपास या स्वर्ण नहीं।
—रिचार्ड हावे

उठो करो निर्माण

रामगोपाल चतुर्वेदी 'सरल'

ओ भारत के वीर सपूतो उठो करो निर्माण
तुम शान्ति के अग्रदूत हो, चिरपरिचित तस्वीर हिन्द हो,
लड़े हमेशा तूफानों से, अविचल सी तकदीर हिन्द हो।
सदा तुम्हारा एक ध्येय हो, भारत माँ के वीर पूत हम,
फूल मिलें या शूल चलें, अब बन वर्षा के मेघदूत हम।
गाता है इतिहास सदा से तेरी कीर्ति महान।

वीर शिवाजी राणाप्रताप से जन्मे जग यश छाया,
शीश झुकाया नहीं किसी को चाहे प्राण गंवाया।
वर्षों रहे वनों में जाकर कभी न दिल दहलाया,
मुगलों के मुँह सुना धन्य वह जिसने तुमको जाया।
छिपा हुआ हल्दी घाटी में तेरा गौरव गान।

उठो हिमालय के शिखरों से नयी नयी आवाज जगाओ,
और देश हर कोने भेद विषमता दूर भगाओ।
सोते सिंह जगो जल्दी से भारत माता जगा रही है,
आई ऊष लिये पालकी बैठो तुमको बुला रही है।
हुआ सबेरा सूरज सबको देता है आव्हान।

सबसे अधिक प्राप्ति उसी को होती है जो संतुष्ट होता है।
—सेक्सपियर

चलते सीना तान के

रामगोपाल परदेसी

सैनिक हिन्दुस्तान के
पाँव नहीं यह रुकने वाले,
शीश नहीं यह झुकने वाले,
आँधी पानी तूफानों में चलते सीना तान के
सैनिक हिन्दुस्तान के
भारत माँ के वीर लाल हैं,
जौहर इनके बेमिसाल हैं,
छुड़ा रहे हैं देखो कैसे छक्के पाकिस्तान के।
सैनिक हिन्दुस्तान के
जो भारत पर आँख उठाता
बचकर इनसे निकल न पाता
इतिहासों में अमर रहेंगे किस्से इनकी शान के
सैनिक हिन्दुस्तान के

संतोष तो प्रयासों में है, उपलब्धि में नहीं। — म. गांधी

दुश्मन को ललकारो

रामचंद्र वर्मा

तुम हिम्मत मत हारो।
आज प्राणों की बाजी रखकर दुश्मन को ललकारो।
अपना जीवन भावी के हित अंगारों पर वारो।

आज न कोई हिन्दू, मुस्लिम, कोई सिख, ईसाई,
आज सभी भारतवासी हैं एक सहोदर भाई,
मातृभूमि की रक्षा का संकल्प हृदय में लेकर,

भेद-भाव की दीवारों को ढाते कुछ न विचारो।
आज प्राण की बाजी रखकर दुश्मन को ललकारो।

कोई अरि इस आँगन की सीमा मत छूने पाये,
यदि दु:साहस करता हो तो अपनी जान गँवाये,
सावधान तुम रहना सचमुच घड़ी परीक्षा की है,

अंधकार में तुम दीपक की आभा चलो सँवारो।
आज प्राण की बाजी रखकर दुश्मन को ललकारो।

अब सब का कर्तव्य एक है, लक्ष्य एक है पावन,
इस उपवन को हमें बनाना है नव नन्दन कानन,
श्रम का आराधन करना है, पौरुष का अभिनन्दन,

अमर देश के वन्दन में तुम नश्वर तन परिहारो।
आज प्राण की बाजी रखकर दुश्मन को ललकारो,
अपना जीवन भावी के हित अँगारों पर वारो।
तुम हिम्मत मत हारो।

सभ्यता का पर्याप्त मापदण्ड उस समाज पर स्त्रियों का प्रभाव है।
—इमर्सन

रामनरेश सिंह भदौरिया

ये हस्तियाँ फौलाद की

उड़ रही हैं स्याहियाँ अब व्योम से ।
प्राण टक्कर ले रहे हैं होम से ।
अब नहीं कोई शिकायत कर सकेगा
घाट पर मेरे न पानी भर सकेगा—
हाथ में लेकर जहर की रस्सियाँ ।
ये हस्तियाँ फौलाद की हैं हिन्द की
लाहौर तक है रोशनी बारूद भीगे छन्द की
कवि चन्द बरदाई लगाते आ रहे हैं सीढ़ियाँ
चढ़ चलो सैनिक रुको मत, चढ़ चलो अब
तोड़ कर सम्बन्ध सारे सोम से ।
अब नही कोई इमारत गढ़ सकेगा
अब नहीं कोई शहादत कर सकेगा
कह रही हैं काश्मीरी बस्तियाँ ।
वे पड़े हैं टैंक पैटन एक बूढ़ी वेश्या से
और जज्बाती रिसाले चीखते हैं बेहया से
मिट गई तहजीब जिनकी, हो गई हैं धज्जियाँ ।
'सेब्रों' की खैरियत के पत्र 'नेटों' ने जलाये
अब मियाँ की चाँद पर जूते बरसते व्योम से

हम समझते हैं कि हमारी सभ्यता अपने सर्वोच्च शिखर पर है. किन्तु वह केवल अपने शैशव में ही है । —*इमर्सन*

हमारा झण्डा

रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द'

रक्त-पीत संग श्वेत सँवारा,
योद्धाओं का प्रमुख सहारा।
अरि हित आरा, रण अंगारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।

दुष्टों को दहलाने वाला,
रण में पैर बढ़ाने वाला।
देश-सितारा; विजय-इशारा,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।

उर में ओज जगाने वाला।
वीर भाव फैलाने वाला
अरि हित आरा रण अँगारा,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।

भारत भू का हृदय दुलारा,
पावन ज्यों गंगा की धारा।
काल-करारा, सबसे न्यारा,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।

मिथ्या मोह नशाने वाला,
अरि का हृदय कँपाने वाला।
देने वाला रण ललकारा,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।

सभ्यता चरित्र का वह रूप है जो मनुष्य को कर्तव्य का मार्ग दर्शाता है।
—महात्मा गांधी

रामविशाल शर्मा 'विशाल'

वह और मैं

वह सुरा-आसुरी पी पागल,
मैं सुधा-भारती पीता हूँ ।
वह नापदान की नाक बना,
मैं पावस बना बरसता हूँ ।

हैं सींग, पूंछ उसके झण्डे,
मैं वायु बना लहराता हूं ।
वह रुदन, पाप, पीड़ा-घर है,
मैं अम्बर दीप जलाता हूँ ।

वह जड़-पशुता का नर्क-बीज,
मानवता का मैं तृण-तृण हूं ।
वह मिथ्या दोषों का वितरक,
मैं सत्य-जगत का दृढ़-प्रण हूँ ।

वह हिंसा, शोषण, नख-दन्ती,
मैं उसका पतझर करता हूं ।
वह छिप-छिप पथ कंटक बनता,
मैं दृढ़ जूतों पर चलता हूं ।

सभ्यता और धर्म की प्राचीनता की दृष्टि से कोई राष्ट्र आर्य सभ्यता की समता नहीं कर सकता । —हे. एन–थांग

देश है हमारा

रामसकल ठाकुर विद्यार्थी

नगराज के शिखर से नटराज ने पुकारा।
यह भूमि है हमारी यह देश है हमारा।

खिलते कहीं सुमन हैं हँसती कहीं लतायें,
सौरभ लुटा रही हैं घर-घर मलय हवायें,
गंगा लुटा रही है अपनी पुनीत धारा।

हिम्मत न हारते हैं भूले किसी समर में,
डूबी नहीं हमारी नैया किसी भंवर में,
अपनी स्वतन्त्रता को हमने सदा सँवारा।

चित्तौर की कहानी मन को डुला रही है,
जीवन संवारने को फाँसी बुला रही है,
लेना हमें न फिर है आकर जन्म दुबारा।

हमको बुला रहा है सम्मान हर गली का,
हमको पुकारता है पत्थर अरावली का,
करती स्वतन्त्रता है रह रह हमें इशारा।

चाहे कोई हमारी बात समझे या न समझे, संक्षेप में कहना हमेशा ही अच्छा है। —बटलर

देश की धरती

रामावतार त्यागी

●

मन समर्पित, तन समर्पित,
और यह जीवन समर्पित,
चाहता हूँ, देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ !
माँ ! तुम्हारा ऋण बहुत है मैं अकिंचन
किन्तु इतना कर रहा फिर भी निवेदन,
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब
स्वीकार कर लेना दया कर वह समर्पण !
गान अर्पित, प्राण अर्पित,
रक्त का कण-कण समर्पित,
चाहता हूँ, देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ !
माँझ दो तलवार को, लाओ न देरी
बांध दो कसकर कमर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी
शीश पर आशीष की छाया घनेरी
स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण-क्षण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ !
तोड़ता हूं, मोह का बन्धन, क्षमा दो
गांव मेरे, द्वार-घर-आँगन, क्षमा दो
आज सीधे हाथ में तलवार दे दो
और बाएँ हाथ में ध्वज को थमा दो !
ये सुमन लो, यह चमन लो
नीड़ का तृण-तृण समर्पित,
चाहता हूं, देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ !

......

सावधान व्यक्ति प्रायः कम ही भूलें करते हैं। —कन्फ्यूशियस

...हीं चाहिये आज हमें

रुद्रदत्त दुबे "करुण"

आज़ाद थे आज़ाद हैं, आज़ाद हो हरदम रहेंगे,
जो नज़र डाले जमीं पर आँख उसकी नोंच लेंगे।
हम करेंगे दिग्विजय आशीष ले माँ भारती का,
रक्त की सरिता बहा देंगे, न पीछे हम हटेंगे॥

नहीं चाहिए हमें आज करुणामय स्वर की बांसुरिया,
नहीं चाहिये हमें आज वीणा की मधुमय माधुरिया।
नहीं चाहिए हमें मधुर झंकार तान लय बावरिया,
नहीं चाहिए यौवन मद से भरी झलकती गागरिया।

नहीं चाहिए हमें आज कोमल बांहों का प्यार,
नहीं चाहिये गीला आंचल सपनों का संसार।
नहीं चाहिये काले कुंतल भोग विलास विहार,
नहीं चाहिये सेज सुहानी और प्रणय का हार॥

हमें चाहिये मुण्ड माल अब विषधर की फुंकार,
हमें चाहिये काल दण्ड शिवजी की करल कटार।
हमें चाहिये प्रलय मचा देने वाली हुंकार,
हमें चाहिये तूर्यनाद अब राणा की तलवार॥

---

*तुम जितना अधिक बोलोगे, लोग उतना ही कम याद रखेंगे।
जितना तुम संक्षेप मे कहोगे, उतना ही तुम्हें लाभ होगा।*

—लूकर

१४५/रा०ऊ०ना

लक्ष्मीनारायण गोयल

बधाई दे रहा हूँ

उस सिपाही को बधाई दे रहा हूँ,
जो हिमालय के शिखर पर अड़ रहा है।
जो हिमालय की बरफ़ पर लड़ रहा है॥

राजनीति नाम है उस कुनीति का,
जो मनुज को कुटिलता है सिखाती;
युद्ध कहते हैं सभी उस कला को,
सृजन तक विध्वंस जो खींच लाती,

उस सिपाही को बधाई दे रहा हूँ,
जो हिमालय की बरफ़ पर गल रहा है।
सत्य हित लद्दाख में जो लड़ रहा है॥

मानते हैं भूल इतनी हो गई हमसे,
जो समझ बैठे तुम्हे इन्सान हम भोले;
किन्तु इतना बल हमारी है भुजाओं में,
जो तुम्हारी शक्ति को तलवार से तोले;

उस सिपाही को बधाई दे रहा हूं,
ले तिरंगा हाथ में जो अड़ रहा है।
जो नेफा की सीमा पर लड़ रहा है॥

किसी राष्ट्र की परम विद्वता उसकी लोकोक्तियों में प्रदर्शित होती है, जो अत्यन्त संक्षिप्त होते हुए भी सार गर्भित होती हैं।

—विलियन पेन

राष्ट्र – यज्ञ

वर्मा, नवारुण

•

"राष्ट्र-यज्ञ की लोल जिव्ह-सर्पिल शिखाओं को—
अम्बर की नीलिमा को छूने दो !
ग्रहों, नक्षत्रों को पिघलने दो,
आकाश के विस्तार को
प्रभात की भट्टी में गलने, ढलने दो—
निकलने दो इस्पाती धाराएँ—
टूटने दो जड़ता की, दीनता की कलुष-काराएं।
हजारों प्रतिमाएँ मिट्टी की
उभरी, सजी, बह गयी धाराओं में
टूट, बिखरी झकोरे में क्षणभर के—
बज्र के साँचे में, व्यक्तित्व की लौह प्रतिमाएँ
दृढ़ संकल्पों की ढलने दो !
पौरुष की प्रसुप्त प्रभाओं को—
अनल पालने पर पलने दो !
जरा ठहरो, बन्द करो ऊँचे मंचों के प्रवचन
जीर्णता-स्तूप को भस्म शेष करने वाले
बलिदानी स्फुलिंगों को दे दो राह,
अग्नि-पथ पर अग्नि हृदय को
विद्युत-केतन लेकर चलने दो—
और रक्त के प्याले भर-भर दूने दो।"

जीवन में केवल तीन सच्चे मित्र हैं—वृद्ध पत्नी, पुराना कुत्ता और वर्तमान धन।

—फ्रैंकलिन

विजय कुलश्रेष्ठ

ज्योति ले विकास की

गाँव-गाँव नगर-नगर, द्वार-द्वार, डगर-डगर
भू-प्रसू पुकारती बढ़े चलो चले चलो——
ज्योति ले विकास की प्रखर श्रम-प्रकाश की

गेहूँ औ' ज्वार की क्यारियाँ खड़ी खड़ी
सोन जूही धान की बालियाँ बड़ी बड़ी
ललक कर पुकारतीं बढ़े चलो चले चलो——
हाथ में कुदाल ले पाँव को संभाल के

खेत और खाद की ढेरी खलिहान की
हांफते किसान की मचकते मचान की
जवानियां बुला रही बढ़े चलो चले चलो
मन भरे उछाह से तन भरे सुबास से

हरी भरी क्यारियाँ आज सूद मांगतीं
धर्म भरी थालियाँ कर्म नया साजतीं
देव-द्वार है खड़ा सौम्यता पुकारती
गीत कर्मवाद का उभारते चले चलो।

श्रम देवि-अर्चना संवारते चले चलो ॥

पुण्य से सुन्दर स्त्री मिलती है, स्त्री से सच्चरित्र पुत्र होते हैं, पुत्रों से दिन-दिन विमल यश का उदय होता है और यश से यमलोक स्वर्ग तुल्य हो जाता है। —'कामिनी विलास' से

चुनौती

विजय "वियोगी"

होशियार होशियार ओ पाक
यहाँ आवारा मेघ आज भी
तेरी सुधि की दामिनी दमकाता है
और हर विरही के प्रलाप में
तेरी मित्रता का स्वर
अंगड़ाई लेता है।
और पी घर जाने वाली हर दुल्हन की
चूड़ी की झंकार चुनौती देती है
और यह मत भूल
कि भारत के अन्तर का ज्वार
तुझे चुनौती देता है।
चाहे भारत का हर बच्चा
हो जाये शहीद
पर यही शपथ लेता है।
इसलिए अरे ओ जादू डालने वाले
मित्रता का यह मत भूल
जिसने जाना वह मान गया
कि ये एक जन्म से नहीं
युगों से है ठोस
यहाँ की शान्ति तेरे लिये नहीं
सभी के लिये है।

सावधानी बुद्धिमता की सबसे बड़ी बालिका है—विक्टर ह्यूगो

बिजेन्द्र नारायण सिंह

एकाक्षी की व्यथा

शान्ति-कलश में शीतल जल है,
जल यह नहीं, सुधा है।
गरल पान से तुष्ट-पुष्ट तुम,
कितनी बड़ी क्षुधा है।

यह जठराग्नि बड़ी भीषण है, तुमको भी ग्रस लेगी।
एकाक्षी होने की ही तो इतनी बड़ी व्यथा है।

अभिमान गलाकर शांति प्राप्ति,
यह कैसे सम्भव है ?
नही देखते हृदय-हृदय में,
छिपा हुआ विप्लव है।

हिमगिरि के उत्तंग शृंग पर लाश बिछा हम देंगे।
जैसे भी हो मुर्दों की ही शान्ति तुम्हें हम देंगे।

सूख रहा है सुधा-सिन्धु,
केवल निःशेष गरल है।
पौरुष का यह पुंज हिमालय,
केवल नहीं अचल है।

सुरसरि की शीतल धार नहीं केवल शिव के मस्तक पर।
कंठ-बाहु से लिपट भुजंगम भी फुंकार रहा है।

बिना देखे कभी किसी वस्तु का पान न करो और बिना पढ़े कभी कहीं हस्ताक्षर न करो। — स्पेनिश लोकोक्ति

सैनिक से

विद्याभास्कर बाजपेयी

•

मातृ-भूमि का प्रेम हृदय में आहों का तूफान लिये।
लिये क्रांति की ज्वाला तन में गौरव-गर्व गुमान लिये॥
काश्मीर की क्रूर कथायें तिब्बतियों की आह लिये।
सोच रहे हो तुम क्या सैनिक एक नया संसार लिये?

याद आ रही या कि तुम्हें उन वीरों के बलिदानों की।
याद आ रही या कि तुम्हें उन लड़ते हुये जवानों की?
करुण कहानी याद आ रही या अपनी सन्तानों की?
या सीमा पर डटे हुये उन फौलादी बलवानों की?

कसक तुम्हारे अन्तस में क्या जननी की पीड़ा की है?
जिस पर अधिकार जताने की उस 'चाऊ' ने बीड़ा ली है।
जिनको मिलता नहीं अन्न जो खाने को मरते रहते।
वे क्या युद्ध करेंगे जो निज प्रभुवों पर निर्भर रहते?

सैनिक छोड़ो अपनी चिन्ता समर क्षेत्र में चलना है।
दिखलाना है अपना जौहर साथी खूब सम्भलना है॥
दुश्मन भी समझे हमको हैं कैसे ये भारतवासी।
लड़ने वाले जान गवाने वाले ये भारतवासी॥

मनुष्य की सच्चाई का एक मात्र प्रमाण यह है कि अपने सिद्धान्त के लिए वह अपना सब कुछ स्वाहा कर देने को तत्पर रहे।

—लाबेल

विद्याभूषण मिश्र 'मयंक'

प्रगति गीत

•

अब पूर्व क्षितिज पर चमक उठा,
रवि लेकर नव विप्लव मशाल।
जन गण के तमसावृत मन में,
फूट पड़ी फिर क्रान्ति ज्वाल ॥

भू कण-कण में नव ज्योति जगी,
है जगा गगन का उर विशाल।
किरणों के पंखों पर उड़ता,
शुचि स्वर्ण विभा का मधु मराल।

मानव-मन-मधुवन में कोयल,
अब लगी ढालने प्रगति-गीत।
नर बढ़ो चेतना के पथ पर,
बाधा-व्यवधानों में अभीत ॥

मानव-मानव हो एक आज,
कर द्वेष कलुष तन का अवसान।
लहराये प्राणों में गंगा,
सब मिल गायें जय प्रीति-गान ॥

पहाड़ सरीखा ऊँचा होना मुझे अच्छा नहीं लगता। मेरी मिट्टी आस पास की भूमि पर फैल जाये, इसी में मुझे आनन्द है।

—आचार्य विनोबा

आ श वा स न

विपिन विहारी ठाकुर

ओ मेरे सैनिक बन्धु,
हम तुम्हारी सुदृढ़ भुजाओं में
भारत का भविष्य देखते हैं,
तुम्हारी चौड़ी छाती
हमें हिमालय के उस फौलादी विस्तार का स्मरण दिलाती है
जिससे हमारी आजादी सुरक्षित रहती आई है—
जिससे गद्दार दुश्मनों को मिलता रहा है
पराजय का दान,
तुम्हारे संकल्प में हमें गूँजती महसूस होती है
भारतीय आत्मा की सम्पूर्ण चेतना।
ओ मेरे भाई तुमने हमारे अतीत को संवारा है
—इतिहास को बनाया है
हम अपनी सम्पूर्ण शक्ति का दान तुम्हें देते हैं—
भविष्य की पृष्ठिका पर पुनः एक बार
मर्यादित इतिहास का निर्माण करो।
'सत्यमेव जयते' की आस्था ले
वतन की मर्यादा की सभी सम्भावनाओं को स्पष्ट करो।
तुम्हारी विजय भारत के क्षितिज पर
खुशियों के इन्द्र धनुष फैला देगी
और हमारे होठों पर विजय की मोहक मुसकान।

दूसरों के दुर्भाग्यों से सावधानी सीखना ही अधिक उचित है।
—साइरस

विमलेन्द्र कुमार 'शलभ'

जवानों जाग उठो

गरज रहा भू अम्बर जागा सोया हिन्दुस्तान जवानों जाग उठो ।
वीर प्रसूती माँ रणचण्डी करती है आह्वान जवानों जाग उठो ॥

पतित पावनी गंगा यमुना जहाँ सदा लहराये,
काश्मीर की केसर क्यारी जहां सदा मुस्काये,
विश्व विजेताओं का पौरुष जहाँ क्षीण हो जाये,
जिस नग पति के आगे सारी दुनिया शीश झुकाये,

ऐसे गौरीशंकर का कर रहा कौन अपमान जवानों जाग उठो ॥

जहाँ गर्भ में चक्र-व्यूह का भेद सिखाया जाता,
जहाँ लाज के बदले जौहर व्रत अपनाया जाता,
जहां बांध कर कफन विजय से व्याह रचाया जाता,
जहाँ फूल के बदले माँ को शीश चढ़ाया जाता,

कौन छीन सकता है ऐसे नाहर की मुस्कान जवानों जाग उठो ॥

जहाँ स्वर्ण पिंजरे से बढ़कर है स्वतंत्र गिरि घाटी,
जहां मान मर्यादा पर जाती है बोटी काटी,
जहाँ आन पर रंग दी जाती है लोहू से माटी
जहां सुरक्षा हेतु बनी मर मिटने की परिपाटी,

कौन मौत का मारा देने आता अपनी जान जवानों जाग उठो ॥

मनुष्य का मापदण्ड उसकी सम्पदा नहीं, अपितु उसकी बुद्धिमत्ता है । आज वस्तुतः राष्ट्र को ऐसे ही व्यक्तियों की आवश्यकता भी है ।

—टी. एल. वास्वानी

प्राणदान चाहिये

विश्व भावन देवलिया

•

रक्त दो चुनौतियों का हम जवाब दे सकें
रक्त दो नकाब दुश्मनों की हम उलट सकें
प्रलय प्रवाह हो जहाँ हमें बो रक्त चाहिये
अदम्य शौर्य में भिदा पवित्र रक्त चाहिये ।

रक्त दो सशंक सेतु हो तरंग देखकर
गगन कंपे, सशक्त एकरंग रक्त देखकर
धरा-अरुण लजाए तेज लाल रक्त देखकर
एटमी जगत हिले ये आर्य रक्त देखकर ।

रक्त दो निलज्जता का हम हिसाब दे सकें
रक्त दो कि राष्ट्र प्रेम की मिसाल दे सकें
विजय—सुलेख के लिये पुनीत रक्त चाहिये
अनीति के विरुद्ध आज क्रुद्ध रक्त चाहिये ।

रक्त दो कि चित्र बन सके तुम्हारी भक्ति का
रक्त दो कि लिख सके कलम जवाब शक्ति का
रक्त दो मिला हो स्वाभिमान व्यक्ति-व्यक्ति का
शंख फूँक दो तरुण अखण्ड मातृ भक्ति का ।

रक्त दो इतिहास को नया प्रवाह दे सकें
बर्बरी कुबुद्धि को सुबुद्धि से पलट सकें
अर्थ देह मन वचन से रक्त दान चाहिये
मातृ भू की अर्चना को प्राणदान चाहिये ।

हमारी आवश्यकतायें जितनी कम होती हैं, हम ईश्वर के उतना ही निकट होते जाते हैं । — *सुकरात*

विश्व मोहन गुप्त 'भारती'

भारतीयों से

भारतवासी जाग उठो अब
यह सोने का समय नहीं है।
आँखें खोलो राह निहारो
अब रोने का समय नहीं है॥

क्या दिखती नहीं हिमालय पर
चीनी की गोलाबारी।
चाऊ माऊ ने देखो
अब की कैसी मक्कारी॥

पीड़ित होकर आज हिमालय
देखो तुम्हें पुकार रहा।
आज तुम्हारा पावन करतव,
तुमको है ललकार रहा॥

अरे जवानों कमर कसो
क्या शान तुम्हारी बांकी।
दिखलाना है चीन देश को
स्वाभिमान की झाँकी॥

आज देश की पीड़ा-प्रतिमा,
तुमको नयी बनानी है।
चीन देश का गर्व नसा
निज गौरव कीर्ति बढ़ानी है॥

मस्तिष्क का अपना विशेष स्थान है और वह स्वतः ही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग में परिणत कर सकता है। —मिल्टन

नापाक जवानी

विश्वरंजन शर्मा

•

हो कुत्तो इतने नीच न सपने में सोचा था,
बेबस आँसू देख द्रवित हो जाओगे हमने सोचा था।
नीति तुम्हारी रही कि जी में आये जब विश्वास कुचल दो,
चाहे स्वागत करने को मुस्कायें कलियाँ उन्हें मसल दो।

तुमने सोचा सदा कि बेशर्म हो जाये सम्पन्न जवानी,
लुट जाये सौभाग्य बहिन का लिखने बैठे खून कहानी।
सुन लो हम भारत हैं जिसने खूनों की होली खेली है,
बाहु पाश, गलबाहें छोड़ीं सीनों पर गोली झेली है।

सुनो खून से चप्पा चप्पा आज तुम्हारा रंग जायेगा,
रंगरेली हर वैभव का सौभाग्य खून से रंग जायेगा।
अब तेरी नापाक जवानी नहीं हँसेगी विधवा होगी,
तेरी खुशी खुशी क्या होगी हर आकांक्षा विधवा होगी।

तुमने सोचा बहिनें हाथों में राखी पकड़े रह जायें,
दुल्हन का कंगन हिल जाये हाथों की मेहन्दी पुँछ जाये।
और पिता की आस मिटे कँपती गर्दन कँपती रह जाये,
मांओं की गोदी खल जायें आशायें सूनी रह जायें।

अगणित अपमानों को सहकर हमने तुम्हें मित्र ही समझा,
एक चितेरा हम दोनों का हमने तुम्हे चित्र ही समझा।
मित्र तुम्हें है प्यास खून की पीलो अपनी अब प्यास बुझालो,
जितना पी पाओ पी जाओ अगर बच रहे आज नहालो।

कभी उस व्यक्ति से मित्रता न करो जिसने तीन मित्र बनाकर त्याग दिये हों।
—लैवेटर

वीरेन्द्र कुमार वैद्य

मोह तजें गहनों का नारी

चलो हम जिन्दा विचारों की,
उड़ान भरें ।

गूँज उठे रण भेरी घर-घर,
कवि ऐसी तान सुनायें,
आज चल पड़ें सारे हलधर,
खेतों में बारुद उगाने ।

मोह तजे गहनों का नारी—
'सोने' के हथियार ढलें,
चलो हम जिन्दा विचारों की,
उड़ान भरें ।

हर क्षेत्र बने अब कुरुक्षेत्र,
सीमांचल के पहरों पर,
गौरव से दें शीश काटकर,
हर नारी हाड़ा रानी बन,
सब नर पृथ्वीराज - शिवाजी,
कवि हों सिर्फ चन्द औ' भूषण ।
चलो हम जिन्दा विचारों की
उड़ान भरें ।

अत्यधिक विरोधी परिस्थितियों में ही मनुष्य की परीक्षा होती है ।
—महात्मा गांधी

खँजरें संभालो

ब्रजनन्दन पाठक 'प्राणेश'

●

उठो वीर भारत के खंजरें संभालो,
देश में घुमे दुश्मनों को बता दो।
युद्ध कहते किसे हैं नीति सिखा दो,
लड़ना यदि चाहते तो मैदानमें बुलालो॥

गरजती जहाँ हैं तोपें वहाँ गर्जन सुना दो,
खुले मैदान में युद्ध कौशल दिखा दो।
भरत भूमि के वीर होते हैं कैसे ?
बता दो उन्हें बने लौह खम्भ जैसे॥

भूलो न अपने पूर्वजों की शान-शौकत,
मान रखलो कि जिससे बढ़े तेरी रौनक।
सिखाया तुम्हीं ने है युद्ध विद्या सभी को,
वही आज कहता है लड़ने तुम्हीं को॥

लड़कर बतादो हमें मातृ-भूमि है प्यारी,
लड़नायदिचाहतेहोतोछोड़ोयहभूमिहमारी।
सुनो, प्राण संकट में डालो न अपना,
वीर हो तो समर में शौर्य साहस दिखाना॥

बेकार की बात करना न सीखा है हमने,
दुश्मनों से डरना न जाना है हमने।
प्रहरी हमारा खड़ा है सदा वक्ष ताने,
कहता चलो देश रक्षाहित अमरत्व पाने॥

मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना है तो कम से कम बोलो। एक शब्द से काम चले तो दो नहीं। —म० गांधी

शँकर 'क्रन्दन'

उद्‌बोधन

उदीयमान राष्ट्र के सपूत साहसी उठो !
प्रचण्ड दीप्त अग्नि पिण्ड से सतेज हो उठो !
विराट शक्ति, सूरमा समान वेग से उठो !
प्रबुद्ध देश के अदम्य वीर पुत्र हो, उठो !

प्रशस्त पुण्य पंथ में अभीत तेज पुंज से,
ज्वलन्त अग्नि पिण्ड से प्रदीप्त ज्योति ले बढ़ो !
विभेद जाति-वर्ण के, विभेद प्रान्त-प्रान्त के,
विभेद पंथ-पंथ के मिटा सुपंथ में बढ़ो !

पुनीत मातृ-भूमि के उदीयमान सैनिकों !
विरोध-भेद भाव को उखाड़ते हुए बढ़ो !
अनन्त व्योम में खड़े सहर्ष देव देखते,
प्रबुद्ध सिंह से सदा दहाड़ते हुए बढ़ो !

विपत्ति-पुंज मार्ग में टिकें न वेग देखकर,
अभीष्ट-सिद्धि के लिए अनिष्ट झेलते बढ़ो !

जिस तारुण्य को नियति आलोक एवं सफल मनुजत्व के लिए सुरक्षित रखती है उसके शब्द कोष में असफलता नाम का कोई शब्द नहीं होता।

—बुलवर लिटन

बढ़े चलो बढ़े चलो

शंभुसिंह मनोहर

हिन्द के जवान तुम ! बढ़े चलो, बढ़े चलो ,
कौन शक्ति है कि जो तुम्हें अजेय ! रोक ले ?
कौन विघ्न है कि जो तुम्हें अबन्ध टोक ले ?
त्रस्त हो धरा, जहाँ अमर्त्य ! तुम धरो चरण।
शैल ध्वस्त हो गिरे कि टूक टूक हो गगन।
सिन्धु सूख क्षार हो प्रवाह छोड़ दे पवन;
धार फूल बन मिले कि शूल फूल का चमन॥
मातृभूमि - मोद में, सगर्व जय उचारते।
लिए तिरंग राष्ट्र-ध्वज चले चलो, चले चलो।
एक हो न, सवा लाख याद करो गुरु बोल।
एक पल मुक्ति, माँगता अनेक शीश मोल।
सिंह हो, डरो न देख कोटि कोटि ये शृगाल।
काट काट करो वीर! पूरी आज मुण्ड-माल।
एक क्या, उठें हजार भी तरंग मोड़ दो।
दर्प से उदग्र शत्रु शीश - कुम्भ फोड़ दो॥
हटो न, हो निरस्त्र भी, अमोघ पार्थ-पुत्र तुम।
चक्र-से समस्त शत्रु - व्यूह चीरते चलो॥

श्रम पूँजी से पहले आता है और उससे स्वतंत्र है। पूँजी तो वल श्रम का फल है। यदि श्रम का अस्तित्व न होता तो पूँजी का ास्तित्व भी न होता। श्रम पूँजी से बढ़कर है और उससे अधिक ान देने योग्य भी।

—लिंकन

शर्मा, डा० चक्रधर

ग र्ज ना

●

गर्जना करो सुवीर गर्जना करो।
तर्जना करो प्रवीर तर्जना करो।
इस महान राष्ट्र पर,
छा रहीं अनीतियाँ,
दे रहीं चुनौतियाँ,
अदम्य शौर्य शक्तियाँ,
पाक चीन की कुबुद्धि वर्जना करो।
गर्जना करो सुवीर गर्जना करो।
गगन कंपे सशंक हो,
तरंग देख देख कर,
उठे धरा सशक्त हो,
आर्य रक्त देखकर,
राष्ट्र प्रेम की विशाल सर्जना करो।
गर्जना करो सुवीर गर्जना करो।
विजय सुलेख के लिए,
पुनीत रक्त दान दो,
हो जवाब शक्ति का
निनाद मंत्र फूँक दो

पूँजी श्रम का परिणाम है और श्रम ही इसे उन्नति के लिए उपयोग में लाता है। श्रम ही सक्रिय और मूल शक्ति है अतः यही पूँजी का उपयोगकर्त्ता भी है। *—हेनरी जार्ज*

मिट्टी का प्रहरी

शत्रुघ्न प्रसाद

हर कण मिट्टी का तेरा प्रहरी है !
हर मन मिट्टी का, भावना गहरी है ॥

शिखरों के ध्वज, झुक मत जायँ
सागर के श्वास, रुक मत जायँ
हर गीत है, इसी धरती का
हर मीत है, इसी जगती का

हर कण मिट्टी का, तेरा प्रहरी है ।
हर मन मिट्टी का, भावना गहरी है ॥

विश्वासों का कुमक, चुक न जाय
संकल्पों का दीप, बुझ न जाय
हर मर्म है, इसी धरती का
हर कर्म है, इसी जगती का

हर कण मिट्टी का, तेरा प्रहरी है ।
हर मन मिट्टी का, भावना गहरी है ॥

उन आहों को, भूल न जाना
इन बाँहों को, नहीं छिपाना
हर जनम है, इसी धरती का
हर अहं है, इसी जगती का

हर कण मिट्टी का, तेरा प्रहरी है ।
हर मन मिट्टी का, भावना गहरी है ॥

जो विश्राम प्राप्त कर सकता है, वह बड़े-बड़े नगरों के विजेता से कहीं महान् है । — फ्रेंकलिन

"मातृ भू वन्दना"

शिव नंदन कपूर

●

मेरी पावन मातृभूमि का कण-कण
काशी अणु अणु शंकर ।
करता है आकाश वंदना नमित
स्वर्ग है क्षितिज क्षितिज पर ।।
उज्ज्वल भाल हिमाचल, गिरि गिरि
हिम किरीट हीरक नगविजड़ित ।
यहि वशाल आकाश शीश पर
जटाजूट सा प्रतिक्षण शोभित ।।
गंगाधर बन गया देश का
रज रज गंगा को धारण कर ।
साक्षी है इतिहास हमारा
यहीं पला करते हैं विषधर ।।
दिया शक्ति का वरण इसी ने,
शीश चढ़े हैं यहीं कलाधर ।
नीलकण्ठ बन चुका देश यह
हालाहल शत बार पान कर ।।
यदि इसने वरदान दे दिया
कभी भूल से भस्मासुर को,
तो त्रिशूल लेकर क्षण भर में,
था प्रनष्ट कर दिया त्रिपुर को,
भूलें नहीं निशाचर, प्रलय
हुआ करती इसके इंगित पर ।।

समय पर ठीक तौर से काम करने की आदत का ख्याल रखो। जो कुछ करना हो, शीघ्र कर डालो, और काम कर लेने के बाद आराम करो, पहले आराम करने की चेष्टा मत करो। —स्वेट मार्डेन

यह परीक्षा की घड़ी है

शिव उपाध्याय 'शिव'

•

उत्सर्ग की नव भावना ले
देश का उत्थान करने
बढ़ चले हैं चरण साथी
अब सभी व्यवधान हरने

खुल गया है कोष का मुँह
दान की महिमा बढ़ी है
मातृ वेदी पर सभी की
अर्चनाएँ अब चढ़ी हैं

वह धवल नगराज देखो
तापसी सा दृढ़ खड़ा है
देश का पुरुषार्थ उसके
हित, सदा आगे बढ़ा है

आज बेला त्याग की है
कर्म की बलिदान की है
यह परीक्षा की घड़ी है
औ विजय वरदान की है

हम सभी मिल कर करेंगे
देश का निर्माण साथी
नीति मे निश्चय करेंगे
जन्म भू का त्राण साथी

जो मिट्टी से भी सोना बनाते हैं वही व्यवहार कुशल हैं।
—डिज़रायली

शिव प्रसाद शर्मा 'अम्बु'

अन्तिम फैसला अपना

हुआ बम बार्ड भारत पर कि यह कश्मीर अपना है
अमन का स्वर्ग यह अपना यही दुनियाँ से कहना है
नहीं हम टैंक से डरते न बख्तर-बन्द से डरते
भले हों आग की लपटें न भीषण जंग से डरते

बढ़ेंगे हम मिटेंगे हम कि सादिक चाहते हमको
किया कश्मीरियों ने फैसला वे मानते हमको
सबल हैं और सक्षम हैं करेंगे राख दुश्मन को
मिटा कर भेद सब मन के करेंगे साफ दुश्मन को

भले हैं सब विलग धर्मी मगर सब एक हैं जानो
यहाँ इन्सानियत पलना यहाँ का धर्म है मानो
सुनो, इन्मानियत का शत्रु जो वह शत्रु अपना है
भले हों लाख मुश्किल में मगर उसको कुचलना है

बधाई शास्त्री को लाख जो मानव महामानव
कि घुटने टेकते पाकी लुटेरे बन जहाँ दानव
शिवा के रक्त में कम्पन जगे चाह्वाण सेनानी
कि जिसके शीश बस दुर्गा चढ़ाती खड्ग पर पानी

उठा लो खड्ग बिजली से चमक कर सामने आओ
लिये गर्दन हथेली पर, शत्रु गर्दन मारने आओ
बचाना आज भारत को यही बस धर्म अपना है
मिटाना एक होकर शत्रु को बस कर्म अपना है

प्रेम की सम्पूर्ण देय मात्राओं में यौवन सर्वाधिक शक्तिशाली है।
— अलेन

बढ़ता हुआ यह कारवाँ

शिवनारायण भटनागर

हम वतन के नौजवाँ, हम वतन के नौजवाँ।
रुक नहीं सकता कभी, बढ़ता हुआ यह कारवाँ।
संकटों, आपत्तियों की लाख आयें आँधियाँ
घर जलाने के लिये, धरती पे कौंधें बिजलियाँ
लाख तूफानों में दुनिया को, हो साहिल का गुवाँ।
रुक नहीं सकता कभी, बढ़ता हुआ यह कारवाँ।
रण में एक हुंकार से दुनिया को हम देंगे हिला
है भुजाओं में वह शक्ति, है अभी वह हौंसला
पाँव धरती पर अगर रक्खें, तो काँपे आसमाँ।
रुक नहीं सकता कभी, बढ़ता हुआ यह कारवाँ।
है समर वीरों का जीवन, हाथ में तीरो कमाँ
मोह प्राणों का नहीं है, जानता सारा जहाँ
क्यों न हो दुनिया को हम पर, 'भीमो अर्जुन' का गुवाँ।
रुक नहीं सकता कभी, बढ़ता हुआ यह कारवाँ।
हर कदम रण क्षेत्र में, अपना बढ़े इस शान से
देश को रक्षा हो अपने त्याग से बलिदान से
लक्ष्य भेदन के लिये, मिलकर चलें सब नौजवाँ।
रु. नहीं सकता कभी, बढ़ना हुआ यह कारवाँ।

विचारों को वीर और साहसियों की भुजाओं और मस्तिष्क द्वारा कार्य में परिणित होना चाहिए, अन्यथा वे स्वप्न मात्र रह जायेंगे।

—इमर्सन

शीला पाठक

उठो भारत की वीर-रमणियों

उठो भारत की वीर-रमणियों, क्यों लेती निद्रा गहरी।
गौतम, गान्धी की मानवता को, दानवता ललकार रही है।
शान्ति भक्षिणी हिंसा उठ-उठ, नागिन सी फुंकार रही है॥
घिरी हुई हैं शत्रु-दल से, स्वर्णिम भारत की सीमायें।
क्या कारण है नहीं फड़कतीं, चूड़ी-धारी वीर भुजायें॥
काँप रहा है आज देखलो, 'शंकर', भोला बाबा जहरी।
तज दो अब विश्राम "पद्मनी" सा तुम नाम अमर कर॥
'जौहर' दिखला शत्रु को, हिम-गिर के उच्च शिखर पर।
फहरादो अपने भुज-बल से, सीमा पर विजय पताका॥
थर्रायें भावी अरि-सन्तति, सुन तेरे बल की गाथा।
बदल गया युग भारत-रमणी, कर कृपाण अब गहरी॥
भूल गई राणा शिवा के बलिदानों की अमिट कहानी।
भूल गई भैना, 'मैना', रण-चण्डी झाँसी की रानी।
तेरी जाति के ही भुज बल से, थर्राते थे सारे दानव॥
दैत्य वश को संहारा था, भय से मुक्त किया था मानव।
आज लगी है तेरे घर पर माओ, चाओ की आँख तरेरी॥
तेरी हद पर पैर जमाये, झाँक रहे हैं चाङ्ग-लुटेरे।
समझ रहै हैं तुझको निर्बल, बने बली जो बल से तेरे॥
समय आ गया चण्डौ बन कर, रण-कौशल दिखला दो।
एक बार फिर शत्रु-रक्त से, माँ को अर्घ्य चढ़ा दो॥
तू भारत की वीर-प्रसविनी, 'नेहरू' जैसे जन फिर प्रहरी।

विश्व एक सुन्दर पुस्तक के समान शिक्षा पूर्ण है। किन्तु, उसके लिए इसका रंच मात्र भी उपयोग नहीं जो इसको पढ़ नहीं सकता।

— गोल्डोनी

आवाहन

शुक देव तिवारी 'निबेल'

सुन्दर सुखद देश के वासी, आया समय सुहाना है।
मातृभूमि हित हम सब को, मिल करके शीश चढ़ोना है।
शत्रु उठ खड़े हुए चहुं दिशि अब हम सबको चैन कहाँ ?
ऐसे समय मौज करने का, वह दिवस अरु रैन कहाँ ?

शत्रु हुए विजयी यदि अबकी बार हमारी शान कहाँ ?
माँ, बहिनों, मन्दिर, मस्जिद की, रक्षा का सामान कहां ?
हमको आगे बढ़कर अब तो, शौर्य उन्हें दिखलाना है।
मातृभूमि हित हम सबको, मिल करके शीश चढ़ाना है॥

एक ओर हैं पाकिस्तानी, ओर दूसरी चीनी हैं।
देख देख कर इन सबको, भारत की आँखे भीनी हैं॥
मन्दिर, मस्जिद, गिरिजा तोड़ें, तोड़ें ये गुरुद्वारे को।
माँ बहिनों की लाज हरें ये, दया न है हत्यारे को॥

इन नीचों को मानवता का, हमको पाठ पढ़ाना है।
मातृभूमि हित हम सबको मिल करके शीश चढ़ाना है॥
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन पारसी सभी उठो।
जिसने माँ का दूध पिया है, हे वर वीरो, शीघ्र उठो॥

कर दो मिल हुंकार, भूमि, आकाश सभी मिल गूँज उठे।
वीर उठ चलें रण-स्थल को, कायर तक भी जाग उठें॥
हम हैं राम-कृष्ण के बेटे, यह उनको जतलाना है।
मातृभूमि हित हम सबको, मिल करके शीश चढ़ाना है॥

सम्पूर्ण विश्व एक मंच है और स्त्री तथा पुरुष इस पर अभिनय करने वाले पात्र।
—शेक्सपियर

शुकदेव प्रसाद वर्मा

आह्वान

है हिमालय के उदर में मान सर शुभ हंस का ।
अधिकार जिस पर है चला आता हमारे वंश का ।।
कश्मीर से आसाम तक उन्नत हमारा राज्य है ।
लद्दाख औ नेफा हमारे देश को नहिं त्याज्य है ।।
जो सर अड़ायेगा हमारे रक्ष्य पर्वत राज से ।
टकरायेगा सर बच न पायेगा कभी यमराज से ।।
राम ने लंका जलाया महज़ बानर वीर से ।
हूँण को मुँह की खिलायी वीर विक्रम धीर से ।।
शब्द बेधी बाण से जिसने गिराया गोर को ।
उस उजागर पृथ्वी के वंशज हनेंगे चीन को ।।
है हमारा देश रक्षित भय सलिल पाषाण से ।
हम को जरा डर है नहीं इस मशक पाकिस्तान से ।।
भारतीयों ! देख लो तुम पूर्वजों के रक्त को ।
चीनी आक्रामक दानवों से त्राण से इस वक्त को ।।
हम वीर हैं रणधीर हैं जलते अनल अंगार हैं ।
है चीन की हस्ती ही क्या जो कर सके झनकार है ।।
'वर्मा' रहेगा एक भी जीवित पुरुष इस देश में ।
होने न देगा देश को पराधीन अपने वेश में ।।

महान् विचार जब कर्म में परिणत हो जाते हैं तो महान् कार्य बन जाते हैं ।
— हैज़लिट

उठ वीर आगे बढ़

श्याम नारायण बैंजल

भारत माँ के
पराक्रमी बालक
अर्जुन की भांति
और राणा सांगा, राणा प्रताप के
पदों की धूल में अवगाहन कर
आगे बढ़े जा
तुझे अपनी माँ के प्यार का, दुलार का ऋण चुकाना है
शत्रु की शोणित धारा ही
तेरी रण-चण्डी माँ का सिन्दूर बन सकेगी—
इतिहास के पन्ने आल्हा ऊदल
शिवाजी और चन्द्र शेखर
के अफसानों में कब तक डूबे रहें
वे अब तेरी वीरता की कहानी
उन अतीत वीरों के साथ
अपने अंक में समेटने को आकुल हैं।

अगर तुम चाहते हो कि मरते ही तुम न भुला दिये जाओ तो या तो पढ़ने लायक चीजें लिखो या लिखने लायक काम करो।

—सूक्ति

श्याम नारायण शर्मा 'निराला'

धर्म पुत्र हम

हम उतारें स्वर्ग को इसी ही धरा पर,
और बनायें मिट्टी को कंचन खरा।
हम बनायें नव निकेतन आज अपने हाथ से,
और फसलें नई उगायें आज अपने बाहु से।
चीर दें हम वक्षःस्थल आज ही,
काली अन्धेरी रात का।
और सुनहले प्रातः में है हम उगाये,
नूतन बने निज सूर्य को।
कोप है हममें छिपा,
भीषण भयानक शक्ति का।
तीर्थ भी हम में छिपे हैं,
जिनकी गिनती भी नहीं,
हम धर्मपुत्र हैं अमर देव हम,
फिर मृत्यु से क्यों कर डरें।

असंयमी और दुराचारी मनुष्य राष्ट्र का अन्न व्यर्थ खाता है। इससे तो कहीं अच्छा है कि वह लोहे का लाल गरम गोला खा जाये।

—बुद्ध

व्यर्थ नहीं जाएगा

श्याम मोहन दुबे

कश्मीर की केसर भरी क्यारियाँ
हो गई हैं म्लान
रक्तरंजित हो गई है आज सीमा
और नेहरू - शास्त्री का भारत !
कश्मीरी सेव - अंगूरों में
अंजीर - अखरोटों में
आज जीवन - रस नहीं
भरी है विस्फोटक बारूद;
शालीमार के सुहाने बाग
और डल झील का बर्फानी जल
क्रांति की हवाओं का
सिरमौर है बाँधे हुए !
यह देश भारत !
जहां का हर हिन्दू हर मुसलमा
हर सिक्ख, ईसाई, पारसी
देश की रक्षा में हो गया है कटिबद्ध।
ओ सीमा के शत्रुंजय सैनिकों !
व्यर्थ नहीं जायगा
तुम्हारा यह बलिदान।

दोस्ती के शुरु में रफ्तार धीमी रखो, बाद में एक-सार।

—सुकरात

श्री कृष्ण कुमार 'नूतन'

ज य घो ष

उठ रे वीर भारती, उठ रे शेर भारती,
वक्त आ गया है तेरे इम्तिहान का।

गंग का नीर तू, वक्त पर भूचाल भी,
मीत तू मीत का, शैतान का काल भी।
बुद्ध का सन्देश तू, शंकर का अवतार भी,
कर्म तू कृष्ण का, ज्ञान का अधार भी॥

शेर शिवा तू, वंशज प्रताप महान का,

लक्ष्मी के उपासक भी, काली के पुजारी हैं।
भवानी सी, दुर्गा सी, माताएँ हमारी हैं,
पद्मनी का जौहर भी, झाँसी की तलवार है।
वीर राठौर से इस देश के पहरेदार हैं,

काली की प्यास है त्योहार रक्तदान का।

चांद की शितलता भी सूर्य की ज्वाला है,
भाई थे भाई के, चीन का दिल काला है।
सिख तू गोबिन्द का, नानक की सन्तान है,
शेर तू हिन्द का हिन्द की शान है।
बन्दा बहादुर तू है, हिन्दुस्तान का,

उठ रे वीर भारती, उठ रे शेर भारती।
चूड़ियाँ मां बहिन की बनी हथियार हैं,
बता दे कितना आजादी से तुझे प्यार है।

सुनहरा जमाना हमारे सामने है न कि हमारे पीछे।

—सेन्ट साइमन

देश की पुकार

सन्त शरण शर्मा 'सन्त'

●

मेरे बेटो ! उठो सपूतो ! दुश्मन को उठ मार भगा दो ।
निज युद्ध कला पौरुष दिखला दो ।।
अर्जुन ! जागो तुम उठो भीम ! निज निज अस्त्र शस्त्र कर धारो ।
कृष्ण-चक्र को लेकर तुम भी, दया धर्म की ध्वजा उबारो ।।

मिट जाये पाकिस्तान धरा से, ऐसा महाभारत आज रचा दो ।
जागो जागो हे आर्य रक्त ! हे मुनियों की सन्तान सबल ।।
चन्द्रगुप्त चाणक्य साथ ले, करो नीति को आज सफल ।
जागो अशोक पुनि बन महान्, कलिंग युद्ध कौशल दिखला दो ।।

थानेश्वर के सिंह हर्ष तुम, अब के पुनः दहाड़ उठो ।
राजपूत सब जाति भेद तज, पृथ्वी राज पहाड़ उठो ।।
परा और अपरा विद्या ले, एक सात को मार भगा दो ।
वीर शिवा जी राणा भामा, तुम भी सपनों को छोड़ दो ।।

ले लेकर निज विजय अस्त्र तुम, कमर शत्रु की तोड़ दो ।
दूध दही की नदियों के स्थल पर, उठो, आज औ' खूँ की नदी बहा दो ।।
आज करो एकत्रित सेना, गांधी, सुभाष मिल कर तुम ।
पंचशील की ध्वजा ! दिखाओ, पौरुष वीर जवाहर तुम ।।

मथुरा काशी वृन्दा सारे, तीरथ आग उगल दिखला दो ।
नारी नारी में झाँसी तुम, रानी जैसे प्राण डाल दो ।।
जन जन में हे रम्य कानपुर, नाना जैसी आज चाल दो ।
आगे रहते रहे आगरे ! मार्ग प्रदर्शन कर बतला दो ।।

तुम्हे क्या चाहिये ? जो कुछ चाहिये उसे मुस्कुराहट के बल से प्राप्त करो, न कि तलवार से । —*शेक्सपियर*

१७५/गर्जना

जय स्वदेश भारती

सतीश चंद्र संतोषी

गीत मैं तुम्हारे साथ गा रहा
फौज के सिपाहियों बढ़े चलो

सरहदों पे चल रही हैं गोलियां
दुश्मनों की आ रही हैं टोलियां
लाख रोकती हों प्रीति बोलियां

देश तो तुम्हें अभी बुला रहा
कौम के सिपाहियों बढ़े चलो

है खड़ी बहिन कहीं निहारती
मां तिलक दे आरती उतारती
जय स्वदेश जय स्वदेश भारती

मैं मशाल प्यार की जला रहा
कौम के सिपाहियों बढ़े चलो

आग लग रही तुम्हारे गांव में
मित्र भी हैं दुश्मनों के दाँव में
खो कहीं न जाना धूप छांव में

आज मैं तुम्हें खड़ा जगा रहा
कौम के सिपाहियों बढ़े चलो

सुस्ती, लापरवाही की गति बहुत धीमी होती है, इसलिये गरीबी उससे आगे बढ़ गई है। —हंटर

तुम बढ़े होगे

सागरी : इकराम

अंगार बाने !
दुष्टों के सामने
तुम बढ़े होगे
हथेली पर जान लेकर !
बीबी का प्यार
बूढ़ों की दुआयें लेकर !
बच्चों के मासूम सपने
माँ की बलायें लेकर !
तुम्हारी हर सांस
वतन के काम पर होगी !
तुम्हारी हर सांस
वतन के नाम पर होगी !
आगे बढ़ो के नारे
तुम्हारी ज़बां पर होंगे
तुम्हारे बुलन्द हौंसले
आसमाँ पर होंगे !

मनुष्य का सबसे बड़ा नुक्सान उसके मन में बुरे विचारों का प्रवेश है।

—अनाम

साहित्यालंकार गोवर्द्धन प्रसाद

हम दुनियाँ की तकदीर हैं

हम वीर हैं हम वीर हैं।

पंचशील के पोषक हैं हम, फिर भी हैं कमजोर नहीं,
शान्ति के सच्चे सेवक हैं, पाक-चीन से चोर नहीं,
हमें न कोई ऐसा समझे, भीतर से कमजोर हैं,
अपनी रक्षा करने में हम, सांप का दुश्मन मोर हैं,
हृदय हमारा है पवित्र, जैसे गंगा का नीर है।

हम भारत के हिन्दू-मुस्लिम, चाहे सिक्ख ईसाई,
चाहे गुरखा हों या विदेशी, सब हैं भाई भाई,
भारत-भूमि बचायेंगे हम, अपना शीश कटाकर,
आगे बढ़ते जायेंगे दुश्मन को धूल चटाकर,
'महावीर' की शक्ति हममें, अंगद से रणधीर हैं।

नापाक पाक के कर में हम, कश्मीर नहीं जाने देंगे,
पाक-चीनी सैनिक को, नहीं यहाँ आने देंगे,
काश्मीर भारत का सर है सारा जग इसको मान चुका,
हिन्द देश की अटल घोषणा, राष्ट्र संघ भी जान चुका,
पाकिस्तान से नहीं हैं छिछले सागर से गम्भीर हैं।

'सेबर जेट' औ 'पेटन टैंक' का, है हमने मुँह मोड़ा,
अपनी बाज़ू की ताकत से, है उन सबको तोड़ा,
अरे तोड़ने में उसको भी, आये नहीं कभी हम बाज़,
जिसकी ताकत पर वाशिंगटन-लंदन को भी था कुछ नाज़,
पाकिस्तान का पस्त हौंसला करने वाले पीर हैं।

हम वीर हैं हम वीर हैं।।

:: चरित्र पूर्ण शिक्षित इच्छा शक्ति का ही नाम है। —नोवलिस

जागते रहो

साहिल झाँसवी

●

दुश्मन की है वतन पे नज़र जागते रहो
माता का है ख्याल अगर जागते रहो ॥

ऊंचा रहे अब हिन्द का सर जागते रहो
खतरे में आजकल है डगर जागते रहो ॥

कोई कदम न सुस्त उठे नौजवाने हिन्द
ये कह रही है गर्दें सफ़र जागते रहो ॥

'राना' की सर ज़मीं है जो 'अर्जुन' का देश है
दुश्मन से है घिरा वो नगर जागते रहो ॥

दुश्मन पे छाये जाओ तुम बनकर स्याह रात
ये गीत गा रही है सहर जागते रहो ॥

दुश्मन कहीं सफ़ीने का पतवार ले न ले
'साहिल' ये दे रहा है खबर जागते रहो ॥

जो कुछ नहीं करता केवल वही आलसी नहीं । आलसी वह भी है जो अपने काम से भी अच्छा काम पा सकता था ।

—सुक़रात

सुजान मल जैन

कुर्बानी का आह्वान

हम मर मिटेंगे अपनी आन पर,
भले कुर्बान हो जायेंगे, भारत माँ की शान पर ।

फिर से सीमा पर, शत्रु ने ललकारा है ।
हिन्द वतन ने, फिर से सीमा पर पुकारा है ।
चले आओ-चले आओ जवानों, हिमालय की शान पर ।
कुर्बान होकर दिखादो, भारत माँ की आन पर ।
कभी नहीं टिक सकेगा, अब ये पाक गद्दार ।
और कभी नहीं हो सकेगा, इसका उद्धार ।

रणभेरी बज उठी, हिमालय से पुकार उठी ।
क्या सोये हो धीर ?, अब तुम्हें जगना है ।
वो समुद्र की लहरें और पवन भी आह्वान ला उठी ।
प्रत्येक सेना और सेनानी को सबक सिखलाना है ।
खतरे में अब पड़ा, आन और सम्मान है ।
प्यारा भारत, प्यारा हिन्दुस्तान -है ।

भाला, तीर, धनुष, बन्दूक तो ले जायेंगे ।
परन्तु राम लक्षमण और सुभाष की वीरता को भी ले जायेंगे ।
याद रखो कभी नहीं भूलेंगे, जौहर जोश का दिखलाना ।
भला ये भी बता दिया, चीनी ने गद्दारी सिखलाना ।
ये एक सबक सभ्यता का उन्हें बता देना—
"सत्यमेव जयते" के उदाहरण भी उन्हें सुना देना ।

प्रेम सभी पर विजय प्राप्त कर सकता है । *--बायरन*

शंख बजाओ

सुदीप

प्रणय गीत को छोड़ चलो अब रण के शंख बजाओ।

नवल गीत अब नवल राग हो,
हृदय-हृदय में नवल आग हो,
नवल चेतना, नवल योजना,
युद्ध-भूमि में नवल फाग हो;

कच्चे निश्चय को तोड़ो निश्चय मजबूत बनाओ।

नया गीत नभ में छा जाये,
नभ धरती में कंपन आये,
ऐसी ही कुछ बात करो अब,
मुर्दा भी नव जीवन पाये;

अंधकार का विष धो डालो दीपक नये जलाओ।

नफ़रत की दीवारें तोड़ो,
नर-मन से नर-मन को जोड़ो,
नभ में नवल सूर्य चमका दो,
मानवता अरि के दृग फोड़ो;

मन-पर्वत पर चिपटे हिमकण, जल्दी इन्हें गलाओ।

सत्य के पुजारी पर परिस्थिति का प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। परिस्थिति के कारण बने हुए कितने ही विचार गलत ठहरते हैं।

—महात्मा गांधी

सुरेन्द्र प्रसाद 'तरुण'

आह्वान

पुनः देश बलिदान माँगता, सीमा रही पुकार है।
कह दो उनसे आगे जाकर, भारत भी तैयार है।

वीर कुंवर के वीर लाड़ले, कभी न हटने वाले हैं,
टक्कर चाहे जैसी हो, ये सदा विहँसने वाले हैं,
न्योछावर सब कुछ स्वदेश पर, जीवन का शृंगार है;
कह दो उनसे आगे जाकर भारत भी तैयार है।

आज़ादी के वीर सिपाही, शान्ति दूत के मतवाले,
तन से, मन से, जीवन धन से, धरा धाम के रखवाले,

हम हैं लाल बहादुर बांके, फिर से हमें दिखाना है,
मातृ-भूमि की बलिवेदी पर, नूतन मोल चुकाना है,
संघर्षों की नई कहानी, मांग रही उपहार है;
कह दो उनसे आगे जाकर, भारत भी तैयार है।

आज देश को बड़ी जरूरत, सोने की आभूषण की,
आज देश को बड़ी जरूरत, भेद-भाव उन्मूलन की,

माताओं, बहनों आ जाओ, सब मिलकर अभियान करो,
सोना आभूषण स्वदेश को सबसे पहले दान दो,
दान करो अब रक्त धार की, कह दो यह जलधार है;
कह दो उनसे आगे जाकर भारत भी तैयार है।

क्या आपको जीवन से प्रेम है? तब समय को व्यर्थ मत जाने दीजिये क्योंकि जीवन उसी से बना है। *—अनाम*

ल ल का र

सुरेश प्रसाद 'विमल'

सावधान शत्रु !
आज हिमालय के शिखर पर आसीन हो
गर्व मत कर नीच !
शैलराट् ! हुँकार भर तू,
ओ जवानी !
निज रक्त से तू मातृ-भूमि को सींच।
स्वतंत्रता है पुण्यतम वस्तु बड़ी अनमोल
विश्व की कोई भी संपदा उसे सकती नहीं तोल।
हिन्द के जवान !
फूंक तू फिर युद्ध का विषाण !
शत्रु काँपे विश्व काँपे
काँप जाए एक बार फिर छल-छद्म का विधान !
सावधान रमणियो ! करना तुम्हें है त्याग।
देश रक्षा के लिए—
निज मान-रक्षा के लिए—
भेजना होगा तुम्हें टहटहा सिन्दूर
खिला सौभाग्य !
भारतीय वृद्धों ! सिखाओ पुण्यतम इतिहास
उन वीरों का उन तीरों का
जिनके गर्जन से जिनके तर्जन से—
गूंजता था—युद्ध का आकाश !!

आलस्य मूर्खों का अवकाश दिवस है। —चैस्टरफ़ील्ड

प्यारा देश महान

सुरेश चन्द्र सेठ

आज हमें स्वीकार हृदय से शत्रु का आह्वान है।
पूरब से पश्चिम तक जागा सारा हिन्दुस्तान है।

बन्दर घुड़की में आ जाए,
ऐसा कब ये देश है।
आज देश का बच्चा बच्चा,
धारे सैनिक वेश है।

इस धरती का हर सैनानी वीरों की सन्तान है।

प्राणों को हँसकर दे देना,
साधारण सा खेल है।
भारत के बच्चे बच्चे में,
भाई जैसा मेल है।

हमको अपने और परायों की सच्ची पहचान है।

आज रक्त में जोश बहुत है,
आयी नई जवानी है।
अब हमने शत्रु से खुलकर,
टकराने की ठानी है।

जाग उठा है आज देश की माटी का अभिमान है।

सोच समझकर कदम बढ़ाना,
हर सैनिक तैयार है।
हम सबको प्राणों से ज्यादा,
निज स्वदेश से प्यार है।

जन, गण, मन अधिनायक सबका प्यारा देश महान है।

मेहनत शरीर को स्वस्थ, मस्तिष्क को साफ, हृदय को उदार तथा बटुए को भरपूर बनाती है। —अनाम

यह हिन्द है

सुरेश प्रसाद 'विमल'

यह हिन्द है
त्याग का अरविन्द है।
क्या तुझे है कभी विश्वास !
कि इसको तू सकेगा जीत !
जान ले !
स्वातंत्र्य - रक्षा के लिए
निज राष्ट्र - रक्षा के लिए
प्राण देना ही यहाँ की है सुनहरी रीत !
सावधान शत्रु !
आज हिमालय के शिखर पर आसीन हो—
गर्व मत कर नीच !

जो अपने जीवन की आहुति देता है, वही अमर जीवन पाता है।
—ईसा

सुरेश 'सलिल'

मजबूर करो मत हमें

भारत की धरती का कण-कण,
अब शोला बनकर दहकेगा !

हम मनु के बेटे मानव हैं, मानवता से झुक सकते हैं।
पर दानवता सम्मुख आए तो कभी नहीं हम रुक सकते हैं ॥
तुम दुःशासन बनकर केसर का शील हरो यह नामुमकिन।
मजबूर करो मत हमें कि लाने पड़ें महाभारत के दिन ॥

हम उसे नहीं जीने देंगे,
जो मद में आकर बहकेगा !

हम कालीदास के काश्मीर पर आँच नहीं आने देंगे ।
जो भी सम्मुखे आएगा जीवित उसे नहीं जाने देंगे ॥
हम उस माटी में खेले हैं जिसमें चाणक्य हुए पैदा।
अब कूटनीति की चालों पर हम कभी न हो सकते शैदा ॥

लगता है शालीमार बाग,
दुश्मन के खूँ से महकेगा !

खतरे का इन्तजार करने से बेहतर यह है कि हम आगे बढ़कर उसका सामना करें।
—कौलटन

तैयार रहो

सूर्यनारायण सिद्धार्थ

लोकतन्त्र पर युद्ध थोपने की कोशिश करने वाले,
हमसे टकराने का फल भी चखने को तैयार रहो।

चले हजारों साल युद्ध या सदियों तक
आबादी क्या परती तुम्हें नहीं देंगे
भारत के अविभाज्य अंग कश्मीर की—
एक इञ्च भी धरती तुम्हें नहीं देंगे।

हवाबाज दिल्ली पर तुमने भेजा तो
हम रावलपिंडी तक भी जा सकते हैं
तुम्हें दिखाने को हम अपना हौंसला
सुनो, ईंट से ईंट बजा भी सकते हैं।

किसी राष्ट्र की आबादी पर बमबाजी करने वाले,
सारी दुनिया का कलंक तुम रखने को तैयार रहो।

दुर्योधन का दम्भ तुम्हारा टूटेगा
आज नहीं है भीम न सोचो भूलकर
हर जवान भारत का भावी भीम है
हमलावर की जाँघ तोड़ने में माहिर।

अफवाहों के नाग छोड़ने वाले सुन
टैंक तोप का जहर तुम्हें पी जायेगा
तेरी काली करतूतों को याद कर
भारत का गौरव तुझको ठुकरायेगा।

किसी पड़ोसी के घर घुसकर तोड़-फोड़ करने वाले,
तुम्हें कुचलकर रख देंगे अब झखने को तैयार रहो।

शिष्टता के लिये कीमत नहीं देनी पड़ती। लेकिन वह खरीद सब कुछ सकती है। —*मौनटेग*

सौ० कुसुम खरे 'श्रुति'

हम मनु की सन्तान

हम मनु की सन्तान हमारे पूर्वज पाण्डव रहे,
कण कण बना हिन्द का गाण्डीव रहे।

है पवन हमारा अनुगामी,
जन्मा है जिसने बज्र-पुत्र,
अब भी रहते हैं भारत में-
दशरथ के खूँ से बने पुत्र।

अब पाक नहीं दामन तेरा,
हम उसे पवित्र बना देंगे,
"हे पाक, तुझे रावण जैसा,
कुछ पल में मोक्ष दिला देंगे।"

यह ठीक नहीं ! तूने अय्यूब,
जो आंख मिलाई है हमसे;
शंकर का नेत्र नहीं खुलता-
गीदड़ की उछल-कूद-दम से॥

कौरव बन के चीन, भारती के ऊपर भुज दंड करे,
तो उसकी छाती पर बच्चा-बच्चा चढ़ ताण्डव करे।

जो आशा के दास हैं वे सारे संसार के दास हैं और आशा जिनकी दासी है उनकी तमाम दुनिया दासी है। —अनाम

भारत देश हमारा है

हरगोविन्द पाराशर

•

इसमें गंगा यमुना रेवा-
गोदा बहती रहती हैं,
विंध्य-हिमाचल और सतपुड़ा-
इनको रसती रहती हैं;
मिला इसी को सबका रस है-
इसीलिए यह प्यारा है,
भारत देश हमारा है।

इसमें गाँधी बाबा, बा थे
और रहे राजेन्द्र प्रधान,
चाचा नेहरू तब रहते थे
शास्त्री जी भी अविराम
द्वार विनोबा आते रहते
सब में देश निराला है,
भारत देश हमारा है।

पाक - चीन ऐसे हत्यारे
हम से वैर भँजाते हैं,
रूस - अमरीका होते अपने
हमको साथ बढ़ाते हैं;
कोई कुछ भी कहे किंतु-
यह देश हमारा राजा है,
भारत देश हमारा है।

मोर्चा लगकर नष्ट होने की अपेक्षा घिस घिस कर मिटना कहीं श्रेयस्कर है।
—बिशप कम्बरलैंड

संभालो अपनी

हरप्रसाद 'जलेश'

कवि कलम वीर तलवार सँभालो अपनी।

हैं तुमुल युद्ध के बादल सर पै,
कर रहा पड़ोसी कब्जा अपने घर पै।
दृढ़ दरवाजा दीवार सँभालो अपनी।

देखो चलती है आज हवा तूफानी,
ऐसे में तुमने सिन्धु तरन की ठानी।
है तरी डरी मँझधार सँभालो अपनी।

अन्यायी अरि से आज पड़ा पाला है,
बेशर्म पड़ोसी ने डाका डाला है।
नाकाबन्दी फिर यार सँभालो अपनी।

हिरण्यकुश शासन मद में चूर हुआ है,
श्री राम नाम से कोसों दूर हुआ है।
निज शक्ति नराधम मार सँभालो अपनी।

हिरण्याक्ष छुपाता धरा नरक में अपनी,
परमेश निकालो धरा नरक से अपनी।
रवोसऽर्ध चन्द्र आकार संभालो अपनी।

गौ और विप्र पर अब संकट आया है,
हे परशुराम ! क्यो तुम्हें मौन आया है।
अब फिर परसे की धार सँभालो अपनी।

विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखाने वाला विद्यालय आज तक नहीं खुला है। —प्रेमचन्द

अनल के बीज

हरि ठाकुर

नये युग के प्रणेता हम अनल के बीज बोते हैं
नयी तलवार की हम नोक में साँसें पिरोते हैं

परीक्षा ले रहे हो क्या हमारे आज विक्रम की
हमें क्या भीत दिखलाते हमेशा तोप या बम की
हमारी राह में बारूद के गोले बिछाते हो—
जलाने एशिया को तुम यहाँ शोले उगाते हो ?

नये युग के प्रणेता हम अनल के बीज बोते हैं
नयी तलवार की हम नोक में साँसें पिरोते हैं

यहाँ के पर्वतों की पसलियों में पाँख होती है
यहाँ के सागरों की हर लहर की आँख होती है
यहाँ की टहनियों में फल रहे हैं आग के शोले
यहाँ हर खेत का ढेला मुकाबिल तोप के गोले

यहाँ की रमणियाँ भी वक्त पर लोहा बजाती हैं
कभी चन्दन-चिता पर जूझ कर जौहर सजाती हैं

हमारी साँस से हरदम यहाँ लोहा पिघलता है
हमें है ज्ञान, काँटे से सदा काँटा निकलता है
नयी तलवार की हम नोंक में साँसें पिरोते हैं
नये युग के प्रणेता हम अनल के बीज बोते हैं

समाज की महान् आशा ऊँचे-ऊँचे दर्शन शास्त्रों पर नहीं, व्यक्तिगत चरित्र पर ही आधारित है। — चैनिंग

हरिपाल सिंह चौहान 'दग्ध'

ह ल च ल

उठो-उठो बढ़ो-बढ़ो, बढ़े चलो रे ! नौजवान !
छा रहा घनान्धकार आज देश में महान।

पाप-पुञ्ज का महान भार भूमि ढो रही।
त्रस्त-ध्वस्त नष्ट-भ्रष्ट छार-छार हो रही।
आग वह लगी कि चीत्कार से विकम्पिता,
चेतना-विहीन भूमि व्योम की अनन्तता।

विराट रूप से करो ज्वलन्त पाप-अग्नि पान।
उठो-उठो बढ़ो-बढ़ो, बढ़े - चलो रे नौजवान।

आग लग रही कि गांव भस्मसात् हो चले !
दीन देखते रहे विमूढ़ से बिना हिले।
झोंपड़ी जली कि मोद-स्वप्न भंग हो गया,
धूम्र-अन्धकार में सुज्ञान-पंथ खो गया।

किन्तु दमदमा उठा है आज स्वर्ण स्वाभिमान।
उठो-उठो, बढ़ो-बढ़ो, बढ़े चल रे नौजवान।

जल रही दुकान खड़ा रो रहा दुकानदार।
हाय ! क्या करूँ कि ठप्प होगया है रोजगार।
बुद्धि हो रही मलीन, रुद्ध हो रहे विचार,
रो रहा बेआसरे मजूर बन्द कारबार।

अग्नि-लौ लपक-लपक सुखा रही शरीर-प्राण।
उठो-उठो बढ़ो-बढ़ो, बढ़े चलो रे ! नौजवान।

जो आदमी दूसरे को गिरते देखकर उठा नहीं लेता, वह स्वयं गिरने पर किसी के सहारे की उम्मीद नहीं कर सकता। —सादी

जवानी नाम मेरा

हरिविट्ठल त्रिवेदी

जिंदगी की हर गली को जानती हूँ,
बाग की मैं हर कली पहचानती हूँ
हर जलन में होलियां उठती हैं मेरे
हर्ष का हर पल दिवाली मानती हूँ।

मैं रवानी हूँ जवानी नाम मेरा।
मैं कहानी हूँ जवानी नाम मेरा।

जब समर होती प्रलय का राग गाती,
फेंक देती दुश्मनों को चीर छाती,
मान की भूखी सदा अभिमान ढाती,
प्रेम मेरा इष्ट है औ' आग साथी।

मौत बेगानी जवानी नाम मेरा।
मै कहानी हूं जवानी नाम मेरा।

प्रेम को मैं प्राण का करती समर्पण
रूप को मैं दे दिया करती हूँ दर्पण
जब पुकारा कर्म ने, 'कर स्वार्थ तर्पण'
काट कर सिर कर दिया युग को ही अर्पण,

मैं दीवानी हूँ जवानी नाम मेरा।
मैं कहानी हूँ जवानी नाम मेरा।

सबसे अच्छा काम कभी धन की खातिर नहीं किया जाता और न कभी किया जायेगा।
—रस्किन

हिमकर : चन्द्रमोहन

चुनौती

चट्टानों से टकराने के हम अभ्यासी भारतवासी,
हमसे जो भी टकरायेगा, वह मिट्टी में मिल जायेगा।

पर भारत कमजोर नहीं ! हमने भी कई सिकन्दर देखे,
कई हिटलरी अत्याचारी, कई पाकिस्तानी चीनी देखे।
नष्ट हो गये क्रूर आक्रमक, जो भारत पर चढ़ कर आते,
अगणित दुष्ट नष्ट होकर के कब्रों की शोभा को बढ़ाते।

जो आँख उठेगी भारत पर, वह आँख फोड़ दी जायेगी,
तलवार उठेगी भारत पर, वह तुरत तोड़ दी जायेगी।
जो हम पर हाथ उठायेगा, वह सिर पर लाठी खायेगा,
जो ईंट उठायेगा हम पर, पत्थर से सिर फुड़वायेगा।

चालीस कोटि हम रक्षक हैं, भारत माँ हमको प्यारी है,
है दोस्ती हमारी वरदानी, दुश्मनी बहुत ही खारी है।
मिट गये कंस, रावण, नादिर, चंगेज कहाँ ? अंग्रेज़ कहाँ ?
मानवता के न्यायालय में चाऊ, अयूब की बारी है।

जो शान्ति द्रौपदी नंगी करता, भारत माँ का मुकुट चुराता,
ऐसे नमक हराम दुष्ट पर, नहीं मानें तो बम बरसाओ।
रण मदांध बर्बर शत्रु को आगे बढ़ मिट्टी में मिलाओ।
कैलाश व मानसरोवर पर बढ़ करके तिरंगा ध्वज लहराओ।

संसार में न कुछ भला है न बुरा, केवल हमारे विचार ही उसे भला बुरा बना देते हैं। —*शेक्सपियर*

भट - कर्तव्य

हीरालाल वर्मा 'नवरत्न'

वीरों के शीतल अंतर में, वलयित रहती है विपुल ज्वाल,
सद्धर्म निमायक रहने को, उद्धत रहता निन वीर बाल ।
निज धर्म, शौर्य, मर्यादा पर, निःसह्य मानते काल चाल,
खाकर टक्कर हर शामत से, अंतर मन रहता मही पाल ।

जिस तरह विपुल घर्षण पाकर, अनल उगल उठता संदल,
उस तरह सुप्त वीरोचित मन, क्षण भर में देता यही बदल ।
निर्घिन, दूषित, चाण्डाल नीच, अरि को दलने में वीर सबल,
ममतामयी माँ के सिर पर, चढ़कर बढ़ता क्यों दुष्ट सदल ।

स्वदेश विलय तन-मन-धन, जन, उत्सर्ग मातृ पर कर देते,
लेकिन क्यों-किंचित प्रति भट की वह कुत्सित हुँकारे राह लेते ?
विश्रब्ध, वीर-पद बढ़ जाते, विजयार्थ दुष्ट शोणित पीते,
वीरों के सम्मुख संगर में, क्यों धृष्ट वढ़े अहिमति नीते ।

इस वीर-प्रसू भारत भू-पर, संकट जब आता महा घोर,
खम ठोक ठेलने अरि दल को, झंकृत होता है विपुलरोर ।
शुद्रोचित संकट वाहक को, वह क्षिप्र बना सकते अविमोर,
वसुधा में जीवित गाड़ उन्हें, "नवरत" दिखाते काल द्वार ।

पूर्वागत भाई चारा रख, जो बढ़ता बन विभ्राट व्याल,
भारत-वीरों के शोणित को, पीने की रचता महा चाल ।
धृति त्याग अँह में बोर भला, वह नहीं देखता, स्वयं काल,
उस वक्त भारती-वीरों की, रग-रग में रहता महा-काल ।

जिस श्रम से हमें आनन्द प्राप्त होता है, वह हमारी व्याधियों के लिये अमृत तुल्य है। —*शेक्सपियर*

हृदयानन्द तिवारी 'कुमारेश'

सीना ताने बढ़े चलो

रण भेरी बज उठी जवानो! सीना ताने बढ़े चलो।

सनन् - सनन् बहती पुरवैया, घनन - घनन गरजा बादल,
बचो, द्वेष - दलदल से, पथ पै धरो पुण्य पग दल के दल,
ढम-ढम ढोलक ढमक उठा है, चम-चम चमक उठी चपला,
बहनो! बढ़ो, बवंडर आया, कौन कहे तुमको अबला?
उठो, सपूतो! मातृ-भूमि के, दुश्मन-दल पे चढ़े चलो!
रण - भेरी बज उठी जवानो! सीना ताने बढ़े चलो।

बम-बम-बम शंकर जय शंकर! कहकर बढ़ो जवानो! तुम,
चलो, कदम से कदम मिलाकर, धरती-पुत्र किसानो! तुम;
वीर वेश में बढ़ो! देश का कण-कण तुम्हें पुकार रहा,
उठो, मर्द! मर्दन कर दो, अरि फणिधर-सा फुफकार रहा;
ओज तेजमय दीप्त सूर्य - सा, पाठ शौर्य का पढ़े चलो!
रण-भेरी बज उठी जवानो! सीना ताने बढ़े चलो!

जगमग-जगमग जोश जवानी, फिर क्यों डगमग डग होंगे?
धक - धक धरा धधकती धीरो! शेषनाग सगबग होवे;
लक्ष - लक्ष अरि के समक्ष हो वक्ष लक्ष्य केवल होवे,
और बाहुओं में प्रचण्ड बजरंग बली का बल होवे;
बन समीर-सा, तीर - तुल्य तुम, झट कमान से कढ़े चलो।
रण - भेरी बज उठी जवानो! सीना ताने बढ़े चलो।

जो बुद्धि बिना अध्ययन के केवल कल्पना का आश्रय लेती है उसके पंख अवश्य हैं किन्तु पग नहीं। —जूबर्ट

रण के प्रांगण में जाने दो

ज्ञान स्वरूप 'कुमुद'

•

दुश्मन का शीश तोड़ने दो, दुश्मन का दंभ मिटाने दो ।
बज उठी आज रण भेरी है, रण के प्रांगण में जाने दो ।।

है खून खौलता धरती का,
नदियों का, कूल, कगारों का ।
हम सब मिल, मज़ा चखा देंगे,
दुश्मन को अपकारों का ।।

गले लगाये फिरते हम सब, आंधी, प्रलय, तूफानों को ।
जो सोता शेर जगा बैठे, उनको भी सम्मुख आने दो ।।

समझा होगा हम शान्ति-दूत,
बापू के अटल पुजारी हैं ।
पर भूल रहा, हम अंगारे,
तीखी तलवार दुधारी हैं ।।

क्या भूल गया हल्दी घाटी, पानीपत के मैदानों को ।
रणवीर, शिवाजी, रतन सिंह, राणा प्रताप तूफानों को ।।

सिर पर कफन हाथ में सर ले,
लड़ती है वीरों की टोली ।
औ' रक्षा करती लाहौर में,
हर हर महादेव की बोली ।।

भूल न जाना वीरों, तुम अब, मरने, मिटने की आनों को ।
इतिहास भूल न पायेगा, अब ऐसे वीर जवानों को ।।

विचारवान पुरुष के लिये संसार सुखद है और भावुकों के लिये दुखद ।
—जॉनसन

ज्ञानेन्द्र पाण्डेय

रन में जाओ पिया-पियारे

पिया, चाँहि, लाऔ गहिने हजार,
आजु मैं नाहीं पहिरौंगी।

लाइलौन की सारी लाओ, एक संग में चोली,
क्रीम-लिपिस्टिक लाऔ सैयाँ, चाँहि सण्डल की जोरी;
मेरो तो लागो देस में ध्यानु,
जिसम पै बखतर पहरौंगी।

जब सै सुनि लई मैंने सैंया, छिड़ी निगोड़ी जंग।
कछू सुहावै नाँहि मोहू राजा, फरकि रहे सब अंग॥
मोइ तौ, दै देउ एक तलवारि,
जंग में दुसमन कतरौंगी।

सबई सोनो, जेबरू दै देउ, आएँ तोप - जहाज,
हुइ जाउ साजन, तुमऊँ भरती, आउ देस को काज।
भूनि देउ दुश्मन को रन माँहि,
मरदु मैं तबहीं समुझौंगी।

रन में जाओ, पिया - पियारे, काहे पहिरीं चुरियाँ !
काटि लाओ दुसमन को करेजा, तबई करौंगी बतियाँ।
लगाइ देउ मांग में, विजै सिंदूर,
सजन तेरो गुनु नाँइ भूलौंगी।

जो अपने विचारों पर काबू नहीं रखेगा, वह जल्दी ही अपने कार्यों पर से काबू खो बैठेगा। —सूक्ति

हमारे कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन



आलोचनात्मक साहित्य

नीरज व्यक्तित्व और कृतित्व
डा० सुधा सक्सेना

इस ग्रन्थ में नीरज जी के तेजस्वी व्यक्तित्व को प्रस्तुत करते हुए उनके कृतित्व पर सशक्त चित्र उपस्थित किया गया है। इस ग्रन्थ से उनका कर्मठ जीवन उजागर होकर सामने आ जाता है।

मूल्य ३.००

देहरी के बाहर
विद्याभास्कर वाजपेयी

यह महिलाओं के लिए अत्यन्त उपादेय पुस्तक है। नारी जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं पर १६ निबन्ध प्रस्तुत किए गए हैं। उपहार में देने योग्य अनुपम उपहार।

मूल्य ३.००

हिन्दी गीतकार परिचय और मूल्यांकन
डा० दशरथ राज

प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दी के नये-पुराने लेखकों द्वारा गीतकारों पर विभिन्न अधिकारी लेखकों द्वारा लेख प्रस्तुत हैं। सर्वदा उपयोगी और संग्रहणीय ग्रन्थ।

मूल्य ४.००

कभी नहीं, कभी भी नहीं
लहर

राधेश्याम बरनवाल 'लहर' ने इस यथार्थ पूर्ण उपन्यास में एक नई कथा वस्तु दी है। अत्यन्त रोचक उपन्यास।

मूल्य ३.५०

नागफनी और धुआँ
राजेन्द्र मिलन

यथार्थ के कटु अनुभवों पर युवक युवतियों की सहज मार्मिक कथा का रोचक अंकन। सामाजिक उपन्यास।

मूल्य २.५०; पाकेट बुक्स का १.००

पाप और पीड़ा
दिनेश पालीवाल

विवाह की एक रात पहले तक जो पाप है विवाह की रात वही पुण्य बन जाता है। एक ऐसी क्वारी लड़की की कहानी जो क्वारी होकर भी दुल्हन थी, जो दुल्हन होकर भी विधवा थी।

मूल्य १.००

झूठे बन्धन
लहर

चौबीस घण्टे की घटनाओं पर आधारित अपने ढंग का प्रथम लघु-उपन्यास। सदियों से पुरुषों द्वारा प्रताड़ित नारी जीवन का मार्मिक चित्रण।

मूल्य १.००

प्रतिनिधि हस्ताक्षर

स० रामगोपाल परदेसी | हिन्दी के ४६ सुप्रसिद्ध कहानीकारों की विविध कहानियाँ। रेखा चित्रों एवं हस्ताक्षरों से युक्त।

मू० ५.००

तीस प्रतिनिधि कहानियाँ

स० रामगोपाल परदेसी | एक दूसरे से होड़ लेती हुई तीस रोचक कहानियाँ। लेखकों के चित्र, परिचय से युक्त।

मूल्य ४.००

चेहरे से घिरा दर्पण

स० रामगोपाल परदेसी | ३५ प्रतिनिधि कहानी लेखकों की रोचक कहानियाँ। अपने ढंग की विशिष्ट कृति।

मू० ४.००

आंचल डोल गया

स० रामगोपाल परदेसी | आपके ही नगर, गली मुहल्ले के वातावरण पर ताजगी से ओत प्रोत प्रणय कहानियाँ।

मू० ३.५०

गीत और सरगम

स० रामगोपाल परदेसी | १०१ कवि और कवयित्रियों के तीन-तीन गीत, चित्र और परिचय सहित प्रस्तुत किए गए हैं। अनेक पारखियों द्वारा मुक्तकंठ से प्रशंसित।

मू० ६.००

गीतांकुर

स० रामगोपाल परदेसी | माखनलाल चतुर्वेदी, बच्चन, अंचल, नीरज, त्यागी, राही आदि १०१ कवियों के महकते हुए गीत।

मूल्य ५.००

गूँजते-स्वर

स० रामगोपाल परदेसी | १०१ नये पुराने कवि, गीतकारों की चुनी हुई रचनाएँ इसमें प्रस्तुत हैं। हर पृष्ठ पर अनेक कवियों की दो-दो पंक्तियाँ भी उद्धृत की गई हैं।

मू० ५.००

उद्‌गम

स० रामगोपाल परदेसी | २०५ हिन्दी कवियों की संजोई गई सारी पूँजी में से चुन-चुन संकलित की गई बेशकीमती मणियाँ, तरतीब से सजाकर गूँथा गया एक सतलड़ा हार।

मू० ५.००

सदा बहार गुलाब

स० रामगोपाल परदेसी | महामानव पं० नेहरू के प्रति सुप्रसिद्ध कवियों की भावभीनी श्रद्धांजलियाँ। प्रत्येक पृष्ठ पर नेहरू जी की प्रेरक सूक्तियाँ भी प्रस्तुत की गई हैं।

मू० ३ ००

पाकेट बुक्स

जूड़े के फूल

स० रामगोपाल परदेसी ● ४६ कवयित्रियों के मधुर गीत।

मू० १.००

गज़लांजलि

स० रामगोपाल परदेसी ● हिन्दी गज़लों का अनूठा संकलन।

मू० १.००

हिन्दी कवियों की गजलें

स० रामगोपाल परदेसी ● विविध विषयक गजलें।

मू० १.००

हिन्दी कवियों की रुबाइयाँ

स० रामगोपाल परदेसी ● बहतरीन रुबाइयाँ।

मू० १.००

मयखाना
अंदी • १०१ रुबाइयाँ।
मूल्य १.००

आने वाली पुस्तकें

• दस उपन्यास • निबंधिका • हिन्दी कवयित्रियाँ : परिचय और मूल्यांकन • अहिन्दी भाषी हिन्दी लेखक • बच्चन : व्यक्तित्व और कृतित्व • स्मृतियाँ • गीत, गज़लें और मुक्तक • हसीन गुनाहों की कहानियाँ • समाधि • तीन सौ गीत • ग्यारह एकांकी • साहित्यालोक • बाल भारती जिन्दाबाद • जय जवान : जय किसान।

उक्त पुस्तकों के लेखक सम्पादक—

डा० पद्म सिंह शर्मा 'कमलेश' • नीरज • डा० गणपति चन्द्र गुप्त • प्रो० तपेश चतुर्वेदी ★ विद्या भास्कर बाजपेयी • गिरिराज शरण अग्रवाल • राजेन्द्र मिलन • रामगोपाल परदेसी।

उपन्यास, कविता, कहानी, हास्य, नाटक, आलोचना-साहित्य, शिक्षा, मनोविज्ञान, समाज शास्त्र, इतिहास, स्त्रीयोपयोगी, बालोपयोगी आदि सभी विषयों पर एवं सभी हिन्दी प्रकाशकों की पुस्तकों के लिए

प्र ग ति प्र का श न

केन्द्र और कार्यालय : घाटिया आजमखाँ रोड, आगरा-३.